अगस्त 2025 रु.20/-

गाँव गिराँव

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

सवालों के घेरे में जातीय जनगणना

विश्वास करेंगे एक बार, इस्तेमाल करेंगे बार-बार...

125g.
500g.
1 kg. में
उपलब्ध

SRI HARIVANSH ENTERPRISES

Corp. Of Goel Tower Anura Kala, Chinhat Lucknow-226028 (U.P.)
Production Unit: Sandauli Umarpur, Safedabad, Barabanki - 225003 (U.P.)
Customer Care No.: +91 9415867528

गाँव गिराँव

वर्ष : 14, अंक : 09, अगस्त 2025, पृष्ठ 44, मूल्य : 20/-

सलाहकार सम्पादक - दिनेश चंद्र, लक्ष्मीशंकर पाण्डेय
सम्पादक - श्रीधर द्विवेदी
समाचार सम्पादक - डॉ. पंकज कुमार ओझा
प्रबन्ध सम्पादक - गुरु प्रसाद शुक्ल
सहायक सम्पादक - कमलेश पाण्डेय, रविन्द्र प्रताप सिंह गोपाल मौर्य, महेश कुमार यादव
उप सम्पादक - वीरेन्द्र कुमार विन्द नागेश्वर सिंह, रामप्रसाद यादव
विज्ञापन प्रबन्धक - उमेश चन्द जैन
डिजिटल एग्जिक्यूटिव - इ. अमित पटेल
लेआउट व डिजाइन - मंजीत कुमार गुप्ता

नेशनल मीडिया एक्जक्यूटिव
महेन्द्र प्रसाद गांधी-9415874679

राज्य प्रभारी - दिल्ली - यश सिंह 8882678591
चंडीगढ़ - ओ.पी. राय 8009069795
लुधियाना - गुरदीप सिंह-9815453958
पटना - अमित मिश्रा- 9263056540
पूर्वी उ0प्र0 - प्रदीप राय- 8546055042
पश्चिमी उ0प्र0- अनिल कुमार बाजपेयी-8052159000
लखनऊ - डा. विजयकांत पाण्डेय - 8795506060
प्रयागराज- मनोज पाण्डेय - 9140410568
मिर्जापुर - राजेश कुमार मिश्र- 6393139610
म0प्र0 - प्रहलाद पटेल - 7566126043
रीवा- नन्दलाल पाण्डेय- 9981962439

विशेष प्रतिनिधि- अरविन्द सिंह (वाराणसी) 9919442266
कालीदास त्रिपाठी (चन्दौली) 9838454120, ओमकार नाथ- 9415698795, अशोक जायसवाल- 9451891800, मनोज यादव- 9598155820

कार्पोरेट आफिस

गाँव गिराँव मीडिया प्रा0लि0
मिथिलेश कुमार (ब्यूरो चीफ)
सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर
उत्तर प्रदेश पिन-201309
मो0 - 9811191393, 9910768136
ई-मेल – gaongiraw@gmail.com
बेवसाइट - www.gaongiraw.in

मुम्बई ब्यूरो- 704/25 सोनम मारी गोल्ड, राम मन्दिर के पास, ओल्ड गोल्डेन नेस्ट-3 मीरा भयन्दर रोड भयन्दर, (ईस्ट) थाणे महाराष्ट्र-401105 8850955358, 9930046946

हेड ऑफिस पत्राचार- 13, दीपशिखा अपार्टमेंट गांधीनगर, सिगरा, वाराणसी, उप्र-221010 मो.- 9450825966, 7525825966

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीधर द्विवेदी द्वारा युग सत्य प्रिंटिंग प्रेस, शिवपुर वाराणसी उ0प्र0 से मुद्रित व शि.15/137 भरलाई शिवपुर, वाराणसी (उ0प्र0) 221009 से प्रकाशित।

RNI No - UPHIN/2012/41296

भीतर के पन्नों पर

विचार बिन्दु :
देश में बढ़ती आर्थिक असमानता चिन्ता का विषय... 2
कवर स्टोरी :
बिहार में गढ़ा जा रहा... 3-6
समस्या - गिरता जलस्तर 7
विचार
साहित्य और राजनीति 8-10
कहानी-
जनमों के नाते 11-13
तकनीकी
बालको : कृषि में नवाचार 1
सम्मान
युवा वैज्ञानिक डा. राहुल 15
शिक्षा
परिधि ने स्कूल बदलकर... 16
पुस्तक चर्चा
विष्णु शर्मा के दो लघु उपन्यास 17-19
स्मरण
शोमैन राजकुमार 20-21
स्मृति शेष
अमर शहीद राजा राय 22-27
पर्यटन
सौन्दर्य का संगम ओरछा 28
ब्यूटी फैशन
पार्लर जैसा ग्लो घर पर 29
खेती बाड़ी
डेयरी व्यवसाय प्रबन्धन 30-31
गौ आधारित स्वरोजगार 32-33
धर्म-कर्म
अगस्त माह में व्रत त्योहार 34-35
ज्योतिष 36
स्वास्थ्य
प्रकृति का वरदान मिलेट्स 37-38
खेल-खिलाड़ी 39
सिने-जगत 40

पाठकों से– पत्रिका के लिए आपके प्रतिक्रिया, सुझाव, विचार आमंत्रित हैं। ई मेल–gaongiraw@gmail.com पर भेजें। – सम्पादक

नोट– पत्रिका में प्रकाशित लेख, विचार लेखकों के अपने हैं, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में दिये गये पद अवैतनिक हैं। समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र वाराणसी न्यायालय क्षेत्र में ही मान्य होगा।

देश में बढ़ती आर्थिक असमानता चिन्ता का विषय...

स्पष्ट रूप से समझने की आवश्यकता है कि देश में पिछले कुछ दशकों से हो रहे चुनाव में पूंजीवादी व्यवस्था पूरी तरह लोकतंत्र को कब्जे में ले रखी है। गरीब और मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व समाप्त हो गया है। पूंजीपति सरकार बना रहे हैं और देश के संवैधानिक संस्थाओं, संसाधनों पर कब्जा कर रहे हैं। गरीब और गरीब हुआ है। मध्यमवर्ग जीविकोपार्जन, शिक्षा, चिकित्सा की जंग लड़ रहा है। इस क्षद्म नेतृत्व के बल पर भारत की आर्थिक असमानता को पाटना सम्भव भी नहीं है क्योंकि वही लोग सरकार में हैं जो कारपोरेट घरानों की सहायता से पहुंचे हैं या खुद धनाढ्य हैं।

आर्थिक सर्वे एजेंसियों की मानें तो भारत में विगत एक दशक में अरबपतियों की संख्या 300% से अधिक बढ़ी है। आक्सफैम इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार भारत में कुल सम्पत्ति का एक बड़ा हिस्सा लगभग 11.6 लाख करोड़ डॉलर केवल एक प्रतिशत अमीरों के पास है। आर्थिक विश्लेषकों के अनुसार अगर आय और सम्पत्ति के अन्तर को नहीं रोका गया तो लोकतंत्र भी केवल धनी वर्ग का उपकरण बन कर रह जायेगा।

आंकड़े बताते हैं कि 10% लोग देश की कुल आय का लगभग 57% हिस्सा प्राप्त करते हैं जबकि 50% के हिस्से में केवल 13% आय आती है। इसका कारण है कि सरकारों का पूरा झुकाव कारपोरेट की ओर रहा है। श्रम कानून को शिथिल कर कार्पोरेट टैक्स को 30% से घटाकर 22% किया गया जिसके अरबपतियों को हर लाभ मिला वहीं गरीब और मध्यम वर्ग के लिए प्रत्यक्ष सहायता योजनाएं अपर्याप्त साबित हुई। सरकार का दावा है कि उसने कल्याणकारी योजनाओं से करोड़ों लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाया और प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाया। सरकार के दावे और एजेंसियां की रिपोर्ट में जमीन आसमान का अन्तर है। रिपोर्ट कहती है कि 1991 में उदारीकरण के बाद से पूंजी आधारित अर्थव्यवस्था का लाभ केवल उद्योग, व्यापार और राजनीतिक पहुंच वाले सीमित तपके को ही मिलता रहा। यह दशक तो हदें पार कर गया।

स्पष्ट रूप से समझने की आवश्यकता है कि देश में पिछले कुछ दशकों से हो रहे चुनाव में पूंजीवादी व्यवस्था पूरी तरह लोकतंत्र को कब्जे में ले रखी है। गरीब और मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व समाप्त हो गया है। पूंजीपति सरकार बना रहे हैं और देश के संवैधानिक संस्थाओं, संसाधनों पर कब्जा कर रहे हैं। गरीब और गरीब हुआ है। मध्यमवर्ग जीविकोपार्जन, शिक्षा, चिकित्सा की जंग लड़ रहा है। इस क्षद्म नेतृत्व के बल पर भारत की आर्थिक असमानता को पाटना सम्भव भी नहीं है क्योंकि वही लोग सरकार में हैं जो कारपोरेट घरानों की सहायता से पहुंचे हैं या खुद धनाढ्य हैं। सरकारी आंकड़े और दावे हवा हवाई हैं। ऐसे में लोकतंत्र को आम आदमी का तंत्र बनाने और ग्राम स्वराज का ताना-बाना बुनने वाले लोकतंत्र के निर्माताओं का सपना अब सपना ही नजर आ रहा है। अब निम्न और मध्यम वर्ग को आर्थिक आजादी की जंग एक बार फिर से लड़नी होगी, चुनावी हथियार को धार देनी होगी तभी सही मायने में लोकतंत्र का सपना फलीभूत होगा।

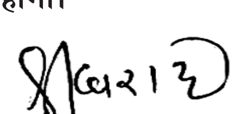

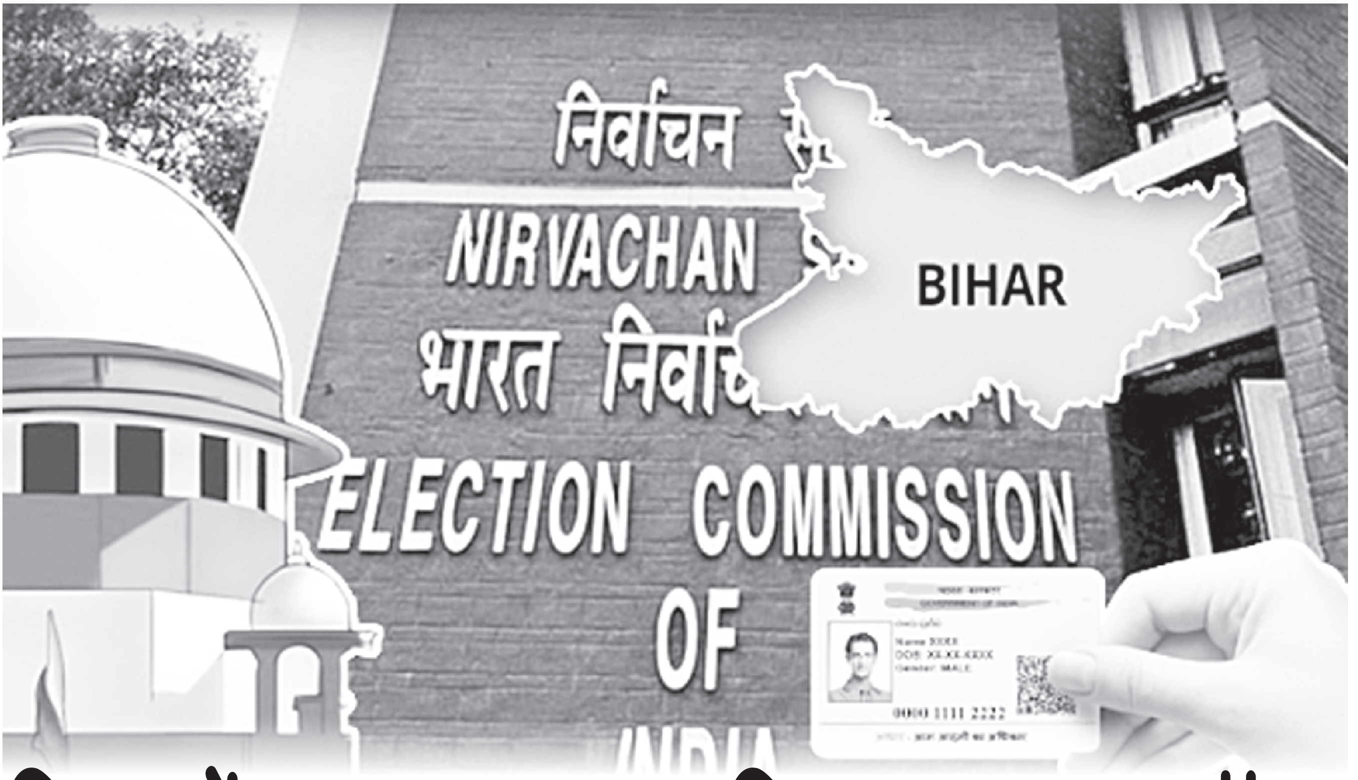

बिहार में गढ़ा जा रहा मताधिकार का नया मॉडल

2-3 करोड़ गरीब व मध्यमवर्गीय मतदाता हो सकते हैं मताधिकार से वंचित

–सुभाष गाताडे

स्वाधीन भारत, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के रास्ते पर चलेगा। बीसवीं सदी की पांचवी दहाई का उत्तरार्द्ध था, जब हमारे नवस्वाधीन मुल्क ने जिसकी दस फीसदी से कम आबादी साक्षर थी- एक अनोखे प्रयोग को अंजाम दिया, ऐसा प्रयोग जिसके बारे में पहले सुना नहीं गया था। आजादी के अगुआओं ने पश्चिमी जगत से आ रही तमाम सलाहों को सिरे से खारिज किया जिसमें कहा जा रहा था कि 'भारत में जनतंत्र का कोई भविष्य नहीं है (चर्चिल) या 'एशियाई मुल्कों के लिए राजशाही की व्यवस्था बिल्कुल मौजूं होगी' (ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लेमंट एटली) । जनाब माधव खोसला, जिन्होंने स्वाधीन भारत की नींव पड़ने के दौरान, संविधान निर्माण के प्रक्रिया का विश्लेषण करते हुए किताब लिखी, बताते हैं कि किस तरह इन अग्रणियों ने अपने निर्णायक कदम से ..साम्राज्यवादी दलीलों का सीधे प्रतिवाद किया क्योंकि उन्हें इस संभावना पर पूरा यकीन था कि वह जनतांत्रिक राजनीति के जरिए जनतांत्रिक नागरिकों का निर्माण कर सकते हैं।

चाहे नेहरू हों, वल्लभभाई पटेल हो, मौलाना आजाद हों या डा अम्बेडकर, इस बात पर जोर देना जरूरी है कि अपने समय के यह सभी अग्रणी नेता जिन्होंने भारत के लिए एक बेहद समावेशी, भविष्योन्मुखी किस्म का संविधान प्रस्तुत किया सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को लेकर पूरी तरह सहमत थे। आजादी के आंदोलन के एक अहम दस्तावेज नेहरू रिपोर्ट में या इस दौरान संविधान के इर्दगिर्द चली चचाओं में इसकी झलक मिलती है। संविधान की मसविदा कमेटी के चेयरमैन डा अम्बेडकर मानते थे कि 'मताधिकार को सीमित करने का मतलब है जनतंत्र के अर्थ को गलत समझना।' इनमें से से कोई भी इस वजह से अपने संकल्प से विचलित नहीं था कि अभी भी कुछ पश्चिमी मुल्क सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार से दूर खड़े थे। मिसाल के तौर पर स्विट्जरलैंड जैसे देश ने वर्ष 1971 में महिलाओं को मताधिकार प्रदान किया।

आज की तारीख में उस दौर को याद करना सपना भी लग सकता है क्योंकि संविधान के लागू होने के 75 साल बाद आज हम ऐसी चुनौती से रूबरू हैं जो पहली दफा अविश्वसनीय लगती है क्योंकि ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मौजूदा हुक्मरानों ने बिल्कुल

उल्टी दिशा में अपनी यात्रा तेज की है।

आजादी के कर्णधार बिल्कुल आखिरी व्यक्ति को जो समाज के बिल्कुल हाशिये पर या कहीं उसके बाहर खड़ा कर दिया गया है उसे भी देशनिर्माण के इस महान काम में, जनतंत्र को स्थापित करने की इस व्यापक मुहिम में भागीदार बनाने को लेकर प्रतिबद्ध थे, जाहिर है उन्होंने जनता के शिक्षा का स्तर देखते हुए भी, उनकी वंचनाओं को करीब से महसूस करने के बावजूद उन्हें इसमें शामिल किया था, सभी के वयस्कों के लिए मताधिकार की गारंटी की थी। इनके बरक्स मौजूदा कर्णधारों की कोशिश बिल्कुल असमावेश की है, ऐसे तरीकों को ढूंढने की है, ताकि लोगों को अपने मताधिकार से दूर रखा जाए जिन लोगों ने दशकों से चुनावों मे मताधिकार का प्रयोग किया है, उन्हें अपनी पहचान साबित करने के लिए कागज के उस टुकड़े को दिखाने को मजबूर करने की है, जो अधिकतर के पास नहीं है। कितने लोगों के पास दसवीं पास का प्रमाणपत्र होगा, जो कभी स्कूल का मुंह भी नहीं देख पाए या कुछ कक्षा जाने के बाद वहां से छूट गए, कितने लोगों के पास अपने माता पिता का जन्म प्रमाणपत्र होगा... अब अपने आप को भारत का नागरिक साबित करने की महति जिम्मेदारी राज्य ने खुद नागरिकों के मत्थे डाल दी है और अगर वह ऐसा कोई कागज जमा नहीं कर पाए या कागज में कोई कमी रह गयी तो उन सभी की नागरिकता को ही खतरे में डाल दिया जाएगा ताकि वह दशकों दशक इसी कवायद में गुजार दें यह साबित करने में कि वह भारत के ही नागरिक रहे हैं, यहीं पैदा हुए है, या उनकी कई कई पीढ़ियां यहीं जनमी हैं।

आप किसी भी कोण से देखिए भारत के चुनाव आयोग द्वारा बिहार के विधानसभा चुनावों के चंद माह पहले जिस स्पेशल इन्टेन्सिव रिवीजन का ऐलान किया गया है उसका यही मतलब निकलता है। यह ऐसी कवायद है जो चुनाव आयोग के इतिहास में कभी भी संपन्न नहीं हुई।

याद रहे चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूची की सालाना समीक्षा की गयी थी, और जनवरी 2015 में संशोधित मतदाता सूचि को जारी किया गया था। अब आयोग द्वारा किए गए इस नए फर्मान के चलते यहीं आकलन किया जा रहा है कि 'बिहार के कमसे कम दो से तीन करोड नागरिक' मताधिकार से वंचित हो सकते हैं।

दरअसल जिस तरीके से यह समूची योजना लोगों के सामने उजागर हुई तभी से यह स्पष्ट था कि यह बिल्कुल मनमाना निर्णय है, जिसमें पारदर्शिता और व्यावहारिकता को पूर्ण अभाव है, जिसने विपक्षी दलों से भी इस मसले पर सलाह मशविरा करने की जरूरत नहीं समझती है, जो चुनाव की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा हैं।

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जनवरी 2025 में जबकि संशोधित मतदाता सूची जारी हुई थी और आने वाले चुनावों की पूरी तैयारी हो गयी थी तो आनन फानन में जून माह में इसकी सघन समीक्षा करने का निर्णय किसने लिया ?

और यह किसके दिमाग की उपज है कि अलग अलग ग्यारह दस्तावेजों में से एक कागज लोगों को जमा करना होगा, ताकि उनकी नागरिकता की भी समीक्षा हो ! आखिर चुनाव आयोग जिसकी भूमिका जनता के वोट के अधिकार को सुगम करने की है उसे किस आधार पर नागरिकता की जांच करने की अधिकार सौंपा गया, जो काम ग्रह मंत्रालय का है। निश्चित ही विपक्ष के इन आरोपों में दम है कि दरअसल इस कवायद के जरिए पिछले दरवाजे नेशनल रजिस्टर आफ सिटिजन्स को अमल में लाया जा रहा है। एक ऐसा राज्य जहां पर सरकारी कर्मचारियों के चार लाख से अधिक पद सालों से खाली पड़े हैं, जहां लगभग बीते बीस साल से कोई नयी भरती नहीं हुई, जहां सरकारी कर्मचारी काम के बोझ से पहले से ही दबे हुए हैं, वह एक माह के अंदर इस पूरी कवायद को कैसे पूरा कर सकेंगे, इसके बारे में भी चुनाव आयोग के महानुभावानों ने सोचना जरूरी नहीं समझा।

जैसे कि आंकड़े बताते हैं कि बिहार के मतदाताओं की संख्या आठ करोड़ के करीब है जिन्हें अपने नए फोटोग्राफ के साथ यह फार्म जमा करने होंगे तथा ग्यारह दस्तावेजों में से एक जमा करना होगा ताकि वह साबित

कर सकें कि वह इस मुल्क के वास्तविक नागरिक इवदंपिकम बपजप्रमदे हैं, जाहिर है कि बिहार जैसे राज्य में बहुत कम लोगों के पास ऐसे दस्तावेज होने की बात कही जा रही है, बाकी लोग फिर क्या करेंगे, यह मामला चुनाव आयोग ही तय करेगा।

आयोग के इस मनमाने फैसले की एक बानगी यह भी देखी जा सकती है कि उसने ऐलान किया है कि लोग अपनी पहचान साबित करने के लिए आधार कार्ड नहीं जमा कर सकते है- जो अधिकतर लोगों के पास होता है और न ही राशन कार्ड या लेबर कार्ड दिखा सकते हैं ताकि वह अपनी पहचान साबित कर सकें। (पिछले दिनों सर्वोच्च न्यायालय में जब चुनाव आयोग को इस मामले में पहुंचना पड़ा, जब इस विवादास्पद जांच को लेकर कई याचिकाएं डाली गयीं थीं, उसके बाद आला अदालत ने कहा यही है कि उसे इस मनमाने तरीके पर पुनर्विचार करना चाहिए और आधार कार्ड तथा राशन कार्ड को भी पहचान साबित करने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए, हालांकि यह अभी भी साफ नहीं है कि चुनाव आयोग इसको पूरी ईमानदारी से लागू करेगा।

इस फैसले के बेहद जातिवादी और संभ्रांतवादी स्वरूप को कई आधारों पर जांचा जा सकता हैः एक, कहा जा रहा है कि अगर आप नया फॉर्म भर रहे हों तो आप अपना पासपोट भी पहचान के लिए दिखा सकते हैं निस्सन्देह बिहार की बेहद मामूली आबादी के पास / 2.4 फीसदी / पासपोर्ट है और इनका बहुलांश उंची जातियों का है। दो, यही वह मौसम है जब बिहार का आधा हिस्सा बाढ़ से प्रभावित होता है और यातायात भी प्रभावित होती है। आखिर ब्लॉक स्तरीय अधिकारी किस तरह मतदाताओं की आठ करोड़ आबादी के घर में दो बार जा सकेगा ? तीन, सभी अध्ययन यही बताते हैं कि रोजगार के लिए बिहार से बड़ी संख्या में लोग बाहर जाते हैं, वर्ष 2011 की जनगणना के मुताबिक बिहार के प्रवासी मजदूरों की यह संख्या करीब अस्सी लाख के करीब पड़ती है, क्या यह उम्मीद की जा सकती है कि वह महज इस मतदाता सूचि में अपने नाम को नए सिरे से डलवाने के लिए बिहार लौट सकेंगे ? निश्चित ही यह असंभव है, इसका मतलब यही है कि प्रवासी मजदूरों का अच्छा खास हिस्सा आधिकारिक तौर पर मतदाता सूची से बाहर हो जाएगा ! जानकार बताते हैं कि इसके पहले मतदाता सूची का व्यापक सर्वेक्षण 2003 में पूरा हुआ था और उसे अंजाम देने में तथा अंतिम रिपोर्ट जारी करने में दो साल लग गए थे।

चुनाव आयोग द्वारा आनन फानन उठाया गया यह कदम जिसे थे। 'नोटबंदी' की तरह 'वोटबंदी' कहा जा रहा है, उसने न केवल तमाम विपक्षी दलों में तथा सिविल सोसायटी संगठनों में बल्कि आम लोगों के बड़े हिस्से में भी व्यापक चिन्ताओं को जन्म दिया है और उन्होंने संकल्प लिया है कि इस 'तुगलकी फरमान' के खिलाफ वह एक शांतिपूर्ण जनान्दोलन चलाएंगे। 9 जुलाई को पटना तथा बिहार के कई हिस्सों में आयोजित बंद तथा चक्का जाम के माध्यम से इस मुहिम का आगाज भी हो चुका है।

इस बात मद्देनजर रखते हुए कि बिहार एक बेहद गरीब राज्य है जहां अभावग्रस्त, वंचित आबादी का बड़ा हिस्सा - जिनका बड़ा भाग सामाजिक और धार्मिक तौर हाशिये पर पड़े समुदायों से सम्बंधित है, जो किसी तरह अपना गुजारा करता है, वहां मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण की सबसे बड़ी चोट उन्हीं लोगों पर पड़ेगी, जो ऐसा कोई दस्तावेज जमा करने में बिल्कुल असमर्थ होंगे।

जैसा कि उल्लेख किया गया है कि सर्वोच्च न्यायालय में विपक्षी पार्टियों, सामाजिक संगठनों द्वारा डाली गयी याचिकाओं की सुनवाई के दौरान जिसमें कहा गया था कि इस सिलसिले से लाखों लोग मताधिकार से वंचित कर दिए जाएंगे चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूची की सघन जांच के नाम पर हाथ में लिए गए इस विवादास्पद अभियान के बाद इस मामले में रिपोर्टर्स कलेक्टिव द्वारा जो जांच पड़ताल की गयी है और रिपोर्ट जारी कर दी गयी है वह अधिक विचलित करनेवाली है।

रिपोर्ट का शीर्षक है, बिहार के विवादास्पद मतदाता । इसके मुताबिक ' जनवरी 2025 तक बिहार राज्य के चुनावी मतदाता सूची का विस्तृत पुनरीक्षण कर उनको नवीनतम बना दिया गया था. इस सूची को दुरुस्त पाया गया था।.. अचानक चुनाव आयोग ने इस सूचि को त्रुटिपूर्ण बताया और खारिज कर दिया और एक ऐसी अभूतपूर्व कवायद का आगाज किया ताकि मतदाताओं की शुरू से पूरी समीक्षा की जाए। नतीजा सामने है कि अव्यवस्था / अराजकता का आलम है। यह रिपोर्ट शुरू होती है पूर्वी चंपारण जिले के मेघुआ गांव के तबरेज आलम से, जिसने चुनाव आयोग के बूथ स्तरीय अधिकारी को आवेदन दिया है कि वह हुसैन शेख का नाम मतदाता सूचि से हटा दे क्योंकि जून 2024 में उनकी मृत्यु चुकी है। नवम्बर 2024 तक चुनाव आयोग ने तबरेज के आवेदन की जांच पूरी की है और जनवरी 2025 को जारी की नयी सूचि में से हुसैन का नाम हटा दिया है।

और अब 'पांच महिने बाद, 37 साल के तबरेज आलम को चुनाव आयोग के इस ताजे फरमान ने मजबूर कर दिया है कि वह साबित करे कि वह अस्तित्व में है, वह भारत का नागरिक है और गांव में ही रहता है तथा बिहार विधानसभा के आगामी चुनावों में वह वोट देने का अधिकारी है। कोई भी देख सकता है कि चुनाव आयोग के इस 'तुगलकी फरमान के चलते तबरेज जैसे लाखों लोग जिन्होंने विगत तमाम आम चुनावों में या विधानसभा चुनावों में वोट दिया है उन्हें अब जल्द से जल्द दस्तावेजी प्रमाणपत्रों के साथ साबित करना पड़ेगा कि उनके पास मताधिकार है। और अगर वह ऐसा नहीं कर सकेंगे तो उन्हें 'संदिग्ध नागरिकों' की सूची में डाल दिया जाएगा।

इस पूरी कवायद पर सत्ताधारी पार्टियों की चुप्पी अकारण नहीं है, जो विपक्षी

पार्टियों के इन आरोपों को बल प्रदान करती है कि चुनाव आयोग अब अपनी निष्पक्षता को त्यागता दिख रहा है।

विगत एक दशक से अधिक समय से विपक्षी पार्टियों की तरफ से यह आरोप लगते रहे हैं कि किस तरह जनतंत्र का सुरक्षा कवच समझी जानेवाली संस्थाओं सीबीआई, ईडी / एन्फोर्समेण्ट डायरेक्टोरेट / आदि की स्वायत्तता नष्ट की जा रही है और उनके माध्यम से विपक्ष को ही निशाना बनाया जा रहा है, और किस तरह कन्टोलर एण्ड ऑडिटर जनरल जैसी जनतंत्रा की प्रहरी संस्थाओं को भी निष्प्रभावी किया जा रहा है या किस तरह प्रेस और न्यायपालिका की स्वतंत्रता पर भी हमले तेज हो रहे हैं, लेकिन हाल के वर्षों में चुनावी प्रक्रियाओं को भी किस तरह पक्षपाती बनाया जा रहा है, यह बात भी होने लगी है।

याद रहे संसदीय चुनावों के ऐन पहले विवादास्पद चुनावी बॉन्ड का मसला सुर्खियों में था, / जिसके जरिए सत्ताधारी पार्टी के खजाने में अकूत दौलत एकत्रित करने का सिलसिला शुरू हुआ था, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने बाद में गैरकानूनी घोषित कर दिया था। याद रहे चुनाव आयोग की निष्पक्षता मसला उन दिनों भी सुर्खियां बना था, जब पार्टियों के आंतरिक विवादों में आयोग ने पक्षपाती भूमिका निभाने के आरोप लगे थे।

विगत साल महाराष्ट्र के विधानसभा चुनावों के सम्पन्न होने के बाद फिर एक बार उसकी निष्पक्षता पर नए सवाल खड़े हुए थे।

ध्यान रहे मई-जून 2024 में महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव- देश के अन्य राज्यों के साथ सम्पन्न हुए थे, जिसमें भाजपा गठबंधन को काफी कम सीटें मिली थीं और कांग्रेस-शिवसेना उद्धव और राष्टवादी कांग्रेस पार्टी, शरद पवार के गठबंधन को बढ़त मिली थी और यही कयास लगाए जा रहे थे कि यही सिलसिला विधानसभा चुनावों में दोहराया जाएगा, लेकिन हुआ बिल्कुल उटा था, अचानक भाजपा की अगुआई वाले गठबंधन को भारी बहुमत मिला और उसने सरकार भी बना ली।

बाद में नतीजों की जांच करने पर कांग्रेस तथा अन्य विपक्षी दलों ने यह पाया कि मई-जून के लोकसभा चुनावों और मुश्किल छह माह के अंतराल में सम्पन्न विधानसभा चुनवों में कई मतदातासंघों में अचानक वोटों की बढ़ोत्तरी देखी गयी थी। इसे लेकर विपक्ष ने मुंबई में प्रेस कान्फरेन्स भी की, चुनाव आयागे की तरफ से इस 'मैच फिक्सिंग' के आरोप लगे थे, लेकिन इन्हें लेकर अभी तक कोई सन्तोषजनक जवाब नहीं दिया गया है। राहुल गांधी ने इस मसले पर देश के तमाम अग्रणी अखबारों में लेख लिख कर उजागर किया था कि किस तरह केन्द्रीय चुनाव आयोग अपनी निष्पक्षता को त्याग रहा है।

यह बताने के लिए किसी बड़े विद्वान की आवश्यकता नहीं है कि यह कदम महज बिहार तक सीमित नहीं रहेगा, इसे शेष भारत में भी रफ्ता रफता फैलाया जाएगा। खबरों के मुताबिक बिहार के बाद बंगाल में भी यह सिलसिला शुरू होने वाला है। गौरतलब है कि उपरी तौर पर पढ़े लिख तबके को भी यह कवायद वाजिब लगेगी कि मतदाता सूची की जांच की जा रही है, अवैध नागरिकों को हटाया जा रहा है, मगर हकीकत में यह ऐसा तरीका होगा जो महज किसी कागज की अनुपस्थिति में नागरिकों के अच्छे खासे हिस्से की नागरिकता को ही संदेह के घेरे में डाल सकता है और ऐसे अनागरिक घोषित किए गए लोग सालों साल यही साबित करने में गुजार देंगे कि वह वैध नागरिक है। फौरी तौर पर सत्तासीनों को यह फायदा भी होगा कि नागरिक के तौर उन्हें मिलने वाली तमाम सुविधाओं से मान लें सस्ता राशन या अन्य सहायता - वंचित किया जाए।

बिहार जिसे 'दुनिया के पहले जनतंत्रा की भूमि' के तौर पर इन दिनों नवाजा जाता है। वह अब आने वाले दिनों में एक ऐसे सूबे के तौर पर जाना जाएगा कि किस तरह लोगों को अपने मताधिकार से वंचित किया जा सकता है, किस तरह चंद लोगों के जनतंत्रा को, अभिजातों के अपने लोकतंत्र को आकार दिया जा सकता है।

निस्सन्देह, व्यापक आबादी और संविधान की रक्षा करने के लिए खड़े तमाम विपक्षी दलों के साझा प्रयास ऐसे तमाम प्रयासों को नाकाम करने में सक्षम हैं।

बिहार की आम जनता अपने इस नए संघर्ष से पूरे मुल्क को दिखा देगी कि आजादी के कर्णधारों ने जनतंत्रा की नींव डालने के लिए जिन बातों को अनिवार्य माना था, उस विरासत को वह बचा लेगी और फिर एक बार साबित करेगी कि संघ- भाजपा जैसी जमातें जिनके पुरखे आजादी के आंदोलन से दूर रहे और स्वतंत्राता सेनानियों का साथ देने के बजाय उनके खिलाफ मुखबिरी करते रहे, व्यापक जनता को धर्म के नाम पर बांटते रहे, वह आजादी के संघर्ष के वारिस नहीं है, बल्कि असली वारिस व्यापक जनता है।

विडंबना यही है कि इस कवायद से व्यापक पैमाने पर लोग मताधिकार से वंचित हो जाएंगे' फिर भी सर्वोच्च न्यायालय ने इस पर स्टे आर्डर नहीं दिया

ताजा खबर यह भी आ रही है कि मतदाता की पहचान प्रमाणित करने की इस कवायद में जमीनी स्तर पर चुनाव आयोग के अधिकारी मनमानी करते भी देखे गए है। पटना में जहां उसने आधार कार्ड को मतदाता की पहचान माना और उनके फार्म जमा करवाए, वहीं ग्रामीण इलाकों में या सीमांचल जैसे मुस्लिम बहुल जिलों में वह इसे स्वीकारने से इन्कार कर रहा है और हजारों लोगों के फार्म खारिज कर दिए गए है।

इस कवायद से मतदाता पुनरीक्षण के असली एजेंडे पर पर्दा हटता दिखता है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि इस तरह वह उन मतदाताओं के नाम छांट देगा, जो किसी भी सूरत में भाजपा को वोट नहीं देंगे।

(लेखक सोशल ऐक्टिविस्ट और स्वतंत्र चिंतक हैं, संपर्क 97118 94180)

जल का गिरता जलस्तर

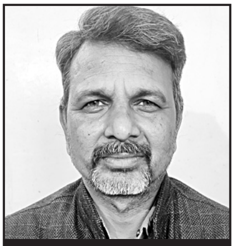

महेंद्र प्रसाद गांधी

आज से तीन-चार दशक पहले हमारे मोहल्लों में सिर्फ एक सरकारी नल हुआ करता था। पूरा मोहल्ला उस एक नल से पानी भरता था। कुछ लोगों के पास कुएं होते थे, जिनका पानी शुद्ध और मीठा होता था। पूरे गांव में एक दो लोग के पास हैंडपंप हुआ करता था। नदी और तालाबों में स्नान करना आम बात थी। लेकिन समय बदला, तकनीक आई, समरसेबल पंप आए, और जल दोहन की अंधी दौड़ शुरू हो गई।आज हालात यह हैं कि देश के कई हिस्सों में भूजल स्तर हर साल 2 से 3 सेंटीमीटर से लेकर कुछ क्षेत्रों में 1 मीटर तक गिर रहा है। यह केवल आंकड़ा नहीं, हमारे अस्तित्व के लिए खतरे की घंटी है। सामान्य परिवार के घरों में समरसेबल पंप लग चुका है। लोग बिना सोचे-समझे पानी बहा रहे हैं – गाड़ियों की धुलाई से लेकर छत पर कूलर की पाइप तक पानी की बर्बादी आम हो गई है। न कोई टोंटी बंद करता है, न कोई रिसाव रोकता है। यह सोचकर की 'हम तो पानी खरीद लेंगे' – लोग जल संरक्षण की जिम्मेदारी से खुद को अलग कर रहे हैं।हमारे गांव-कस्बों की पहचान रही नदियां और पोखरे अब इतिहास बनते जा रहे हैं। कई नदियां पूरी तरह सूख चुकी हैं या नाले में बदल गई हैं। तालाबों की भूमि पर कॉलोनियां उग आई हैं। और नए तालाब बनाने की सोच तक नहीं रही क्योंकि 'जमीन नहीं बची'।अगर यही हाल रहा तो आने वाले वर्षों में पैसा तो होगा, लेकिन पीने के लिए पानी नहीं होगा। यह स्थिति केवल गरीब या ग्रामीण क्षेत्र की नहीं रहेगी – यह संकट महानगरों के दरवाजे तक भी पहुंच चुका है। जल संकट अमीर-गरीब, शहर-गांव सबको एक साथ निगलेगा।हर घर, हर बिल्डिंग में वर्षा जल संचयन प्रणाली होनी चाहिए।

सामूहिक जल स्रोतों का विकास करें।तालाबों और नदियों का पुनर्जीवनः अतिक्रमण हटाकर पुराने जल स्रोतों को पुनर्जीवित किया जाए।स्कूलों से शुरुआतः बच्चों को जल संरक्षण की शिक्षा देना अनिवार्य हो ताकि भावी पीढ़ी जिम्मेदारी समझे।

'पानी बचाना सिर्फ पर्यावरण संरक्षण नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा है।'

समय रहते हम चेत गए, तो आने वाली पीढ़ी हमें धन्यवाद देगी। वरना इतिहास हमें एक ऐसी पीढ़ी के रूप में याद करेगा जिसने पैसा तो कमा लिया, लेकिन पानी गंवा दिया।

अंतर्द्वंद

-ममता शर्मा

मन के भीतर भी ऋतुएँ बदलनी चाहिए
बहुत समय से बस धूप है वहाँ,
और कुछ जली हुई यादों की राख।

कोई एक बारिश होनी चाहिए अब
ऐसी नहीं जो सिर्फ़ गीला करे,
बल्कि ऐसी जो अंदर जमी हुई
हर बात को बहा ले जाए।

कोई तेज़, उखाड़ देने वाली धार –
जो उन चेहरों को भी ले जाए
जो अब सिर्फ़ स्मृति नहीं, बोझ हैं।

वो रिश्ते जो बस नाम बनकर रह गए,
और वो मौन –
जो अब दर्द से ज़्यादा आदत हो गया है।

बरसात होनी चाहिए
भीतर
इतनी कि दिल की मिट्टी
फिर से नम हो सके।

कोई नया बीज फूटे,
कोई नई पगडंडी निकले,
और आत्मा की छत पर
फिर से हरियाली उग आए।

हाँ, मन के अंदर भी
एक मौसम होना चाहिए –
और उसमें भी कभी-कभी
धारासार बारिश।

साहित्य और राजनीति

विनोद शाही

रचनात्मक साहित्य को राजनीति-निरपेक्ष मानने के दौर का अब अंत हो चुका है।

आज हम रचनात्मक साहित्य के भीतर मौज़ूद विविध सत्ता या शक्ति-संरचनाओं की अथवा राजनीति से संबद्ध विविध विमर्शों की तलाश पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इन संरचनाओं पर विमर्शों की मौज़ूदगी की बाबत सचेत होने का नतीजा यह निकला है कि अब हमारे साहित्य के स्वरूप, उसकी अंतर्वस्तु तथा उसके प्रयोजनों एवं सौंदर्यात्मक प्रकार्यों की बाबत हमारी पुरानी धारणाओं में कहीं गहरी तब्दीली आती दिखाई दे रही है, जैसे-जैसे हमारे सामाजिक व्यवहारों का राजनीतिकरण या ग़ैर-राजनीतिकरण होता जाता है, वैसे-वैसे हमें यह दिखाई देने लगता है कि साहित्य ठीक वही नहीं कहता, जो हमें परंपरागत रूप में या सामान्यतः लगता रहा है।

साहित्य-चिंतन के क्षेत्र में एडोर्नो की मार्फ़त हम जिन शक्ति संरचनाओं की मौज़ूदगी को साहित्य-रूपों व उनके निहितार्थों के रूप में देखते हैं, उनका संबंध गहरे में सत्ता और जन के दरम्यान रिश्तों के स्वरूप के साथ होता है। सत्ता के द्वारा दलित जन अपनी समांतर शक्ति संरचनाओं के द्वारा किसी विकल्प या रूपांतर की ज़रूरत का अहसास कराता है। देरिदा के लिए साहित्य चूंकि एक भाषा - खेल जैसी वस्तु है, अतः वह निहितार्थों के रूप में मौज़ूद विमर्शों को इस रूप में नहीं देखता कि हम एक के विरोध में दूसरे पक्ष के स्वीकार को अंतिम मान लें। देरिदा का विवेचन एडोर्नो की संभावित प्रतिबद्धता की संभावना का भी विखंडन कर देता है। उसके लिए निहितार्थों में 'अन्य' सदा महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि वहीं सबसे अधिक संभावना होती है। इस तरह आप अंतहीन अन्यान्य विमर्शों की शृंखला तक पहुंच जाते हैं। एडोर्नो की मूलतः मार्क्सवाद प्रभावित दृष्टि के पीछे छिपे राजनीतिक दर्शन की तुलना में देरिदा एक बहुलतावादी निष्कर्षहीन प्रजातांत्रिक स्वेच्छाचारिता का दर्शन लेकर उपस्थित होते हैं - जिसे मिशेल फूको बहुत दूर तक स्वीकार नहीं कर पाते। फूको के लिए निहितार्थक सत्ता-वर्चस्वी संरचनाओं का 'अन्य' कोई ऐसा विकल्प नहीं होता, जो उक्त वर्चस्व से स्वतंत्र और अराजक हो। यानी गहरे में अंततः सत्ता - वर्चस्व की नियामकता को देरिदा की 'अन्यान्यार्थता' भी खंडित या विसर्जित नहीं कर पाती हैं।

यहां उपर्युक्त विवेचन में मैंने एक विशिष्ट उद्देश्य से एडोर्नो, देरिदा व फूको का चुनाव किया है, हालांकि यहां साहित्य चिंतनगत राजनीति-संरचनाओं के विवेचन के संदर्भ में कुछ अन्य चिंतकों को भी लिया जा सकता था। इसमें मेरी दृष्टि में फ्रेडरिक जेम्सन, एडवर्ड सईद तथा टेरी ईगल्टन की चर्चा भी हमें क़ायदे से करनी चाहिए। तथापि फ़िलहाल इन्हें इसलिए छोड़ दिया गया है, क्योंकि ये चिंतक उपर्युक्त तीनों चिंतकों की बुनियादी स्थापनाओं का ही आगे विकास - विस्तार करते हैं। ये तीनों चिंतक मौज़ूदा विश्व के तीन बड़े राजनीति दर्शनों की ओर इशारा करते हुए भी हमें नज़र आ सकते हैंः एडोर्नो नवसमाजवादी, देरिदा तृतीय विश्ववादी तथा फूको नवसाम्राज्यवादी राजनीति-दर्शनों के क़रीब पड़ते प्रतीत होते हैं। एक और अहम् बात यहां रेखांकित करने लायक यह है कि ये तीनों तरह के राजनीति-दर्शन आज प्रजातंत्र के तीन नए रूपों के अंतर्विकास की सूचना दे रहे हैं।

एक तरह से हमारा मौज़ूदा दौर वैश्विक रूप में प्रजातंत्र के अपरिसीम विकास- विस्तार की संभावनाएं लेकर प्रकट हो रहा है। बेशक ये संभावनाएं जितनी और जिस सीमा तक विधायक हैं, उतनी और कई दफ़ा उससे भी बढ़कर नकारात्मक होने की गवाही भी देने लगती हैं। जहां तक समाजवाद के लिए सर्वहारा की तानाशाही वाले राजनैतिक और क्रांतिकारी मॉडल का प्रश्न है, वह अब निरंतर एक असंभावना बनता जाता है। इसलिए आज यह सवाल बहुत से मुल्कों में, अनेक शक्लों में, पूछा जा रहा है कि क्या समाजवाद प्रजातांत्रिक सत्ता - परिवर्तनों की परिणति या निष्कर्ष हो सकता है। अथवा नहीं? भारत में संविधान लिखने की प्रक्रियाओं के आरंभ होने के काल से हमने इस मामले में, विश्व के किसी अन्य देश की तुलना में, कहीं अधिक गंभीरता से सोचा है और इस कड़ी में खुद़ को प्रजातांत्रिक समाजवादी देश घोषित भी कर लिया है। तथापि गहरे विवेचन के बाद हमें अंततः इस कड़वी सच्चाई से सहमत होना पड़ेगा कि प्रजातंत्र के मौज़ूदा रूप में व्यापक- गहरे क्रांतिवादी रूपांतरों को संवैधानिक रूप में लाए बिना ऐसा नहीं हो पाएगा। इसके लिए हमें अपने सामाजिक यथार्थ की एक दफ़ा फिर से गंभीर पुनर्व्याख्या करनी होगी तथा अपनी ज़मीनी सच्चाइयों के अनुरूप ही 'समाजवाद' अर्थों को भी गढ़ना- तलाशना होगा।

अब यहां मैं अपने साहित्य-चिंतन के बुनियादी अंतर्विरोध की चर्चा करना चाहूंगा। हमारे यहां हुआ यह है कि पश्चिम में प्रगतिशील चिंतन से बहुत ज़्यादा प्रभावित हमारा यह नेहरूवादी कोटि का चिंतन हमारे यहां के वास्तविक ज़मीनी राजनीति - चिंतन से उतना ही दूर है, जितना दूर एडोर्नो, वाल्टर बेंजामिन, रेमंड विलियम्स या बाख्तिन से हमारा गांधीवाद है। ऊपर से एक और जटिलता इस अंतर्विरोध में यह दिखाई देती है कि हमारे साहित्य के वामचिंतक साहित्य में उक्त नवसमाजवादी या संशोधित या लचीले मार्क्सवादी प्रारूपों को न तलाश कर अपना ध्यान मार्क्सवाद के क्लासिकी रूपों पर लेनिनवादी, माओवादी या लूनाचास्कय रूपों पर अधिक केंद्रित करते रहे हैं। इस वजह से हम अपने प्रजातंत्र की विधायक आलोचना कर पाए - जो हमें इसके नवविकास की संभावनाओं की ओर ले जाती। इसके उलट हमने अपने साहित्य की व्याख्याओं में यह पढ़ने की कोशिश की कि हमारे यहां समाजवादी क्रांति के सर्वहारा की तानाशाही का रूप प्रकट होने में इतनी देर क्यों लग रही है और निशाने पर है ढुलमुल, अंतर्विरोधग्रस्त, पतनशील और भ्रष्ट प्रजातंत्र - जैसे कि उसे हराए या हटाए बिना यहां समाजवादी क्रांति असंभव होगी, साहित्य की ऐसी व्याख्याओं के विरोध में प्रजातंत्र की पतनशीलता का ही प्रबंध समर्थन करने वाली आधुनिकतावादी दृष्टि हमें बहुत रास आई। इस दृष्टि का निहित-प्रच्छन्न राजनीति-दर्शन था - मनुष्य को केंद्र में रखते हुए समाज के ऐसे

प्राकृतिक या परंपरागत रूपों को उभारना, जो हमारा ग़ैर-राजनीतिकरण करते हुए भ्रष्ट पतनशील राजनीति-तंत्रों व विमर्शों को विकल्प प्रतीत हो, इस कड़ी में हमारे सामने 'संशय की एक रात' या 'अंधायुग' जैसी बेहतरीन कृतियां आती हैं, परंतु हम इससे या इनकी मार्फ़त और गहरे में उतरते हुए अपने सामाजिक यथार्थ जो भले ही हमें प्रजातांत्रिक या ग़ैर-प्रजातांत्रिक कुछ भी लगता हो - की इस लिहाज़ से पुनर्व्याख्या करने से चूक गए कि हमारी सत्ता-संरचनाओं की पुनर्संरचना फिर कैसे और क्या या किस रूप की हो सकती है? दूसरी ओर हमारे पास 'गोदान' या 'झूठा सच' जैसे उपन्यास हैं, जो त्रासदी और पतनशीलता की अपरिहार्यता में अटक जाते हैं या 'अंधेरे में' जैसी कृतियां हैं, जो विश्वसनीय या अविश्वसनीय क्रांतिकारी यूटोपिया को आरोपित करती हैं।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हमारे यहां साहित्य-चिंतन के निहितार्थी की तरह मौजूद राजनीति-विमर्श मुख्यतः दो तरह के हैं, एक, वे जो पतनशील भ्रष्ट प्रजातांत्रिकता की अपरिहार्यता से मायूस उसके मानवीय सार तत्व की दुहाई देते हैं; परंतु कोई विकल्प या अंतर्विकल्प विकसित नहीं करते और दो, ऐसे विमर्श जो समाजवादी क्रांति की असफलताओं के त्रासद सिलसिलों को आभ्यंतरीकृत करते हुए अपनी ठोस ज़मीनी बेचैनियों को भविष्य-चिंता का रूप देकर इंतज़ार करते हैं। ध्यान से देखें तो ये दोनों रूप दरअसल यूरोप एवं अमेरिका के राजनीति-विमर्शो की भारतीय अनुगूंजों की तरह हैं। टी. एस. इलियट का 'वेस्ट लैंड' या कामू का 'आउटसाइडर' या सैमुअल बैकेट का 'वेटिंग फार गोदो' पहली तरह की राजनीतिविमर्शगत पठन की ओर ले जाता है, तो ब्रेख्त जैसे रचनाकारों की कृतियां दूसरी तरह की पठन की ओर। यहां सबसे बड़ा विचारशील सवाल यह पैदा होता है कि हमारे राजनीति-विमर्शों और यूरो-अमेरिकी परिदृश्य की इस ऊपरी तौर पर दिखाई देने वाली समानता की वजह और वास्तविकता क्या है?

वजह है हमारे राजनीति - दर्शनों की औपनिवेशिक निर्मितियां (कोलोनियल कंस्ट्रक्शंज़), जिनका विधिवत और संवैधानिक रूप में प्रतिफलित आगाज़ नेहरू से लेकर आंबेडकर तक देखा जा सकता है। इसके पीछे यदि वास्तविकता यह है कि ऐसा इसलिए दिखाई देता है, क्योंकि हम यह नहीं देख पाते कि इन औपनिवेशिक निर्मितियों ने हमारे गांधीवाद को गहरे में कैसे, किन रूपों में और किन प्रयोजनों से दमित किया है। हमारे गांधीवाद को गहरे में राजनीति-विमर्श में भी यह जो 'दमित गांधीवादी' अंतर्वस्तु कंटेंट मौजूद है - उसे देखने, खोजने और व्याख्यायित करने के द्वारा हम अपने साहित्य के उस वास्तविक 'अन्य' देख-पकड़ पाएंगे, जो हमें न केवल यूरो-अमेरिकी परिदृश्य से भिन्न करता है, बल्कि हमें हमारी अपनी ज़मीन खोजने में, अपनी विशिष्टता और मौलिकता की ओर अग्रसर होने में मदद करता है।

अब हम अपने विवेचन के उस मरहले पर पहुंच गए हैं, जहां हम देरिदा और सईद से कुछ मदद ले सकते हैं। सो आइए, पहले ऊपर के विवेचन पर एक दफ़ा फिर से निगाह दौड़ाएं। अपने साहित्य और साहित्य-चिंतन में हमने यह पाया है कि हमारे यहां विविध औपनिवेशिक निर्मितियां मौजूद हैं। इसके तहत एक विविधतावादी या बहुलतावादी विमर्श-परिदृश्य हमारे सामने खुलता है। मुख्य तौर पर हमारा राजनीति- विमर्श है - जिसे चाहें तो समन्वयात्मक कह लें। इसके नवसमाजवादी और नवप्रजातांत्रिक विमर्शों को मिलाकर समाजवादी प्रजातांत्रिक गणतांत्रिकता का फार्मूला खोजा गया। पश्चिम से प्रभावित व उस ओर आकृष्ट बौद्धिक नेतृत्व इसे क्लासिकी समाजवाद और आधुनिकतावादी प्रजातांत्रिकता के ध्रुवों में पश्चिम की तर्ज़ पर दो फाड़ करता है और अपने यहां आलोचनात्मक यथार्थवाद नवमार्क्सवाद दोनों की अनुगूंजों तक पहुंच जाता है। भारतीय अंतर्वस्तु पर यथार्थ के रूप में मनुष्य केंद्रित या अतिक्रांता चेतना-केंद्रित विकल्प तथा उनके विविध जातिगत सांप्रदायिक रूपों व विमर्शों की दखल़ भी इसमें दिखाई देती है। इस तरह हम हिंदूवाद, राष्ट्रवाद, इस्लामी कट्टरता व तुष्टिवाद, दलितवाद, सांस्कृतिक साझावाद जैसे विविध विमर्शों को भी उपविमर्शों की तरह सक्रिय होते पाते हैं। यानी कुल मिलाकर यह स्थिति देरिदा के अन्यान्य अर्थवाद तक पहुंचती प्रतीत होती है। हर विमर्श की तह में, नीचे से कोई और 'अन्य' सरक कर वहां प्रविष्ट हो जाता है और पूर्व गृहीत अर्थ को एकदम से बदल देता है।

देरिदायी विवेचन में बहुलतावाद तक पहुंचते हुए अनेक चिंतकों ने इसे एक नई उदारवादी प्रजातांत्रिकता के प्रकट होने की संभावना से जोड़ लिया है, जिसके तहत अनंत विविधताओं के सह-अस्तित्व का सुहावना सपना हमें दिखाया जा रहा है। इसे एक विराट सापेक्षतावादी परस्पर और सह- स्वतंत्रता के रूप में समझने की कोशिश की गई है, परंतु फूको और सईद की मार्फ़त हम अब यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि हाथी के इस दिखाई देने वाले दांतों के पीछे खाने वाले दांत भी होते हैं और वे क्या करते हैं?

बेशक चिंतन और विमर्श की दुनिया में देरिदा का विखंडनवाद, बहुलतावाद और तृतीय विश्ववाद अलहदा चीजें हैं, परंतु यहां हम इनके दरम्यान एक परोक्ष या प्रच्छन्न अंतःसूत्रता देखने की कोशिश करेंगे। विखंडनवाद साहित्य-चिंतन के क्षेत्र में हमें पाठकवाद की ओर ले गया है। दूसरी बात उसने पैदा की है कि वर्चस्ववादी विमर्शों के पीछे छिपे 'अन्य' वहां दमित या उपेक्षित रूप से ही हैं, तो इससे हमें सामाजिक रूपांतर और तदनुरूप दर्शन के विकास में कोई बड़ी मदद नहीं मिलती।

तो, वस्तुस्थिति यह है कि देरिदा का विखंडन अन्य निहितार्थों की मौजूदगी को तो स्वीकार करता है, परंतु उनकी वस्तुस्थिति और अगर स्पष्टता से कहें, तो वर्चस्वहीन स्थिति को छिपाता है। यह दुराव या छिपाव यह भ्रम पैदा करता है कि देरिदायी विखंडन से पारस्परिक समानता पर आधारित सापेक्षवाद और बहुलतावादी प्रजातंत्र तक पहुंचा जा सकता है।

दूसरी बात यहां यह भी ध्यान में लेनी ज़रूरी है कि 'अन्य' को महत्त्व देने वाले दर्शकों को आधार बना कर आज जिस विविधतावाद या बहुलतावाद की इतनी चर्चा की जा रही है, वह भी भूमंडलीकरण का दिखाने वाला आदर्श पहलू ही है। इसे तरजीह देने वाले वर्चस्व की स्थिति में तथा विविधता को भोगने या जीने वाला ग्राहक दोयम दर्जे की स्थिति में होता है।

तीसरी बात, जो इस बहुलता या विविधतावाद की नज़र आती है, वह यह है कि इसका व्यावहारिक रूप या क्रीड़ास्थली तीसरी दुनिया में प्रकट होती है, जबकि पश्चिम पूर्ववत् अपनी मुख्यधारा वर्चस्विनी स्थिति और

मानसिकता द्वारा विविध 'अन्यों' को दमित करके सीमांतों पर धकेले रखता है। आप इस लिहाज़ से अमेरिका के मूलनिवासियों (नेटिव्ज़) की स्थिति को देख लीजिए या ब्रिटेन के संदर्भ में आयरलैंड की स्थिति को और अरब-इज़रायल के संदर्भ में फिलीस्तिनियों को रख लीजिए– पश्चिम की वर्चस्वी, मुख्यधारा केंद्रित एवं 'अन्य' प्रतिरोधी मानसिकता स्पष्ट हो जाएगी। अब उसके पास इतनी सामाजिक शक्ति भी है, जिसके सहारे वह 'अन्यों' के दमन को प्रजातांत्रिकीकरण की अपनी मानवीय एवं प्रगतिशील मुहिम का मुखौटा ओढ़ाने में सफल हो जाता है। इराक और अफ़ग़ानिस्तान इसके उग्र उदाहरण हैं, परंतु मुख्यतः अधिकांश इस्लामी देश और सामान्यतः पूर्व उपनिवेश व तीसरी दुनिया इस दमनचक्र के संताप, शोषण-दोहन व आत्महनन् को भुगत रही है। इस प्रकार विविधतावाद व मानवाधिकार आदि भी अंततः पश्चिमवर्चस्वी राजनीति-दर्शन के दोहरेपन का आईना बनकर ही अधिक सामने आते हैं।

इस प्रकार यह जो अन्यार्थकता वाला दर्शन है, वह फूको के सत्ता - वर्चस्वी व दमित-अन्यों के आपसी रिश्तों का परिचायक हो जाता है। सईद इसमें एक बात यह जोड़ देते हैं कि यह जो सत्ता- वर्चस्वी, संरचनाओं का दमित- अन्यों से रिश्ता बनता है, वह मूलतः पश्चिम और पूर्व का विमर्श प्रतीत होता है और जो केवल सत्ता-संबंधों का मामला ही नहीं है, अपितु उससे कहीं अधिक गहरा सांस्कृतिक मामला भी है। पश्चिमी मानसिकता के भीतर एक बद्धमूल संस्कृति चेतना यह बैठी है कि वही श्रेष्ठ है और अश्रेष्ठ, असभ्य व बर्बर पूर्व पर शासन करने का अधिकार उसे प्रकृति प्रदत्त या जातीय-रक्त-वर्ण संघटना के आधार पर मिला है।

अब भीतर हम इन वैश्विक राजनीति - दर्शनों के बरक्स भारत की स्थिति को देखना-जानना चाहें तो दुनिया के सबसे बड़े पूर्व उपनिवेश के रूप में वह दमित 'अन्यों' का सबसे बड़ा प्रतिनिधि है। यह कोई सांयोगिक घटना नहीं है कि इसी रूप में वह तृतीय विश्व और गुटनिरपेक्ष तीसरे विश्वमोर्चों का केंद्रीय या मुख्य घटक है। इससे यह भी रेखांकित और स्पष्ट होता है कि इस अहम् दमित-अन्य की मुख्य राजनैतिक- भूमिका आज भी साम्राज्यवाद के नए रूपों के प्रतिरोध या विरोध द्वारा आत्मदमन से मुक्ति की चेष्टा में निहित हैं, परंतु इसके लिए उसे पहले अपने उन स्वीकृत - आरोपित या आत्म-आरोपित-औपनिवेशिक निर्मितियों वाले दर्शनों-विमर्शों से छुटकारा पाना होगा, जो उसे अपने ही, वास्तविक ज़मीनी राजनीति दर्शनों के आत्मदमन की ओर ले जाते हैं। इस महत्त्वपूर्ण पहलू को ठीक से आत्मसात् करना हमारे लिए निरंतर इस कदर ज़रूरी होता जा रहा है कि इसके बिना संभवतः हम शीघ्र ही आत्मविनाश के कगार पर भी पहुंच सकते हैं। हमें इसके लिए गांधीवाद के मूल-प्रस्ताव को पकड़ना होगा, गांधी के लिए साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष राष्ट्र के विकास और प्रगति से संबद्ध अन्य सभी मसलों - मामलों से ऊपर, शीर्ष पर था। इसीलिए वे दलितों-हरिजनों, छोटे किसानों, शिल्पकारों-दस्तकारों, मज़दूरों, स्त्रियों आदि की दुरवस्था से संबद्ध मसायल को साम्राज्यवाद-विरोधी जद्दोजहद की प्रक्रिया के तहत और उससे जन्म लेने वाली स्थितियों व दिशाओं के द्वारा हल करने की बात करते थे। दूसरी ओर वामपंथी, आंबेडकरवादी, हिंदू महत्त्ववादी या मुस्लिमलीगी-राजनीति-विमर्श जाति-संप्रदाय वर्गगत आग्रहों की वरीयता मायने रखते हुए अपने सामाजिक अंतर्विभाजनों से उपजे अंतर्विरोधों को गहराते व परोक्ष रूप में साम्राज्यवाद को मज़बूती देते अपना काम कर रहे थे। तो, ये दो दिशाएं थीं, जो एक-दूसरे के उलट और विरोध में जाती थीं। गांधी का मानना और समझना यह था कि हमारे सामाजिक अंतर्विभाजनों और अंतर्विरोधों को गहराने का काम साम्राज्यवाद करता है। वह हमें अपने इन मसायल में उलझा कर अपने वर्चस्व और शोषण- दोहन के खेल को धूर्ततापूर्ण या कूटनीतिक रूप में खेलते रहने में कामयाब हो जाता है। गांधी की यह बुनियादी अंतर्दृष्टि मूलतः साम्राज्यवाद - विरोध के संदर्भ में है, हालांकि आज स्वयं गांधीवाद हमारा ही दमित-अन्य बनकर रह गया है और दूसरे आत्मविभाजक विमर्श नुमाया हो रहे हैं। इसीलिए वैश्विक संदर्भ में 'नव' साम्राज्यवादी वर्चस्व को चुनौती देने और उस प्रतिरोध के भीतर से आत्मविकास के मार्ग खोजने की संभावनाएं धूमिल हो गई हैं।

विमर्शात्मक तल पर अपनी औपनिवेशिक निर्मितियों को समझने के लिए एक दिलचस्प उदाहरण पर्याप्त होगा। विश्व में पिछली सदी में साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांति - भारत से आरंभ होकर दक्षिण अफ्रीका तक - जैसे ही अपना कार्य आंशिक रूप में समाप्त या पूरा करती हैं, वैसे ही एक-एक करके समाजवादी क्रांतियां अपनी अर्थवत्ता खोकर गिरती या समझौतापरस्त होती दिखाई देती हैं। इसे आप कोई सांयोगिक तुलना मत समझें, इसके लिए इतिहास का पिछली सदी का सबसे बड़ा ग़लत फ़ैसला काम कर रहा है। रूस की बोल्शेविक क्रांति के बाद लेनिन के सामने यह सवाल था कि समाजवादी क्रांतियों को गहराने के लिए समाजवादी एजेंडे में तरजीह किसे दी जाए- साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्षों को या वर्ग संघर्षों को? फ़ैसला दूसरे विकल्प के पक्ष में गया और समाजवादी क्रांतियां अपनी आत्मा को उपलब्ध करने की संभावना से चूक गईं। नतीजतन गांधी वामपंथियों को उपर्युक्त (लेनिनवादी) भूल न करने की सलाह अक्सर ही देते दिखाई देते हैं। लेकिन भारतीय वामपंथ गांधी के बजाय लेनिनवादी या माओवादी वैचारिक औपनिवेशिकता की सुविधा में शरण लेना अधिक पसंद करता है। यूरो- अमेरिका आधुनिकतावाद से प्रभावित विमर्शों में वह क्रांतिकारी संभावना कभी नहीं रही, जो भारतीय वाम में थी, अतः शेष औपनिवेशिक निर्मितियों की तुलना वाम का विघटन हमारी चिंता का विषय अधिक बनता है।

तथापि अब नवसाम्राज्यवाद की चुनौतियों के बरक्स हम गांधीवाद के पुनर्विकास पर एक साझे कार्यक्रम के तहत सहमत होने के क़रीब आ गए हैं। विभाजनवाद आज नवसाम्राज्यवादी पश्चिम को आतंकवाद के रूप में भारी पड़ रहा है। अतः भारत- पाकिस्तान को क़रीब लाने की भूमिका बनाई जा रही है। साहित्य-चिंतन के तल पर यह भक्ति की साझी विरासत को और गहराने का समय प्रतीत होता है - सूफ़ियों संतों के एक मंच पर उपस्थिति होने के पुनर्प्रायोजन जैसा। इस तरह भारत और इस्लामी मुल्कों के लिए साझा राजनीति-दर्शन के अंतर्विकास की संभावनाएं प्रकट हो सकती हैं, जो नवसाम्राज्यवादी चुनौती का प्रतिरोध करने की बाबत सोचता हुआ अपनी औपनिवेशिक निर्मितियों को निरस्त करने की दिशा में आगे बढ़सकता है।

जनमों के नाते...

–अब्दुलग़फ़्फ़ार

शहाब रोज़ सब्ज़ी का ठेला लेकर आफ़रीन आंटी के घर के सामने खड़ा हो जाता है और घंटों उनकी बालकनी में ताकता रहता है। वो जानता है कि वो अब इस दुनिया में नहीं हैं, कहीं नहीं हैं। अब कभी भी बालकनी में नज़र आने वाली नहीं हैं। फिर भी घंटों उनको बालकनी में निहारता रहता है।

कोई उसे दीवाना कहता है, कोई उसे पागलसमझता है। सब्ज़ी खरीदने वाले उसके ठेला पर आते हैं। जैसे मन करता है, वैसी बीन-चुन कर ले जाते हैं। जितना पैसा मन करता है, उतना दे जाते हैं। वो ग्राहकों के किसी बात पर एतराज़ नहीं करता। किसी से बक-झक नहीं करता, किसी से मोल-जोलनहीं करता। सब लोग उसकी दीवानगी पर हैरान रहते हैं। हंसते हैं, मुस्कराते हैं, सब्ज़ी लेते हैं और चले जाते हैं, और उसका ध्यान बालकनी में ही अटका रहता है। जब सारी सब्ज़ियां बिक जाती हैं, तब वो ठेला लेकर वापस जाता है। यह रोज़ का मामूलहै।

अंजुम आंटी से शहाब का कैसा रिश्ता है, कैसी मुहब्बत है, यह मैं आप को बताता हूँ। कमालअंजुम, आफ़रीन के शौहर थे, जो जवानी में ही उन्हें छोड़कर चलबसे थे। वो अपने बहू-बेटे और पोता-पोती के साथ इस मुहल्ले में चार सालसे रहती थीं। उनका पूरा नाम आफ़रीन अंजुम था। चलिए मैं आप को फ्लैश बैक में लिये चलता हूँ।

आफ़रीन अंजुम का बेटा शहबाज़ अंजुम और बहू नाज़िश अंजुम दोनों जॉब करते हैं। उनके दो बच्चे हैं, एक बेटा सामेह और एक बेटी सबीहा। घर पर खाना बनाने, झाड़ू-पोछा लगाने, बर्तन और कपड़े धोने के लिए मेड आती है। बाक़ी घर की देखभालकरने, सब्ज़ी वाले से सब्ज़ी लेने, कुरियर वाले से सामान रिसीव करने की ज़िम्मेदारी आफ़रीन अंजुम की है।

एक दिन वो बालकनी से कपड़े उतार रही थीं कि एक सब्ज़ी वाला ठेला लेकर उधर से गुज़रता हुआ नज़र आया। आनलाइन मंगाई गई सब्ज़ीयों की गुणवत्ता कभी-कभी इतनी खराब होती है कि उन्हें पकाने का मन नहीं करता। इसलिए उन्होंने सब्ज़ी वाले को आवाज़ दी– 'अरे सब्ज़ी वाले! ज़रा रुको।'

उनकी आवाज़ सुनकर सब्ज़ी वाला रुक गया। उसने दायें-बायें गर्दन घुमा कर देखा। उसकी समझ में नहीं आया कि आवाज़ किधर से आयी है। फिर सिर उठाकर ऊपर बालकनी की तरफ़ देखा। जहाँ से एक बूढ़ी औरत हाथ के इशारे से उसे बुला रही थीं। वो ठेला लेकर उधर गया, तबतक आफ़रीन अंजुम सीढ़ियों से नीचे उतर आयी थीं। उन्होंने सब्ज़ी वाले से पूछा - ' बेटा तुम्हारा नाम क्या है? '

'शहाब।'

'क्या तुम रोज़ इधर से गुज़रते हो ? '

'दो दिन से गुज़र रहा हूँ। '

'क्या अब रोज़ आओगे? '

'हाँ... आप लोग बुलाएंगे, तो ज़रूर आऊंगा।'

'ठीक है। तुम रोज़ आया करो। मैं तुमसे रोज़ सब्ज़ी लिया करूंगी। हाँ... रोज़ ताज़ी सब्ज़ियां ही लेकर आना। '

' ठीक है, आंटी जी। मैं रोज़ ताज़ी सब्ज़ियां ही लेकर आऊंगा।'

उसके बाद आफ़रीन ने अपने मनपसंद की सब्ज़ियां लीं, पैसे दिए, और ऊपर अपने कमरे में चली गईं।

उसके बाद से शहाब रोज़ उस गली से ठेला लेकर गुज़रने लगा और देखते ही देखते कई लोग उससे सब्ज़ियां लेने लगे। कई स्थायी ग्राहक बन गए जो महीने में पेमेंट करने लगे। कुछ लोग उससे कोई ख़ास सब्ज़ी या फललाने की फ़रमाइश करते, तो वह अगले दिन ला देता। रोज़ाना आफ़रीन ही नहीं, और भी कई औरतें उसका इंतज़ार करतीं। शायद ही कोई ऐसा दिन होता, जिस दिन आफ़रीन उससे सब्ज़ियां न लेतीं। उसका कारोबार चलनिकला। इसके लिए वो आफ़रीन आंटी का शुक्रगुज़ार था। उनसे अक्सर कहता - ' आंटी जी! यह सब आप की बोहनी की बरकत है।'

शहाब को आफ़रीन आंटी से इतना लगाव हो गया था कि वो जब कभी अपने गांव जाता तो उनके लिए गांव से कोल्हू का पेरा हुआ शुद्ध सरसों का तेलऔर अपनी अम्माँ के हाथ की दही से निकाली गई शुद्ध देसी घी ज़रूर लेकर आता। ये दोनों चीज़ें आफ़रीन का बेटा शहबाज़ अंजुम और बहू नाज़िश अंजुम, खूब़ पसंद करते और सामान के असली होने का सर्टिफिकेट देते हुए कहते - ' इस शहर में तो आजकलहर चीज़ नक़ली मिलने लगी है, क्या दूध, क्या दही, क्या पनीर और क्या घी!'

एक दिन सुबह-सुबह शहाब ने आफ़रीन के घर की घंटी बजाई। आफ़रीन ने बालकनी से नीचे देखा तो गेट पर शहाब खड़ा था। उसके हाथ में मिठाई का डिब्बा था। वो नीचे उतरीं और गेट खोला तो शहाब ने सलाम करते हुए मिठाई का डिब्बा उनकी तरफ़ बढ़ा दिया।

आफ़रीन ने कहा - ' यह किस खुशी में बेटा ? '

'आंटी जी! आप की दुआ से चौराहे पर एक छोटी-सी दुकान लेकर मैं सब्ज़ी लगा रहा हूँ।'

'तो क्या अब इधर ठेला लेकर नहीं आओगे?'

'आऊंगा। मैं हमेशा की तरह इधर आता रहूंगा। दुकान पर मेरा छोटा भाई बैठेगा। उसे मैंने गांव से बुला लिया है।'

'तब तो अच्छी बात है। खूब़ तरक़्क़ी करो। अल्लाह पाक तुम्हारे कारोबार में, दिन-दूनी रात-चौगुनी बरकत अता फरमाए।'

शहाब ने कहा - 'आमीन।'

शहाब उन्हें मां की तरह मानता था। वो भी उसे बेटे की तरह मानती थीं। वक़्त-ज़रूरत उसकी पैसों से मदद कर देती थीं। शहाब भी उनका पूरा ख्य़ालरखता था। कभी बाज़ार से दवाई लानी हो, या चश्मा ठीक कराना हो, इमर्जेंसी लाइट, टॉर्च या छाता बनवाना हो, तो वो बनवाकर ला देता था।

एक दिन बहू-बेटे आफिस में थे और पोता-पोती स्कूलमें, तभी अचानक आफ़रीन आंटी की तबीयत ज़्यादा खऱाब होने लगी। दस्त रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। उन्होंने फोन कर के शहाब को बुलाया। शहाब आया, आफ़रीन आंटी को उठाकर ले गया और हॉस्पिटलमें भर्ती कराया। चार घंटे बाद जब उनकी तबीयत संभली, तब उन्होंने बेटा और बहू को खब़र दी। दो घंटे बाद बेटा और बहू आए तो हॉस्पिटलका बिलअदा किया और अपनी अम्मी जान को घर ले आए।

एक दिन आफ़रीन आंटी का पोता सामेह सीढ़ियों से नीचे गिर पड़ा। उसके पैर में मोंच आ गयी। एक्स-रे कराया गया तो फ्रेक्चर नहीं था, लेकिन सूजन और दर्द जाने का नाम नहीं ले रहा था। शहाब ने आंटी जी से कहा - 'मेरे गाँव में मोंच ठीक करने वाले एक हकीम दादा हैं। आप कहें तो मैं उनसे दिखा लाऊँ!'

आफ़रीन आंटी ने कहा-'ले जाओ। दिखा लाओ। क्या पता उनसे ठीक हो जाए!'

शहाब उनके पोते सामेह को गांव ले गया। सचमुच हकीम दादा के हाथ में जादू था। उनके पांच मिनट के मालिश और हिकमत से बच्चे का पैर ठीक हो गया। शहबाज़ और नाज़िश, जिन्हें यक़ीन ही नहीं था कि उनका बच्चा गाँव के किसी हकीम से ठीक होगा, आश्चर्यचकित और हैरान थे। उस दिन से शहाब उस परिवार का चहेता बन गया।

कुछ दिन बाद शहाब अपने गांव गया। उसकी अम्माँ बहुत बीमार थीं। गांव के डॉक्टरों से वो ठीक नहीं हो रही थीं। शहाब उन्हें लेकर अपने नज़दीकी शहर गया। वहां डॉक्टरों ने बताया - 'इनके दिलकी नसों में चर्बी जमा हो गई है। उसे निकालने के लिए एंजियोप्लास्टी करनी पड़ेगी। स्टेंट डालना पड़ेगा। दो लाख रुपए का खर्च़ आएगा।'

शहाब दो लाख का खर्च़ सुनकर घबरा गया। तत्कालउसके पास उतने पैसे नहीं थे। इसलिए वो अम्माँ को लेकर घर आ गया।

बाप तो थे नहीं, उसने अपने सगे चाचा अब्दुलहमीद से पैसे मांगे। चाचा ने कहा - 'बेटा! मेरे पास होता, तो ज़रूर देता। जो पैसे थे, सब तुम्हारी चाची के ईलाज में खर्च़ हो गए।'

फिर गांव की फूफी के पास गया। उन्होंने कहा - 'हज़ार-पांच-सौ की बात होती तो मैं इंतज़ाम कर सकती थी। उतने पैसे मेरे पास कहाँ से आएंगे!'

फिर अपने जिगरी दोस्त एकराम के पास गया। उसने कहा - 'पैसे तो थे, लेकिन बुलेट मोटरसाइकिलखऱीद ली। देखो तुम्हारे सामने ही खड़ी है।'

फिर गांव के साहुकार लक्ष्मी साह के पास गया और सूद पर पैसे मांगे। उन्होंने ने कहा - 'देखो बेटा! बिना ज़मीन या जेवर गिरवी रखे, मैं पैसे नहीं देता, और तुम्हारे पास तो कुछ है नहीं। इसलिए मुझे तो क्षमा ही करो।'

बेचारा यतीम, थक हार कर घर बैठ गया और अपनी क़िस्मत को कोसने लगा। अम्माँ को इस हालत में छोड़ कर शहर जाने का दिलतो नहीं कर रहा था, लेकिन रोज़ी-रोटी का सवालथा, इसलिए शहर आ गया।

दस दिन बाद शहाब जब आफ़रीन आंटी के पास पहुंचा तो उन्होंने पूछा - 'शहाब! कहां थे इतने दिन?'

'गांव गया था। अम्माँ बहुत बीमार हैं। डॉक्टर कह रहे हैं कि उनके दिलमें स्टेंट डालना पड़ेगा। दो लाख का खर्च़ आएगा।'

'ओह... यह तो बेहद अफ़सोसनाक है। दो लाख रुपए हैं तुम्हारे पास?'

'नहीं। मेरे पास सिर्फ़ बीस हज़ार तक हैं। इसीलिए मैं उन्हें वापस घर ले आया।'

आफ़रीन फ़िक्रमंद हो गई। उन्होंने शहाब से सब्ज़ी खरीदी और कहा - 'फ़िक्र न करो। अल्लाह पाक पर भरोसा रखो। वो ज़रूर कोई न कोई रास्ता निकालेगा।'

रात में जब बेटे-बहु आफिस से घर आए तो आफ़रीन ने उनसे शहाब का दुख सुनाते हुए कहा - 'बेटा! सदक़ा-ज़कात ऐसे ही ज़रुरतमंद लोगों को देना चाहिए। अगर हो सके तो उसकी मदद कर दो।'

शहबाज़ ने कहा - 'अम्मी जान ! फ़िलहालतो सिर्फ़ पचास हज़ार का इंतज़ाम हो सकता है।'

आफ़रीन ने कहा - 'बेटा! मेरे ज़ेवरात बेचकर उस ग़रीब की जान बचा लो। अल्लाह पाक इसका अङ्गा हमारे बच्चों को देगा।'

बहू नाज़िश ने नाराज़ होते हुए कहा - 'अम्मी जान ! एक सब्ज़ी बेचने वाले से आपको इतनी हमदर्दी है कि आप अपने ज़ेवरात तक बेचने को तैयार हैं!'

'हाँ बहू। यह खुदा का हुक्म है। वो कुरआन पाक में कहता है - 'तुम ग़रीबों, मिस्कीनों, मजबूरों, लाचारों के ज़रिए मुझे क़र्ज़ दो। इसका कई गुना बदला मैं तुम्हें आखरि़त में अता करुंगा।'

नाज़िश - 'पर! अपने पास एक्स्ट्रा पैसे होने भी तो चाहिए!'

शहबाज़ ने नाज़िश को बीच में टोकते हुए कहा - नाज़िश! हमें अम्मी जान की बातों पर ग़ौर करना चाहिए। यह भी तो सोचो, शहाब हमारे कितने काम आता है! '

अगले दिन जब शहाब सब्ज़ी का ठेला लेकर आया तो आफ़रीन ने उसे अपने घर के अंदर बुलाकर रुपये देते हुए कहा - ' यह लो। पूरे दो लाख हैं। अपनी अम्माँ को ले जाकर अभी हॉस्पिटलमें भर्ती कराओ। '

शहाब पैसे हाथ में लेकर फफक-फफक कर रोने लगा - ' आंटी जी! मैं आप लोगों के इस एहसान का बदला कैसे चुकाऊंगा! '

' कोई एहसान नहीं है यह। जाओ! अपनी अम्माँ का ईलाज कराओ। नहीं तो मैं मारूँगी। '

शहाब पैसे लेकर खुशी-खुशी चला गया।

अम्माँ को ठीक होने में लगभग एक महीना लग गया। उसके बाद जब शहाब ठेला लेकर अंजुम आंटी के दरवाज़े पर पहुंचा तो घर बंद मिला। उसने अगल-बग़लके लोगों से दरयाफ़्त किया तो पता चला कि आफ़रीन आंटी का इंत्क़ालतो एक हफ़्ता पहले हो गया था। उनके परिवार वाले आखरिी रसूमात अदा कर के अभी गांव से लौटे नहीं हैं।

यह सुनकर शहाब वहीं ज़मीन पर बैठ गया और फूट-फूट कर रोने लगा। अगल-बग़लके मर्द और औरतें इकठ्ठा होकर उसे चुप कराने लगे। उसने ठेला वहीं से वापस कर लिया और आगे नहीं जाने का फ़ैसला किया।

चार दिन बाद जब शहबाज़ और नाज़िश गाँव से लौटे, जिन्हें वो भैया-भाभी कहता था, तो वो उनके पास जाकर रोने लगा। शहबाज़ से रोते हुए पूछा - ' भैया! आखरि हुआ क्या था आंटी जी को, जो अचानक... और इतनी जल्दी चलबसीं'

शहबाज़ ने कहा - ' उन्हें लीवर कैंसर था। जिसका पता पहले नहीं चलसका। अचानक से उल्टी होने लगी तो हॉस्पिटलले गया। वहां बहुत सारे टेस्ट हुए। उसके बाद पता चला कि उन्हें लीवर कैंसर है।'

नाज़िश ने कहा - ' जब खुदा को यही मंज़ूर था, तो इंसान क्या कर सकता है! अब तो हम लोग उनकी मग़फ़िरत की दुआ ही कर सकते हैं। अल्लाह पाक उनकी मग़फ़िरत फ़रमाए और उन्हें जन्नतुलफ़िरदौस में आला मुक़ाम अता फरमाए। '

शहबाज़ और शहाब ने कहा - ' आमीन। '

तो ये थी शहाब और आफ़रीन आंटी की कहानी।

कहीं तो ये दिलकभी मिलनहीं पाते...

कहीं से निकलआए, जनमों के नाते...

दूबे टोला, एक्सिस बैंक गली, वार्ड नं 26, बगहा - 1, पोस्ट - बगहा

पिन कोड - 845101, ज़िला - पश्चिम चंपारण (बिहार)

मोबाइलः 9122437788

बापू

बंशीधर षडंगी

बुद्ध तुम्हारी बातें हमने सुनी हैं
घर-बार राजपद बीबी बेटा
माता पिता सब छोड़ कर
तुम सन्यासी बने
पीछे जिनको छोड़ कर चले गए
उनके बारे में कभी सोचा है क्या
बल्कि केशहीन होकर वापस आने के बाद सबसे प्रख्यात हुए हो
मगर बापू को हमने
अभी अभी देखा है
वो किसी को भी नहीं छोड़े हैं
दीन दुःखी दरिद्रों को
अपना बनाने में ही
सारा जीवन बीता दिया
कभी ट्रेन से फेंके जाने पर
दांतों को तोडना तो
फिर कभी हक़ या दंगा पीड़ितों के लिए
दिन रात भूखे पेट रहते थे और
अनशन भी किए थे
गौतम तुम्हारे शब्दों के
उच्चारण में कैसी ध्वनि थी क्या पता
कि कुछ लोग तुम्हारा
अनुसरण करने लगे
मगर गांधी बूढ़े के खुले बदन में
हाथ की लकड़ी में
किसी को मारना नहीं था
उनकी बातों में, शब्दों के उच्चारण में कोई ध्वनि नहीं थी
सीधी बात कपट किए बिना
बोल देते
शायद उनके वाक्य में
अपनापन घुला हुआ था
मृत्यु शय्या पर बापू के
किसी के लिए भी कोई असूया नहीं था जैसे वही हैं क्षमा करने के
आखिरी अवतार ।

उड़िया से अनुवाद : पारमिता षड़ंगी, मुम्बई

मो. 9867113113

बालको के सामुदायिक विकास पहल द्वारा कृषि में नवाचार को मिला बढ़ावा

ऑटोमेटेड वेदर एंड वाटर स्टेशन की स्थापना

वेदांता समूह की कंपनी भारत एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (बालको) ने स्मार्ट और सस्टेनेबल कृषि को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। अपने प्रमुख सीएसआर प्रोजेक्ट 'मोर जल मोर माटी' के अंतर्गत कंपनी ने एक ऑटोमेटेड वेदर एंड वाटर स्टेशन (एडब्ल्यूडब्ल्यूएस) स्थापित किया है। पायलट चरण में यह स्टेशन पांच किलोमीटर के दायरे में चयनित गांवों के 200 से अधिक किसानों को कवर कर रहा है। भविष्य में इसे विस्तार देते हुए और अधिक किसानों तक पहुंचाने की योजना है।

यह भारत सरकार की डिजिटल इंडिया पहल के अनुरूप है, जो डिजिटल बुनियादी ढांचे के विस्तार के साथ-साथ अंतिम छोर तक सशक्तिकरण प्रदान करती है। जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन और तकनीक कृषि पर गहरा प्रभाव डाल रहे हैं, वैसे-वैसे आधुनिक तकनीकों तक पहुंच किसानों के लिए पानी और बीज जितनी ही जरूरी होती जा रही है। इस प्रकार की सूचना एवं संचार तकनीक (आईसीटी) आधारित समाधान जैसे कि एडब्ल्यूडब्ल्यूएस इस डिजिटल खाई को कम कर रहा है और सीएसआर प्रयास इस बदलाव को गति देने में अहम भूमिका निभा रहा हैं। बालको द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में इन स्मार्ट समाधानों को एकीकृत करने से कृषि-बुद्धिमत्ता का प्रवाह मजबूत हो रहा है और जलवायु अनुकूल खेती को बढ़ावा मिल रहा है।

एडब्ल्यूडब्ल्यूएस के माध्यम से किसानों को स्थानीय स्तर पर मौसम की पूर्वानुमान और कृषि परामर्श की जानकारी प्राप्त होती है। उन्हें सिंचाई की योजना बनाने, बुवाई और कटाई का समय तय करने और मौसम की घटनाओं के लिए तैयारी करने में सहायता मिली है। यह जानकारी रीयल टाइम में ग्राम विकास समितियों, व्हाट्सएप चैनलों और जमीनी जागरूकता अभियान के माध्यम से प्रदान की जाती है। साथ ही सिस्टम मिट्टी की नमी, कीट और रोग पूर्वानुमान तथा फसल सुरक्षा रणनीतियों की जानकारी भी देता है। इससे किसान नुकसान को कम, पैदावार की रक्षा और उत्पादकता बढ़ा सकेंगे। इस पहल के माध्यम से बालको ग्रामीण कृषि समुदायों में आधुनिक तकनीक को बढ़ावा दे रहा है, साथ ही उन्हें जलवायु चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बना रहा है।

बालको के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं निदेशक राजेश कुमार ने कहा कि बालको में हम तकनीक को औद्योगिक उत्कृष्टता के साथ-साथ समुदाय के सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली माध्यम मानते हैं। 'मोर जल मोर माटी' परियोजना के तहत एडब्ल्यूडब्ल्यूएस की स्थापना किसानों के लिए सटीक जानकारी के माध्यम से कृषि को बेहतर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। एक डिजिटल-प्रथम संगठन के रूप में हम नवाचार को अपनी सामाजिक पहल में एकीकृत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं ताकि हम एक सक्षम और भविष्य के लिए बेहतर समुदाय का निर्माण कर सकें।

'मोर जल मोर माटी' परियोजना के तहत बालको किसानों को सतही जल प्रबंधन के बेहतर उपयोग, सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि और बहुफसली खेती को बढ़ावा देने जैसे उपायों के माध्यम से सहयोग प्रदान कर रहा है, ताकि वे वर्षा पर निर्भरता को कम कर सकें। इसके साथ ही यह परियोजना लाख की खेती, पशुपालन, बागवानी और गैर-वनोपज जैसे नए आय के स्रोतों से भी किसानों को जोड़ रही है जिससे उन्हें सालभर आय मिल सके। इस परियोजना के अंतर्गत वेदांता एग्रीकल्चर एंड रिसोर्स सेंटर की स्थापना भी की गई है, जो प्रशिक्षण और इनपुट सपोर्ट के माध्यम से इन प्रयासों को सशक्त बना रहा है। अब तक यह परियोजना 5700 से अधिक किसानों को लाभ पहुंचा चुका है और सस्टेनेबल कृषि प्रथाओं व आर्थिक विकास को बढ़ावा दे रही है। ●

युवा वैज्ञानिक डॉ. राहुल को सीएम ने किया सम्मानित

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ के 36वें स्थापना दिवस एवं वैज्ञानिक सम्मान समारोह का आयोजन आज भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के ऑडिटोरियम में भव्य रूप से संपन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र, वाराणसी में कार्यरत प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा सम्मानित किया गया।

पुरस्कार स्वरूप डॉ. सिंह को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं रू. 11,000 की सम्मान राशि प्रदान की गई। इससे पूर्व वे महायोगी गुरु गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र, चौक माफी पीपीगंज, गोरखपुर में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। वहां उन्होंने अपने परिश्रम, प्रतिबद्धता और नवाचार से केंद्र की दिशा और दशा बदल दी थी।

डॉ. राहुल ने न केवल कृषि उत्पादों के प्रचार-प्रसार को बल दिया, बल्कि किसानों को संगठित करने के लिए वाराणसी और गोरखपुर में कृषक उत्पादक कंपनी (FPO) की स्थापना भी करवाई, जिससे हजारों किसानों को लाभ मिला।

डॉ. सिंह को इससे पूर्व बेस्ट के.वी.के. वैज्ञानिक पुरस्कार, आईसीएआर पुरस्कार तथा G-20 सम्मेलन में योगदान हेतु प्रशस्ति पत्र भी मिल चुके हैं। उनके नाम तीन पेटेंट, 70 से अधिक शोध पत्र, चार पुस्तकें एवं सैकड़ों लेख प्रकाशित हो चुके हैं। वे 10 से अधिक अनुसंधान परियोजनाओं में भी अपनी भागीदारी निभा चुके हैं।

डॉ. सिंह ने अपने नेतृत्व में कृषि विज्ञान केंद्र, वाराणसी में सैकड़ों छात्रों का RAWE कार्यक्रम भी सफलतापूर्वक संपन्न कराया है। अयोध्या के आचार्य नरेंद्र देव विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की पढ़ाई के दौरान वे गोल्ड मेडलिस्ट रहे और पीएच.डी. के दौरान विज्ञान एवं तकनीकी विभाग, भारत सरकार से INSPIRE फेलोशिप प्राप्त कर चुके हैं।

इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र, वाराणसी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नवीन सिंह, डॉ. मनीष पांडेय, डॉ. अमितेश, डॉ. प्रतीक्षा सिंह, डॉ. श्रीप्रकाश सिंह, पूजा सिंह सहित राणा पीयूष, अरविंद, शिवानी, देवमणि एवं अशोक समेत अनेक किसान भाइयों ने डॉ. राहुल को शुभकामनाएं दीं और इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त की।

सुरक्षित तथा स्मार्ट माइनिंग प्रैक्टिसेज़' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

तकनीकी संवाद, ज्ञान-विनिमय तथा उद्योग एवं अकादमिक जगत के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से WCL, VNIT नागपुर के माइनिंग इंजीनियरिंग विभाग तथा खान सुरक्षा महानिदेशालय ने संयुक्त रूप से दिनांक 26 जुलाई 2025 को 'सुरक्षित तथा स्मार्ट माइनिंग प्रैक्टिसेज़' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया । कार्यक्रम में ण्थ्, न्म्ठ तथा उउशए के वरिष्ठ अधिकारियों एवं विशेषज्ञों ने मिलकर खनन क्षेत्र से जुड़ी प्रमुख तकनीकी एवं भू-तकनीकी चुनौतियों पर गहन विचार-मंथन किया। कार्यशाला में ओपन कास्ट खदानों की स्लोप डिजाईन, निगरानी तथा दीर्घकालिक भू-तकनीकी सुरक्षा 'बेंचों तथा डंप ढलानों की स्थिरता' एवं भूमिगत खनन में स्थायित्व बनाए रखने के लिए टिकाऊ सपोर्ट सिस्टम और पेस्ट-फिलिंग तकनीक की भूमिका से संबंधित 'ग्राउंड कंट्रोल पर विशेष ध्यान के साथ पेस्ट-फिलिंग तकनीक' जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सत्र आयोजित किए गए । इस दौरान सैटेलाइट आधारित स्लोप मॉनिटरिंग पर एक विशेष प्रस्तुति भी दी गई ।कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में WCL के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक जय प्रकाश द्विवेदी, खान सुरक्षा महानिदेशालय के उप महानिदेशक, पश्चिमी क्षेत्र रामावतार मीणा, VNIT, नागपुर के निदेशक पी. एल. पटेल ने अपने विचार साझा किए ।

परिधि ने स्कूल बदलकर लिया एनटीपीसी कोलडैम के बालिका सशक्तिकरण अभियान शिविर में भाग

एनटीपीसी लिमिटेड की नैगम सामाजिक दायित्व गतिविधियों के अंतर्गत पूरे देश में फैले एनटीपीसी स्टेशनों में हर साल बालिका सशक्तिकरण अभियान चलाया जाता है। इस अभियान के तहत परियोजना प्रभावित क्षेत्र के सरकारी स्कूल की लड़कियां एक महीने तक एनटीपीसी परिसर में रहकर पढ़ाई, खेलकूद, व अन्य रचनात्मक गतिविधियाँ में भाग लेती है।

एनटीपीसी कोलडैम में 12 जुलाई से 8 अगस्त 2025 तक चल रहे बालिका सशक्तिकरण अभियान के इस सत्र में सैकड़ों बेटियां अपने भविष्य को आकार दे रही हैं। इसी समूह में एक लड़की ऐसी भी हैं, जिसने इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपने गांव से स्कूल स्थानांतरित किया।

परिधि शर्मा ने सारी घाट गाँव से चाम्यों गाँव के स्कूल में दाखिला लिया है, परिधि बताती है की उनकी बुआ निशा ठाकुर एनटीपीसी के धनवन्तरी अस्पताल में नर्स का काम करती है व हर साल बालिका सशक्तिकरण अभियान से बालिकाओं के जीवन में अमूल्य बदलाव होते देखती है, उन्ही के कहने पर मैंने कक्षा 5 में यहा के स्कूल में दाखिला लिया व अब में कक्षा 6 में आने के बाद एनटीपीसी कोलडैम के बालिका सशक्तिकरण अभियान में आई हूँ।

इनके इस निर्णय ने यह स्पष्ट कर दिया है कि एनटीपीसी कोलडैम में यह अभियान अब महज़ एक प्रशिक्षण शिविर नहीं, बल्कि लड़कियों के लिए आत्मविकास और जीवन निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण मंच बन चुका है। इस वर्ष इस कार्यक्रम में कुल 47 बच्चियाँ हिस्सा ले रही हैं हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी बच्चियाँ, शिक्षा, योग, फिटनेस, जीवन कौशल सत्र, रचनात्मक गतिविधियाँ और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में शामिल हो रही है।

एनटीपीसी कोलडैम में बालिका सशक्तिकरण अभियान की शुरुआत 2019 में की गई थी और तब से यह कार्यक्रम लगभग 200 से अधिक ग्रामीण बच्चियों के जीवन में बदलाव ला चुका है।

परिधि कहती हैं, 'जब मैं पहली बार यहां आई थी, तो किसी से बात करने में भी डर लगता था। लेकिन अब, मैं न सिर्फ पढ़ाई करती हूं, बल्कि पेंटिंग, डांस, और मंच पर बोलना भी मुझे अच्छा लगने लगा है।' वह बताती है, 'यहां आकर मैं और भी ज़्यादा आत्मविश्वासी हो गई हूं। अब लगता है कि मैं कुछ भी कर सकती हूं।'

एनटीपीसी कोलडैम का बालिका सशक्तिकरण अभियान न केवल लड़कियों को आत्मनिर्भर बनने में मदद कर रहा है, बल्कि गांवों में एक सकारात्मक बदलाव की लहर भी ला रहा है। यह अभियान सिर्फ बच्चियों की पढ़ाई तक सीमित नहीं, बल्कि उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास को केंद्र में रखता है। शिविर का समापन आगामी 8 अगस्त को होगा, लेकिन प्रतिभागी बच्चियों के लिए इससे मिली सीखें और अनुभव जीवन भर साथ रहेंगे। ●

एनटीपीसी दर्लिपाली में फ़ैज़ तैय्यब ने संभाला बिजनेस यूनिट हेड का कार्यभार

एनटीपीसी दर्लिपाली में नेतृत्व का एक नया अध्याय शुरू हुआ है, जहाँ फ़ैज़ तैय्यब ने बिजनेस यूनिट हेड के रूप में 10 जुलाई 2025 को कार्यभार संभाल लिया है। इस अवसर पर एक गरिमामय स्वागत समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें उन्हें औपचारिक रूप से पदभार ग्रहण करते हुए सम्मानित किया गया। तैय्यब ने राम भजन मलिक का स्थान लिया है, जिन्हें करीब 10 महीने तक परियोजना प्रमुख के रूप में सेवा देने के बाद अन्यत्र स्थानांतरित किया गया है। अपने कार्यकाल के दौरान मलिक ने यूनिट के संचालन और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।पदभार ग्रहण करने से पूर्व फ़ैज़ तैय्यब एनटीपीसी लारा में चीफ जनरल मैनेजर (ऑपरेशन्स एंड मेंटेनेंस) के पद पर कार्यरत थे। विद्युत उत्पादन और परियोजना प्रबंधन के क्षेत्र में उनके व्यापक अनुभव को देखते हुए, दर्लिपाली यूनिट में उनके नेतृत्व से संचालनात्मक उत्कृष्टता और रणनीतिक प्रगति को नई दिशा मिलने की उम्मीद जताई जा रही है।

विष्णुचंद्र शर्मा के दो लघु उपन्यास

–इला सिंह

(1)

दुःख ही जीवन की कथा रही

'दुःख ही जीवन की कथा रही' प्रथम पृष्ठ पर आए इस एक वाक्य में ही मानो इस लघु उपन्यास का सार रहा।

जीवन में सुख क्या है दुख का अभाव ही न।मगर यह कहाँ सम्भव है कि जीवन दुखों से रहित हो जाए। तो, जीवन चलता है और सुख -दुख भी साथ-साथ चलते हैं।एक सिक्के के दो पहलू जो सदैव साथ भी होंगे और जुदा भी। मगर तराजू के दोनों पलड़ों की तरह,कभी ऊपर कभी नीचे।

'रेखाएँ दुःख की' विष्णुचंद्र शर्मा जी का यह लघु उपन्यास निरंतर सुख और दुख की एक खोज है। एक विवेचन है सुख और दुख का।मुख्यतः उपन्यास जीवन के दुखों पर है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होता है,बस कोई कम कोई ज्यादा।

'रेखाएँ दुःख की' में विपिन उपन्यास का मुख्य पात्र है जो सतत एक खोज में रहता है सुख और दुख की। इंसान के दुख उसे सालते हैं। वह डाक्टर रत्नेश के क्लिनिक पर अक्सर जाता है अपनी आँव, डायबिटीज जैसे रोगों के लिए। वहाँ जब वह अन्य गम्भीर मरीजों को देखता है, गरीब, कमजोर, निराश्रित जिनके जीवन में कोई आशा नहीं, सुख नहीं, तो विपिन दुख से भर जाता है।

कहीं वृद्धावस्था,अकेलापन ही दुख बन गया है।सम्पन्न परिवार, बेटा-बहू-पोता-पोती सब हैं लेकिन सब अपनी व्यस्तताओं में गुम।वृद्ध दो पल किसी से बात करने को तरसते हैं।उनके लिए किसी से दो पल बातचीत ही दो पल का सुख बन जाता है।

विपिन डाक्टर के यहाँ बैठकर मरीजों को आब्जर्ब करता रहता है, कहीं

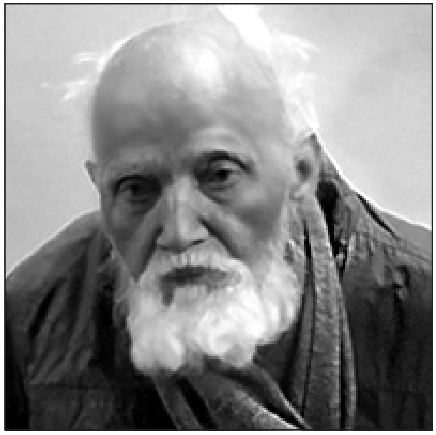

विष्णुचंद्र शर्मा

कोई एक पल,एक कतरा उनके दुखों के बीच सुख का ढूंढता है,जो ढूंढे नहीं मिलता।उसे अपना दुख, तकलीफ,रोग बहुत कम लगने लगता है उन की परेशानियों,तकलीफों के समक्ष। विपिन अत्यंत संवेदनशील है।वह अक्सर संवेदना से भर कोशिश करता है कि उनकी तकलीफ को कम कर सके।कभी बातचीत करके,कभी किसी और जरिए से।

उपन्यास की एक खास बात है यह एक चलचित्र की भाँति पाठकों के समक्ष संवादों के जरिए दृश्य दर दृश्य बढ़ता है। कभी -कभी उलझाव की भी स्थिति उत्पन्न होती है।विष्णुचंद्र जी के लेखन की विशेषता है कि अगर आप उन दृश्यों से जुड़े नहीं रहें और उनकी तारतम्यता अपने मस्तिष्क में बनाए नहीं रखे तो उलझने का खतरा बना रहेगा।

विष्णु जी दृश्य दर दृश्य दिखाते चलते हैं चारों तरफ फैले, बिखरे दुख-तकलीफ को सुख खोजे नहीं मिलता। छिटक कर कभी कुछ सुख झोली में आ गिरता है।जैसे डाक्टर पुनीता के परिवार का घर आना, विपिन की रसोई में चाय बनाना या भावना का अचानक आ जाना।पुराने रिश्तों की मीठी कसक का याद हो आना।

विपिन सोचता है- 'सुख या दुख क्या रात और दिन से एक दूसरे के विरोधी होते हैं। बुद्ध की निगाह दुख पर थी।विपिन एक कतरा सुख खोज रहा है डॉक्टर की डिस्पेंसरी में।रोगियों के जीवन में।क्या रोगी और बेकार आदमी का कोई सुख होता है।'

यह लघु उपन्यास विपिन की सुख की खोज की यात्रा है मानो।जो भी उससे मिला या बिछुड़ गया,उसी के परिप्रेक्ष्य में वह सुख की कल्पना करता है। लगातार मरीजों से मिलना,उनके दुख तकलीफ को महसूस करना,वह सोचता रहता है कि आखिर सुख किसमें है -शरीर, प्यार, भोजन या कहीं और?

डॉ. रत्नेश,उनकी पत्नी डॉ. पुनीता,बेटा अरणव के आगमन पर,उनके हँसते -खेलते परिवार को देख वह उनके सुखी परिवार के विषय में सोचता रहता है।क्या बच्चा,पत्नी, परिवार, घर ही सुख की परिभाषा है?

एक दिन उसका भी परिवार था,पत्नी थी लेकिन पत्नी की मृत्यु के बाद आज वह अकेला है।डाक्टर पुनीता को रसोई में काम करते देख विपिन की स्मृति में अपने सुखों की स्मृतियाँ जाग उठती हैं।

लेकिन सुखी कौन है,सबके अपने कुछ निजी दुख,तकलीफ, तनाव हैं।विपिन जिनको सुखी सोचता है उनका भी कोई न कोई दुख उसके समक्ष आ ही जाता है।

डाक्टर पुनीता के अंदर भी कुछ है जिसे वह कहती नहीं बस पूछकर रह जाती है- 'सुख क्या होता है?'

जिसका अर्थ ही है कि उसके जीवन में भी सबकुछ होने के बावजूद कहीं कुछ छूट गया है उससे।जो असल पुनीता है वह

ज़िंदगी के उलझे तानों -बानों को सुलझाने में कहीं खो गई है।

स्त्रियाँ अपने अंतस में न जाने कितनी परतें रखती हैं और आभासी सुख को बाहरी परत बना जीती जातीं हैं बरस दर बरस।

विष्णुचंद्र शर्मा जी का लेखन जैसे हमारी सीमाओं की परीक्षा कराता है हमसे।किसी जासूसी कथा या फिल्म की भाँति कहानी चलती है।पात्रों का आपसी सम्बन्ध भी धीरे- धीरे खुलता है जब हम कहानी में डूब ऊब करते हैं तो दिमाग की खिड़कियाँ खुलती जाती हैं मानो।

छोटे -छोटे दृश्यों में उपन्यास की कथा फैली है।जहाँ कभी कोई पात्र आता है,अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है और हम जब तक उसे समझते हैं कि दूसरा पात्र बिलकुल अलग कलेवर में सामने आ जाता है। लेकिन अंत आते -आते उन पात्रों के उलझाव भरे रिश्ते स्पष्ट होने लगते हैं आपके समक्ष और एक नई दुनिया से रुबरू हो चौंक जाते हैं आप।

विष्णुचंद्र जी का लेखन बहुत सूक्ष्म अनुभूतियों को लेकर चलता है।जैसे एक पड़ोस की लड़की का घर में बेलपत्र लेने आना और एक छोटे संवाद के जरिए उस लड़की की खुशी का अंदाज कर विपिन का सोचना, ''यह भी एक तरह का 'सुख' है - प्रभु से संवाद करने का सुख।'

वहीं एक घटना और - जहाँ यह स्पष्ट होता है कि जीवन इन्ही सूक्ष्म घटनाओं,छोटे सुख- दुख का गुंजलक ही है।डिस्पेंसरी में एक लड़की का गौर करना कि विपिन को डाक्टर रत्नेश के क्लिनिक पर एक खास तवज्जो मिलती है।डाक्टर की विपिन से बातचीत, चाय पीना यह सब लड़की को विपिन के प्रति एक खास ईर्ष्या भाव से भर देता है। लेकिन वहीं जब वह विपिन के दुख से परिचित होती है तो उसे अहसास होता है कि दूर से जो हम देख रहे हैं जरूरी नहीं कि वह सच ही हो।

उपन्यास में व्याधि,बीमारियों का जिक्र बहुतायत में है।और उन बीमारियों से ग्रस्त मरीजों को देख विपिन निराशा से घिरता रहता है।वह सोचता है-गरीबी रेखा के नीचे जीने वाले व्यक्ति का कोई भरोसा नहीं।

उपन्यास में आए विभिन्न पात्रों की दुख कथा चलचित्र जैसी चलती रहती है जहाँ भावना है अपने सुखों तले दुख गाथा छिपाए। रूपचंद है जो एक उलझा हुआ व्यक्तित्व है,मनोग्रंथियों से ग्रस्त,कुछ-कुछ सनकी साइको टाइप। जो भावना की जिंदगी को अपने हिसाब से,अपने नियंत्रण से चलाना चाहता है।वह दावा प्रेम का करता है लेकिन तरीके अपराधियों जैसे हैं।

वहीं एक बबलू है जो विपिन से कभी जुड़ा था लेकिन आज स्वयं को लगभग समाप्त कर चुका है नशा,गांजा,शराब में। वह एक अच्छा कलाकार, फोटोग्राफर, लेखक है मगर समय ने उसे गलत दिशा में मोड़ दिया।अब वह लौटना चाहता है विपिन से फिर जुड़ना चाहता है।अपनी लिखी पुस्तक उसे दिखाना चाहता है।शंभुदत्त भरसक प्रयास करता है विपिन को उसे क्षमा करने के लिए।

विष्णुचंद्र जी का यहाँ मानवीय पक्ष बहुत उभर कर आता है कि व्यक्ति के कर्मों से घृणा ठीक है लेकिन व्यक्ति को उस गर्त से निकालने का प्रयास कभी खत्म नहीं होना चाहिए।

विपिन और बबलू से जुड़े और भी किरदार सामने आते हैं जिनसे बबलू को जीवन के पाठ सीखने को मिले,जीवन को पटरी पर लाने में सहयोग मिले। आशू बाबू,रमता बाबा,सुमति के स्नेह, देखभाल, सहयोग से बबलू फिर जिंदगी की तरफ लौट रहा था।विपिन को भी उसकी बात सुननी चाहिए।

बबलू के विपिन को पत्र में बबलू की जिंदगी के सुख-दुख, जिंदगी की क्रूरताएँ,उसका नशे के जाल में फंसना,,रमता बाबा के पास रह अपनी खोज,आशू बाबू के द्वारा पैरों का इलाज और जिंदगी में वापस लौटने की जद्दोजहद उभर कर सामने आती है। पत्र में सुमति का जिक्र आता है जिसे कभी विपिन ने ही बचाया था और रमता बाबा के पास भेजा था।

सुमति का व्यक्तित्व धीरे धीरे उभर कर उजाले सा चारों ओर फैल जाता है; जो रमता बाबा के सान्निध्य में स्वस्थ हो सबकी पालनहार बन जाती है। बबलू के लिए तो माँ का रूप ही है मानो।

उसी तरह रमता बाबा और आशू बाबू के चरित्र उपन्यास के उत्तरार्द्ध में स्पष्ट होते हैं।रमता बाबा अपने नाम के अनुरूप ही दीन दुनिया से विमुख रह अपनी साधना में लीन रहते हैं।वह मोह माया से मुक्त रहे सदा। हमेशा घर,परिवार, माँ,पत्नी से भागते रहे।नृत्य उस्ताद होने के बाबजूद वह कभी किसी के समक्ष नृत्य प्रदर्शन नहीं करते। अपना दिखावा नहीं करते कि वह कोई बड़े कलाकार हैं दरअसल उन्हें आडम्बर पसंद नहीं जमाने के समक्ष। हर कला में पारंगत होने पर भी उन्होंने कभी कला प्रदर्शन नहीं किया।

आशू बाबू रमता बाबा के साथ ही रहते थे जो वैद्य भी हैं और कलाओं में निष्णात भी।लेकिन बाध्य हो या तनिक आसक्त हो वह राजनीति में उतर जातें हैं।रमता बाबा यह तनिक भी पसंद नहीं करते और आशू बाबू को बाहर का रास्ता दिखा देते हैं–'जाओ अब तुम्हारा रास्ता संगीत का नहीं,राजनीति की दलाली का है।तुम्हारे इंतजार में शहर के सबसे रईस लोग बैठे हैं।मेरी तुमसे यह आखिरी भेंट है।'

आशू बाबू राजनीति में काफी सफल सिद्ध हो रहते हैं। बबलू, सुमति उनकी मदद से अपनी फिल्म को बनाने का प्रयास करते हैं। वहीं आखिर में बीमार, जर्जर स्थिति में सुमति की बहन शांति भी आ जाती है जिसने कभी सुमति को बेसहारा,बेहाल सड़क पर मरने के लिए छोड़ दिया था।लेकिन सुमति उसके साथ वहीं व्यवहार नहीं कर पाती है और उसके इलाज के प्रयास में लग जाती है आशू बाबू की पहुँच और रुतबे के द्वारा।

कहानी उलझी हुई चलती है लेकिन रसास्वादन के साथ। गम्भीर पाठक इसका भरपूर आनंद उठा सकते हैं।

विष्णुचंद्र शर्मा जी की लेखन शैली अनूठी है।विषय, कथानक जिंदगी की रोज़मर्रा की तकलीफों, खुशियों, संघर्षों से उठाए हुए हैं, जिनसे वह पूरी तरह जुड़ जाते हैं और कहीं- कहीं आपको भ्रम होगा कि विपिन खुद लेखक ही हैं। कहीं थोड़ा भटकी भी मैं, यह मेरी समझ की सीमा ही रही कि कुछ पात्र अधूरेपन का शिकार लगे।रूपचंद के चरित्र को थोड़ा और विस्तार मिलता,उसका अंत क्या रहा ? यह पाठकों की समझ पर छोड़ दिया गया।

छोटे - छोटे संवादों के जरिए जिंदगी के सच सामने लाने की कला एक अलग अनूठापन लिए है।ऐसा लेखन जिंदगी की समझ से भरपूर, सुविज्ञ, हर विषय पर जबरदस्त पकड़ वाला लेखक ही कर सकता है और विष्णु जी इस कला में निष्णात हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित उपन्यास 'रेखाएँ दुःख की' बार-बार पढ़ने की माँग करता है जिससे जीवन के रहस्यों को सुलझाने का, उलझी जिंदगी को समझने की सलीका मिलता है।

(2)

बिगड़ी तस्वीरों का एलबम

यह लघु उपन्यास है मगर अपने-आप में कथन, कहन,विषय से एक विराट, विस्तृत अनुभव संसार समेटे है। जहाँ छोटे-छोटे दुख,तकलीफ,संघर्ष एक -दो पंक्ति में सिमट कर भी बड़ी बात कहने की क्षमता रखते हैं।

जहाँ एक तरफ स्त्रियों की बिगड़ी स्थिति को बयान कर रहे हैं तो दूसरी तरफ देश के हालात पर,राजनीतिक परिदृश्य, देश-विदेश की उठापटक पर भी पैनी नजर है विष्णु जी की।

इन सारे हालातों के विवरण में, फैलाव में वह नहीं जातें हैं। छोटे-छोटे वाक्य, वन लाइनर ही उनके जबरदस्त मारक बन पड़ते हैं। और यह आपकी दुनिया की जानकारी, समझ के ऊपर निर्भर हो जाता है कि आप उनकी बात को कितना आत्मसात कर पा रहे हैं। मैं भी बड़े जूतों में पैर डालने की हिमाकत कर रही हूँ, बस लोलार्क जी का भरोसा मेरे नन्हें से आत्मविश्वास को बढ़ा देता है।

उपन्यास में मानसी और दंडपाणि युवा दम्पत्ति हैं। मानसी शिक्षिका के साथ एक संवेदनशील, सहृदय इंसान भी है। उसके साथ जो जुड़ता है वह उनके संघर्ष से अपने को अलग नहीं कर पाती। उनके सहायतार्थ जो भी बन पड़ता है उसके लिए प्रयत्नशील रहती है,भले ही खुद का स्वास्थ्य उपेक्षित रह जाता है।

मुख्यतः यह लघु उपन्यास जिंदगी की बिगड़ी तस्वीरों का एलबम ही है जहाँ अनेक पात्र हैं और उनकी जिंदगी की टूटी फूटी, संघर्षों से जूझती,रोज आने वाली दिक्कतों से रूबरू होती बिगड़ी दास्तानें हैं और जो किसी न किसी तरह मानसी और दंडपाणि से भी जुड़े हैं।

स्त्रियों की स्थिति पर मानसी काफी विचार करती है और उनकी स्थिति पर कहीं अंदर तक आहत भी है। वर्षों से स्त्रियों के हालातों में कोई खास फर्क नहीं आया है। कहीं परिवार में स्त्री पर अत्याचार है तो बाहर भी वह सुरक्षित नहीं है। वह इंसान न होकर एक वस्तु मात्र बन कर रह जाती है। सदियों से यही चलन चलता आ रहा है।

कमज़ोर, लाचार, अशिक्षित स्त्रियाँ तो अपना स्त्री होने का दुख भोगती ही हैं मगर आजाद भारत में पढ़ी-लिखी नारी भी एक डर के तहत ही जीती है। एक जगह आता भी है- 'नारी के भीतर भी डर का एक चार्ट है।'

मानसी की मित्र सुषमा जो नर्स है,लेकिन पिता-पति से त्रस्त है।दोनों उसके पैसे पर ही ऐश करना चाहते हैं और उसके हिस्से केवल अपमान और मारपीट आते हैं।

वहीं एक गुंजन है जो डाक्टर होने के बाबजूद अपनी जाति के दबाव से मुक्त नहीं हो पाई है।बचपन की उसकी कड़वी स्मृतियाँ हैं जिस से वह कैंसरग्रस्त माँ के प्रति भी दयालु नहीं रह पाती।

उधर विद्या जो दंडपाणि से अपने पैर में फ्रेक्चर हुए चोटिल बेटे की पुलिस से छुड़ाने में मदद चाहती है।जो बेरोजगार है और पुलिस चोरी के झूठे इल्जामों में उसे थाने में बिठाए है।

उपन्यास में ऐसे ही दुखी,परेशान, आहत स्त्री पात्र बिखरें हैं। एक लम्बी फहरिस्त है पात्रों की जो वास्तव में सब जिंदगी की बिगड़ी तस्वीरों के एलबम ही हैं।

एकतरफ विष्णुचंद्र जी स्त्रियों, कमजोरों के बिगड़े हालातों को रख रहे हैं तो वहीं समसामयिक देश-विदेश की राजनीतिक हलचलों, षडयंत्रों, राजनेताओं की दुरभिसंधियों पर भी लगातार नजर बनाए हैं।

कहीं बुश और फिदेल के बीच नफरत का जिक्र आता है तो वहीं वियतनाम, अफगानिस्तान, ईराक, अमेरिका की आर्थिक मंदी भी। अपने देश के हिंदू-मुस्लिम मुद्दे पर भी उनकी बेबाक राय सामने आती है लेकिन किसी भी मुद्दे पर डिटेलिंग में नहीं उतरते वह। पंक्तियों के मध्य आए खालीपन, छिपे अर्थ ही वस्तुस्थिति को स्पष्ट करते हैं।

आम बातचीत में जैसे दुनिया, समाज आता है बस वैसे ही जिक्र करते चलते हैं। विष्णुचंद्र जी मानसी,दंडपाणि, हमदम, ईना, साधन जैसे जागरूक पात्रों के जरिए इन समस्याओं से पहचान कराते हैं पाठक की।

शुभा फैक्ट्री में काम करती है, स्वास्थ्य का ख्याल नहीं रख पाती।खून की कमी है।पैर सूजे हैं। किडनी डेमेज का खतरा है मगर वह फिर भी बेटे की रोटी और पति के शराब की चिंता करती है।

वहीं एक गरीब माँ की बेटी दया को दाखिला नहीं मिल रहा स्कूल में,मानसी परेशान है।दया का पिता दूसरी स्त्री के साथ रहता है। एक पानवाला आता है अपनी पत्नी को काम दिलाने की सिफारिश लेकर।

माधवी,जो मानसी की दोस्त भी है एक एक्सीडेंट में जांघ की हड्डी तुड़ा बैठती है मगर अपनी थकान, बी पी से निढाल माँ, और लकवाग्रस्त पिता के लिए चिंतित है। पिता दैनिक कार्यों के लिए भी माँ पर निर्भर हैं।दंडपाणि और विदेश से आई दोस्त ईना के साथ मानसी जब माधवी को छोड़ने उसके घर जाती है तो घर की परिस्थिति देख आहत हो जाती है मगर माधवी की हिम्मत और जिजीविषा से समस्याओं के समाधान की राह आसान लगने लगती है।

जीवन की विडम्बनाओं से दो-चार होती ये स्त्रियाँ हैं जो जूझ रही हैं,सहारा खोज रही हैं। कुछ लड़खड़ा कर गिर जाती हैं कुछ संभल कर फिर उठ खड़ी होती हैं। ऐसी अनगिनत बिगड़ी तस्वीरों से सजी कहानियों का जाल फैला है इस लघु उपन्यास में।

उपन्यास में सबसे ज्यादा ध्यान यह बात आकर्षित करती है कि विष्णुचंद्र जी बहुत छोटी,मामूली लगने वाली साधारण रोज़मर्रा की घटनाओं को उठाते हैं और शब्दों, वाक्यों में ढाल उन्हें महत्वपूर्ण बना देते हैं।रोज ही तो हम दो-चार होते हैं ऐसी साधारण घटनाओं से।मगर हमारी संवेदनाएँ इतनी भोथरी हो चुकी हैं कि अपने आसपास इन घटनाओं को घटते हुए देख भी हमारा ध्यान नहीं जाता। और अगर ध्यान जाता भी है तो कोई अनावश्यक पचड़ा हम नहीं पालना चाहते।

मगर वही बातें, वही घटनाएँ विष्णुचंद्र जी के पास कितनी बड़ी, कितनी महत्वपूर्ण हो उठती हैं,ये उनकी संवेदनशीलता, भावप्रवणता, इंसानियत का जज्बा ही है कि वह हाशिए पर ठहरे लोगों की दुख -तकलीफ से जुड़ाव महसूस करते हैं और अपने पात्रों में कहीं सशक्त पात्रों को भी जोड़ते है जो जिंदगी की इन बिगड़ी तस्वीरों को थोड़ा सुधार सकें और समाज को एक दिशा दे सकें। समाज की सोई भावनाओं, सुप्त संवेदनाओं, खोई दयालुता को थोड़ा जगा सकें।

इसी आशय को उनकी कविता 'आज' पूर्णत स्पष्ट करती है–

जहाँ
फूल नहीं उग सके
मैंने
चट्टानें बो दी थीं
अब
उन चट्टानों में
फूल आ रहे हैं।।

सम्पर्क : 104, घनश्याम पैलेस, इंडियन आयल पेट्रेल पम्प के पास, मुंशी पुलिया चौराहा, सेक्टर 16, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016

मो. 7839040416,

ई-मेल : ilasingh1967@gmail.com

स्मरण

राज कपूर : हिंदी सिनेमा के पहले शोमैन

–ज़ाहिद खान

हिंदी सिनेमा में राज कपूर की शिनाख़्त़ पहले शोमैन के तौर पर है। जिनकी नीली आंखों में सतरंगी सपने थे। वो आम आदमी के फ़िल्मकार थे और उन्होंने अपनी फ़िल्मों में आम आदमी के दुःख-दर्द, उनकी आशा-निराशा, स्वप्न और संघर्ष को बड़े ही खूब़सूरती से अभिव्यक्ति दी। 'बरसात', 'आवारा', 'अनाढ़ी', 'श्री 420', 'जागते रहो', 'जिस देश में गंगा बहती है' 'संगम' और 'मेरा नाम जोकर' जैसी फ़िल्में उनकी बेहतरीन अदाकारी और कल्पनाशील डायरेक्शन की वजह से जानी जाती हैं। राज कपूर, नेहरू युग के प्रतिनिधि फ़िल्मकार थे और उन्होंने अपनी फ़िल्मों के ज़रिए उस दौर की बेहतरीन तर्जुमानी की। खास़ तौर पर उनकी शुरूआती फ़िल्मों को देखने के बाद

लगता है कि उस दौर में आम आदमी के संघर्ष, सपने और आकांक्षाएं क्या थीं ? ख़्वाजा अहमद अब्बास की इंक़लाबी क़लम से निकली दृष्टिसंपन्न कहानियों को राज कपूर ने फ़िल्मों में इस अंदाज़ में पेश किया कि लोग उनकी फ़िल्मों के दीवाने हो गये। अदाकार दिलीप कुमार, देव आनंद उनके समकालीन थे और इनका फ़िल्मों में उस वक्त़ बेहद दबदबा था। इन दोनों की अदाकारी के लाखों शैदाई थे। बावजूद इसके राज कपूर ने अपने निर्देशन और शानदार अदाकारी से एक अलग पहचान बनाई। फ़िल्मों को नया विजन दिया। राजकपूर और उनकी फ़िल्मों की लोकप्रियता देश-दुनिया में असाधारण थी। दक्षिण एशिया से लेकर अरब मुल्कों, चीन, मॉरिशस और लेटिन

अमेरिका के लोग उनकी फ़िल्मों में एक अपनापन महसूस करते थे। जिसमें अविभाजित सोवियत संघ और उसके बाद अलग हुए देशों में आज भी उनकी फ़िल्मों के जानिब ग़ज़ब की दीवानगी है। यहां तक कि पूंजीवादी देश भी राज कपूर की फ़िल्मों को पसंद करते हैं। बीसवीं सदी के आठवें दशक में अमेरिका के कई शहरों में राज कपूर की फ़िल्में दिखाई गईं और 'आरके रिट्रास्पेक्टिव' आयोजित किया गया। जिन्हें देखने के लिए दर्शकों का सैलाब उमड़ पड़ा था।

राज कपूर ने फ़िल्मी दुनिया में उस दौर में अपनी एक अलग पहचान बनाई, जब हिंदी सिनेमा में वी.शांताराम, महबूब खान, बिमलरॉय, गुरुदत्त, बीआर चोपड़ा जैसे दिग्गज निर्देशक एक साथ काम कर रहे थे। राज कपूर ने एक अलग ही फ़िल्मी मुहावरा अपनाया। मधुर गीत संगीत से सजी उनकी फ़िल्मों में अदाकारों के बीच एक जुदा केमिस्ट्री नज़र आती थी। उनकी फ़िल्मों से दर्शकों को सिर्फ़ मनोरंजन ही नहीं, बल्कि एक सशक्त सामाजिक संदेश भी मिलता था। भारतीयता उनकी फ़िल्मों की पहचान थी। 'बूट पॉलिश', 'अब दिल्ली दूर नहीं', 'जागते रहो', 'फिर सुबह होगी', 'तीसरी कसम' जैसी फ़िल्मों का तसव्वुर राज कपूर के बिना नामुमकिन है। उनकी फ़िल्म 'आवारा' को जो कामयाबी मिली, ऐसी कामयाबी बहुत कम फ़िल्मों को हासिल होती है। उस ज़माने में समाजवादी देशों में यह फ़िल्म ख़ूब पसंद की गई। पं. जवाहरलालनेहरू, निकिता ख्रुश्चेव, माओ और अब्दुल क़माल नासर जैसे वैश्विक लीडरों ने इस फ़िल्म की तारीफ़ की थी। राज कपूर की शुरूआती फ़िल्में बॉक्स ऑफ़िस पर फ़्लॉप रहीं। फ़िल्मों में कामयाबी के लिए उन्हें छह सालइंतज़ार करना पड़ा। साल1949 में आई फ़िल्म 'अंदाज़' और 'बरसात' ने राज कपूर को फ़िल्मी दुनिया में स्थापित कर दिया। फ़िल्म 'बरसात' के तो वे निर्माता-निर्देशक भी थे। राज कपूर और नरगिस की लाजवाब अदाकारी, संगीतकार शंकर-जयकिशन के संगीत एवं शैलेन्द्र, हसरत जयपुरी के गीतों से सजी यह फ़िल्म बॉक्स ऑफ़िस पर ज़बर्दस्त कामयाब रही।

नाटक हो या फिर सिनेमा, यह तब बेहतर बनता है जब एक बेहतरीन टीम और इसमें टीम वर्क शामिलहो। राज कपूर इस बात से अच्छी तरह से वाक़िफ़ थे। लिहाज़ा वह लगातार यह कोशिश करते रहे कि यह टीम बने। बहरहाल, उनकी यह बेहतरीन टीम बनी साल1951 में और फ़िल्म थी, 'आवारा'। टीम क्या थी, गुणीजनों का जमघट था। जिसमें कहानीकार, पटकथा लेखक के तौर पर वामपंथी लेखक ख़्वाजा अहमद अब्बास, संगीतकार-शंकर जयकिशन की जोड़ी, गायक-गायिका मुकेश, मन्ना डे, लता मंगेशकर, कैमरामैन-राधू कर्माकर, साउंड रिकॉर्डिस्ट-अलाउद्दीन, कला निर्देशक-एमआर अचरेकर और संपादक जीजी मायेकर शामिल थे। इस टीम का जादू दो दशक तक चला। राज कपूर की इस प्रतिभाशाली टीम ने भारतीय सिनेमा को आधा दर्जन सुपर हिट फ़िल्में दीं। जिसमें फ़िल्म 'बूट पॉलिश', 'श्री 420', 'जागते रहो', 'जिस देश में गंगा बहती है', 'संगम' और 'मेरा नाम जोकर' शामिलहैं।

पहले गीतकार शैलेन्द्र, फिर संगीतकार जयकिशन, गायक मुकेश और उसके बाद ख़्वाजा अहमद अब्बास एक के बाद एक के बिछड़ जाने से टीम बिखर गई। इस बीच एक वाक़िआ और हुआ। 'मेरा नाम जोकर' राज कपूर की महत्त्वाकांक्षी फ़िल्म थी। बड़े स्टारकास्ट की इस फ़िल्म को बनाने के लिए उन्होंने ख़ूब जतन किए थे। फ़िल्म पर पानी की तरह पैसा बहाया था। लेकिन यह फ़िल्म उम्मीदों के बर-खिलाफ़ टिकिट खिड़की पर नाकामयाब साबित हुई। फ़िल्म नाकाम हुई, तो राज कपूर का आत्मविश्वास लड़खड़ा गया। वो काफ़ी दिन तक सदमे में रहे। लेकिन इस होनहार निर्देशक ने हिम्मत नहीं हारी। उद्देश्यपूर्ण फ़िल्मों से इतर उन्होंने अब अपने बेटे ऋषि कपूर और नई नवेली हीरोइन डिम्पलकपाड़िया को लेकर फ़िल्म 'बॉबी' बनाई। किशोर उम्र की इस प्रेम कहानी को दर्शकों ने हाथों हाथ लिया। फ़िल्म सुपर हिट हुई। ख़ास तौर पर फ़िल्म के गाने बच्चे-बच्चे की ज़बान पर थे। 'बॉबी' की कामयाबी के बाद राजकपूर ने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस फ़िल्म के बाद आई 'प्रेम रोग' और 'राम तेरी गंगा मैली' ने भी वही कामयाबी दोहराई। राज कपूर को अपनी फ़िल्मों के लिए कई सम्मान और पुरस्कारों से नवाज़ा गया। फिल्म 'अनाढ़ी' और 'जिस देश में गंगा बहती है' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता एवं 'संगम', 'मेरा नाम जोकर', 'प्रेम रोग', 'राम तेरी गंगा मैली' फ़िल्म के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का फ़िल्मफेय़र अवार्ड मिला। वहीं उनकी फ़िल्म 'जागते रहो' कारलोवी वेरी अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्मोत्सव में ग्रा. प्री अवार्ड से सम्मानित की गई। साल1969 में वह देश के सबसे बड़े नागरिक सम्मानों में से एक 'पद्म भूषण' से नवाज़े गए, तो साल1981 में उन्हें मॉस्को में सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

महलकॉलोनी, शिवपुरी म.प्र.,
मोबाइलः 94254 89944

taste King™
Mint House, Nadesar, Varanasi

अमर शहीद राजा राय

- अनिल राय

एक बहुत ही साधारण भूमिहार ब्राम्हण परिवार में ग़ाज़ीपुर जिले के शेरपुर कलां गांव में श्री उग्रह राय का परिवार रहता था। उनके दो बेटे थे। छोटे बेटे का नाम श्री विंध्याचल राय और बड़े बेटे का नाम श्री राजा राय था। श्री राजा राय का जन्म सन 1912 में हुआ था। बचपन से ही उनकी रूचि अथवा अभिरुचि अपने उम्र के बच्चों से अलग थी। उन्होंने प्राथमिक विद्यालय तक की शिक्षा ग्रहण की। वो अपना ज्यादातर समय रामायण पढ़ने, रामायण का महात्म्य समझाने, धार्मिक और सामजिक कार्यों में व्यतीत करते थे। प्रतिदिन उनके दरवाजे पर एक निश्चित समय पर रामायण का पाठ होता था। जिसे सुनने के लिया पड़ोसी तथा गांव के दूसरे मुहल्लों से भी प्रबुद्ध अथवा धार्मिक प्रवृति के लोग नियत समय पर जमा हो जाते थे। वो बड़े ही उदार तथा सेवा भावी थे। उस रामायण पाठ के समाप्त होने पर वो गरीबों में प्रतिदिन अनाज वितरित करते थे। उनकी इस तरह कि जीवन चर्या से प्रभावित होकर सभी लोग उनका बहुत आदर सत्कार करते थे। किसी भी गरीब व्यक्ति को अगर कोई अन्यथा सताता था तो उसकी जमकर खैर लेते थे। इस वजह से लोग उनसे इधर उधर की अथवा कोई गलत बात करने से डरते थे। औरों के साथ -साथ अपने से छोटे भाई श्री विंध्याचल राय और चचेरे भाई श्री विक्रमा राय का भी बहुत ख्याल रखते थे। श्री विक्रमा राय एक माने जाने पहलवान थे और उनको आगे बढ़ाने तथा उनके खान पान का विशेष ध्यान श्री राजा राय रखते थे। श्री विक्रमा राय को हर कुश्ती के मुकाबले में ले जाते थे और उनका हौसला बढ़ाते रहते थे।

एक बार की बात है कि वो किसी के साथ किसी और गांव जा रहे थे। बीच में गंगा नदी पड़ती थी जिसे नांव से पार करना पड़ता था। वो नदी किनारे नावं का इन्तजार कर रहे थे तभी एक साधु बाबा भी वहीँ आ गए कहीं से। उनको पास आता देखकर राजा राय ने प्रणाम किया तो साधु जी ने उनको आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम्हारे ललाट से एक शक्ति पुंज सा निकालता हुआ प्रतीत हो रहा है। साधु बाबा ने उनसे उनका हाथ दिखाने का आग्रह किया जो कि राजा राय ने पथमदृष्टया मना कर दिया कि मैं इन सब बातों में विश्वास नहीं करता हूँ। फिर भी साधु बाबा के जोर देने पर उन्होंने अपना हाथ दिखाया। साधु बाबा ने हाथ देखकर कहा कि बेटा तुम्हारा जन्म तो देश सेवा के लिए ही हुआ है अगले कुछ सालों में देश के लड़ाई में ये काम आने वाला है। तुम्हें 40 वर्ष तक अपनी शादी नहीं करनी चाहिए और जीवन रहा तो उसके बाद तुम आजीवन सुखी वैवाहिक जीवन यापन कर सकते हो। उसके बाद उन्होंने शादी नहीं करने का फैसला लिया।

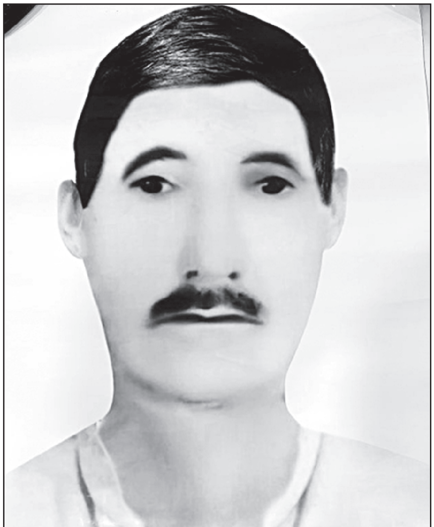

MARTYR RAJA RAI
S/o Shri Ugrah Rai
BORN-1912, MARTYRDOM- 18 th AUGUST 1942

दिन रात समाज सेवा और देश सेवा के कामों में ज्यादा समय व्यतीत करते थे। वो दिल के बड़े ही उदार व्यक्ति थे। किसी कि भलाई के लिए किसी हद तक भी चले जाते। एक बार उनको शादी के लिए रिश्ता आया तो उन्होंने लड़की वालों को समझा बुझा कर अपने चचेरे भाई जिसकी उम्र बहुत ज्यादा हो गयी थी, शादी नहीं हो पा रही थी, से उसका रिश्ता तय करवा दिया ताकि उसका घर बस सके और आगे वो ख़ुशी से जीवन यापन कर सके। स्वंतंत्रता संग्राम के बहुत सारी गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। 02 अक्टूबर 1929 को महत्मा गाँधी अपनी पत्नी कस्तूरबा गाँधी और अपने परिवार के कई सदस्यों के साथ गाज़ीपुर आये थे। उन्होंने ग़ाज़ीपुर में एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा 'ल्दि्;सभी जो उपस्थित हैं यह न समझिये कि आजादी यूँ ही हमें मिल जाएगी। कुर्बानी देनी होगी, संघर्ष करना पड़ेगा, घर से बाहर निकलना होगा। बोलिये, घर से बाहर निकलकर क्या आप शांति पूर्वक विरोध प्रदर्शन में भाग लेंगे। हाथ उठाकर बताइए बहुत मेहनत करनी होगी। हिम्मत मत हारियेगा'. इस सभा में राजा राय भी पहुंचे थे। वो गाँधी जी कि बात से बहुत प्रभावित हुए थे और उन्होंने स्वंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से कार्य करने का निर्णय लिया। वो लोगों से ये सुनते रहते थे कि कलकत्ता में बहुत से नेता जैसे कि सुभास चन्द्र बोस इत्यादि अंग्रेजों के खिलाफ बहुत से कार्यक्रम करते रहते हैं। उनको कलकत्ता जाकर उन सबसे मिलना और उनके साथ देश के लिए कुछ करने का बड़ा मन था। उनको एक अधिवेशन के बारे में पता चला तो अपने आप को रोक नहीं पाए। श्री राजा राय 1933 में कलकत्ता अधिवेशन में भाग लेने के लिए गए थे। वहां पर उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े हुए कई बड़े नेताओं से मुलाकात की और उनके साथ बहुत सारी गतिविधियों में शामिल हुए। इसी समय एक कार्यक्रम में भाग लेते हुए वो गिरफ्तार हो गए और उन्हें जेल में रहना पड़ा।

1942 में अंग्रेजो भारत छोड़ो कार्यक्रम में भाग लेने के लिए वो कलकत्ता भी गए थे। वो महात्मा गाँधी के विचारों से बहुत ही प्रभवित और उत्साहित थे। 8 अगस्त 1942 को जब महात्मा गाँधी ने अंग्रेजो भारत छोड़ो का नारा

बुलंद किया और हर भारतवाशी को बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया। तब राजा राय भी उसमें कूद पड़े और कलकत्ता जाने के लिए गाड़ी से निकल पड़े। उनके साथ कुछ गिनती के दो तीन लोग थे जो साथ हो लिए। कलकत्ता जाते समय उन्होंने पलामू के क्रांतिकारियों से भी मिलने का मन बना लिया था क्योंकि इसी समय बिहार के पलामू में भी स्वंत्रता संग्राम के शोले धड़क रहे थे और बहुत से नौजवान, उनमे से कुछ प्रमुख नाम यदुवंश सहाय (यदु बाबू), उमेश्वरी चरण (लल्लू बाबू), गणेश प्रसाद वर्मा, नन्द किशोर वर्मा, नीलकंठ सहाय, ऋषि कुमार सहाय, तीरथ प्रकाश भसीन, वेद प्रकाश भसीन, हज़ारी लाल साह, नारायण लाल साह, लक्ष्मी प्रसाद और गौरी शंकर गुप्ता थे। राजा राय इनमें से कुछ लोगों से मिल पाए और एक दूसरे से अपनी सीख और बातें साझा की।

कलकत्ता में भारत छोड़ो आंदोलन बहुत ही तीव्र और व्यवस्थित ढंग से चल रहा था। कलकत्ता की सड़कों पर डस्टबिन फेंक कर बाधित करना, ट्राम जलाना, टेलीफोन अथवा ट्राम के तार काटना, बड़े नेताओं की मीटिंग इत्यादि अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे थे। उन्होंने कलकत्ता पहुँच कर वहां के कई बड़े नेताओं से मिले और अपना हुए अपने जिले के गतिविधियों के बारे में जानकारी साझा की। अब उनके अंदर जोश और भी कई गुना भर चुका था। वो जल्दी से अपने जिले की तरफ वापसी के लिए निकल पड़े ताकि यहाँ भी नौजवानों को स्वनत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए और भी उत्साहित किया जा सके। वापस आकर उन्होंने देखा कि ग़ाज़ीपुर में भी अंग्रेजो भारत छोड़ो का नारा बहुत जोर से बुलंद हो रहा था। ग़ाज़ीपुर में एक बड़ी घटना घटी जिसने अंग्रेजी सरकार को अचम्भे में डाल दिया और उनका सारा महकमा हिल गया। 10 अगस्त को अखबार में महात्मा गाँधी और कुछ और बड़े नेताओं के गिरफ़्तारी का समाचार पढ़कर 14 साल के यमुना गिरी आग बबूला हो उठे, उनके तरुण मन में क्रांति ने जन्म ले लिया। उन्होंने योजना बनाकर 12 अगस्त को ग़ाज़ीपुर नगर के तीनों विद्यालयों में छात्रों को समझकर हड़ताल कर दी। फिर 13 अगस्त को कुछ और सहपाठियों के साथ ग़ाज़ीपुर घाट रेलवे स्टेशन को आग लगा दिया। अभी इस बात से अंग्रेज उबर पाते कि उन्होंने अपने सहपाठियों के साथ मिलकर 14 अगस्त 1942 को गौसपुर के हवाई अड्डे को आग के हवाले कर दिय। (इस तरुण उम्र में भी उन्हें पांच वर्ष का सश्रम कारावास की सजा झेलनी पड़ी क्योंकि उन्होंने अंग्रेजों से माफ़ी मांगने के अवसर को ठुकरा दिया)।

अब स्वंत्रता संग्राम कि ज्वाला हर जवान के दिल में धड़क रही थी। यमुना गिरी के ऊपर अंग्रेजों ने जो प्रताड़ना की उससे नौजवानों के बीच गुस्सा और बढ़ गया था। श्री राजा राय भी अब चाहते थे कि कुछ बड़ा किया जाए। 17 अगस्त 1942 को शेरपुर के कुछ नौजवान अपनी तहसील मुहम्मदाबाद पहुंचे और उन्होंने अंग्रेजों को चैलेंज कर दिया कि वो 18 अगस्त को आएंगे और भारत माता का झंडा फहरा के ही दम लेंगे। अब शेरपुर गांव में हर नौजवान को इस चुनौती कि खबर दी गयी की हम सबको ज्यादा से ज्यादा मात्रा में 18 अगस्त को तहसील पहुंचना है और झंडा फहराना है। ये सुनकर श्री राजा राय और भी उत्साहित हो गए। शेरपुर और आस पास के गांव भयंकर बाढ़ की वजह से पानी से घिरे हुए थे। फिर भी नौजवानों के जोश में कोई कमी नहीं थी। श्री राजा राय 18 अगस्त को अपने घर पर ही थे और आँगन में बैठ कर अपनी माँ से बातें करते हुए खाना खा रहे थे तभी उनके कानों में कुछ नौजवानों की आवाज पड़ी जे अपना मई क दूध पियले होइ उ सब तहसील पर झंडा फहरावे खातिर चली अउरी जे मूत पियले होइ अपने घर में लुका के बैठी (जो अपनी माँ का दूध पिया है वो तहसील पर आज झंडा फहराने जायेगा और जिसने मूत पिया है वो अपने घर पर छिप के बैठेगा। उनकी तैयारी तो मन ही मन में कई दिन से चल रही थी और ये सुनते ही उन्होंने अपनी थाली को माँ की तरफ सरका दिया और खाना बीच में ही छोड़ कर जाने के लिए तैयार हो गए। उनकी माँ ने रोकने को कोशिश की तो उन्होंने उसके दूध की कसम देकर मजबूर कर दिया। माँ का पैर छुआ और उनका आशीर्वाद लेकर वो भी उन नौजवानों की टोली में निकल पड़े। माँ अपने बेटे को एक टक जाते हुए देखती रही। थोड़ी ही देर में वो भी उस टोली का हिस्सा बन गए और नारा लगाते हुए निकल गए।

सबलोग गांव की गलियों में नारा लगाते हुए भगवान का आशीर्वाद लेने के लिए पूरब दिशा में हनुमान मंदिर के पास आशीर्वाद लेने

के लिए इकट्ठा हुए। वहां के पुजारी ने सबसे निवेदन किया कि वो लोग आज तहसील पर ना जाएँ क्योंकि दिशाशूल है, मुहूर्त शुभ नहीं है और खतरा हो सकता है। उन्होंने सबको अगले दिन जाने की सलाह दी क्योंकि मुहूर्त अच्छा है फिर विजय निश्चित है। सबने पुजारी की बात को अनसुना कर दिया और कहा कि हम ने अपनी जबान दी है और सरकार को चुनौती दिया है कि हम 18 अगस्त को ही झंडा फहराएंगे। नौजवानों की टोली गांव से रुखसत होकर आगे बढ़ने लगी। रास्ते में नाग (सर्प) देवता ने फन हिलाकर सबको डराने की कोशिश की जिससे कि नौजवान रुक जाएँ। उनके जोश और उत्साह के आगे कोई भी डर या भय छोटा पड़ रहा था। नौजवानों ने नाग को मारकर आगे चलना जारी रखा। जिस रास्ते से ये टोली निकलती और लोगों में भी जोश भर देती और कुछ नए लोग जुड़ जाते।

कुछ लोगों के पहले से तहसील ऑफिस का मुआयना करके रिपोर्ट लाने के लिए भेजा गया था। उन्होंने सूचना दी की तहसीलदार ने बाहर से भी फ़ोर्स बुला लिया है और आज गोली चलने की भी पूरी संभावना है। श्री राजा राय को ध्यान आया कि उनके साथ एक दो लोग और आये थे जो कि शादी शुदा थे। उनमें से एक उनका खास सेवादार राजा सेठ था जिसको उन्होंने प्यार से समझा के वापस कर दिया कि आगे बहुत खतरा है और हम सब की जान भी जा सकती है। वो पहले ना नुकुर करता रहा फिर बाद में मान गया और बीच रास्ते से वापस आ गया। उसने घर आकर सबको इस बात की जानकारी दी कि बाबू राजा राय जी तहसील पर झंडा फहरा कर ही आएंगे हालाँकि खतरा बहुत ज्यादा है। घर पर उनकी माताजी और बाकी सदस्य बहुत चिंतित हो गए लेकिन उनको मालूम था कि राजा राय का मन भी एक साहसी राजा की तरह है और वो जो एक बार ठान लेते हैं करके ही मानते हैं।

मुहम्मदाबाद तहसील से थोड़ा पहले रूककर एक मीटिंग की गयी और उसमें दो टोलियां बनायीं गयीं। एक टोली को तहसील के पूरब (पीछे) तरफ से हमला करना था और सिपाहियों को रोकना था ताकि पश्चिम (आगे) की टोली तहसील में घुस कर अंग्रेजों का झंडा उतारकर और फिर अपने भारत माता का झंडा फहरा सकें। श्री राजा राय ये जानते हुए कि खतरा ज्यादा है, आगे वाली टोली में ही शामिल हुए। वो लम्बे चौड़े और साहसी जवान थे तो सबकी सहमति भी मिल गयी। सब लोगों ने ये तय किया था कि ये लोग बस इन अग्रेजों को डराएंगे मगर कोई हाथ या लाठी नहीं उठाएंगे। ये प्रदर्शन एकदम से शांतिपूर्ण होगा जिससे कि अंग्रेजों को गोली चलाने का कोई बहाना ना मिल सके। सभी लोगों ने अपने साथ लाये हुए लाठी डंडे और छोटे मोठे हथियार सब पहले ही फेंक दिए। सबलोग निडरता से निहथ्थे ही भारत माता की जय बोलते हुए आगे बढ़ने लगे।

तहसील पहुंचकर सभी लोग योजनानुसार दो टोलियों में बंट गए और तहसील के तरफ बढ़ने लगे। अंग्रेजी हुकूमत पहले से ही कुछ बड़ा करने की तैयारी में थी। अंग्रेजों ने सबको पीछे हटने और वहां से भागने के लिए धमकाते हुए कहा कि वो सब वहां से चले जाएँ वरना गोलियों से भून दिए जाएंगे। इन्होने अंग्रेजों को जवाब में ललकार कर कहा कि वो लोग ये तहसील छोड़ कर चले जाएँ और उन्हें झंडा फहराने दे। हमलोग गोलियों से डरने वाले नहीं हैं। तुम्हारे अंदर दम है तो गोली चलाओ हम बिलकुल पीछे नहीं हटेंगे। अंग्रेजों ने निहथ्थे लोगों पर दनादन गोलियां बरसानी शुरू कर दी। जिससे श्री राजा राय और उनके सात साथी वहीँ पर सीने में गोली लगने से गिर पड़े और भारत माता को आजाद करने के जूनून में शहीद गति को प्राप्त हो गए। और भी कई लोग थे जिनको गोलियां लगी थी और वो लोग घायल अवस्था में अस्पताल ले जाए गए।

कुछ लोग बचते बचाते हुए अगले दिन जब गांव पहुंचे तब सबको खबर लगी कि तहसील पर कितने लोगों ने वीर गति को प्राप्त किया। अंग्रेजों ने सभी लाशों को उफनती बेसो नदी में फिकवा दिया। संयोग कहिये या फिर दैवयोग की वो लाशें बहते हुए गंगा नदी में पहुंची और वहां से बहते-बहते शेरपुर के भागड़ में आ लगी। पुरे गांव में हल्ला हो गया की कुछ लाशें बहते हुए हमारे भागड़ में आ लगी हैं। गांव के लोगों ने जब लाश निकाली तो कुछ कपड़ों अथवा अन्य चिन्हों से अपने माटी के लाल को पहचान पाए। सबकी लाश तो नहीं मिल पायी पर ज्यादातर लोगों की मिल गयीं। जिसके बाद उनका दाह संस्कार अपने रीति रिवाज के अनुसार किया गया।

इतनी बड़ी घटना ने अंग्रेजों को हिला कर रख दिया था। वो इस बात का बदला लेना चाहते थे और उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते थे कि फिर कोई ऐसी घटना करने की ना सोचे। अंग्रेजों ने कुछ दिन पश्चात् ही शेरपुर गांव पर हमला कर दिया और बहुत से लोगों को मारा पीटा और सामान भी लूट कर ले गए। शेरपुर के शेर लोगों ने इन सब मुसीबतों का डंटकर मुकाबला किया और भारत के आजादी के इतिहास में अपना एक अलग स्थान प्राप्त किया। श्री राजा राय के कनिष्ठ भाई श्री विंध्याचल राय उस समय रूरकी शहर में सेना में तैनात थे। जैसे ही उनको इस साहसिक घटना की जानकारी प्राप्त हुई वो अपनी नौकरी छोड़कर घर आ गए। अब पूरे परिवार की जिम्मेदारी उनके कन्धों पर थी। वो खेती बारी से अपने परिवार का भरण पोषण करने लगे। उनके एक मात्र पुत्र श्री श्रीकृष्ण राय ने भारतीय सेना में नौकरी करते हुए सूबेदार मेजर के पद पर अवकाश प्राप्त किया और उनकी पांच पुत्रियां थी जिनका शादी व्याह होने के पश्चात वो अपने-अपने ससुराल घर में जीवन व्यतीत कर रही हैं।

शेरपुर गांव में ग्राम समाज की जमीन पर इन आठ शहीदों के लिए स्तम्भ बनाया गया है। आज भी हर 18 अगस्त को शेरपुर गांव में और मुहम्मदाबाद तहसील पर इन आठ शहीदों की याद में प्रार्थना सभा राखी जाती है और उनके कृत्यों को गर्व से याद किया जाता है। गांव के सभी सरकारी अथवा गैर सरकारी विद्यालयों में भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिससे की आने वाली पीढ़ी को अपने पूर्वजों के साहसिक कृत्य से सीख मिले। अष्ट शहीदों की याद में देश की राजधानी दिल्ली में भी कुछ कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिसमें इस क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों के अलावा कुछ प्रवक्ता और राजनेता आमंत्रित किये जाते हैं। ●

मनोहर श्याम जोशी

(जयंन्ती 9 अगस्त)

मनोहर श्याम जोशी का जन्म 9 अगस्त 1933 को राजस्थान के अजमेर में हुआ था। लखनऊ विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक जोशी जी के परिवार की पृष्ठभूमि ही शास्त्र-साधना, पठन-पाठन तथा संचार साधनों से जड़ी रही जो इन्हें विरासत में मिली। साहित्य की ख्यातिलब्ध पत्रिका धर्मयुग से उनके कैरियर की शुरूआत हुई। सम्पादक धर्मवीर भारती के सानिध्य में खोजी पत्रकारिता और फिल्म कथा लेखन के कार्य में जुट गये। भाषा के जितने विविध आयाम मनोहर श्याम जोशी में थे उतने किसी और हिन्दी कथाकार में नहीं। कभी शाराती कभी उनमुक्त। संस्कृत, अवधी, खड़ी बोली, कुमाऊँ, बंबइया हिन्दी आदि में उन्होंने फिल्म पटकथा लेखन किया। आधुनिक हिन्दी के प्रसिद्ध गद्यकार, जनवादी विचारक, व्यंगकार, पत्रकार, फिल्म पटकथा लेखक, सम्पादक जोशी जी की अनेक कृतियां जो अमर हो गयीं उनमें प्रमुख धारावाहिक हम लोग, बुनियाद, मुंगेरी लाल के हसीन सपने, जमीन आसमान, गाथा आदि हैं। प्रमुख उपन्यास कसप, कुरू कुरू स्वाहा, टा टा प्रोफेसर, क्याप, हमजाद, कौन हूं मैं आदि प्रमुख हैं। उन्हें क्याप के लिए 2005 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से तथा 1993-94 में शरद जोशी सम्मान से नवाजा गया था। कुशल धारावाहिक लेखक, सम्पादक, कुशल प्रवक्ता मनोहर श्याम जोशी का निधन 30 मार्च 2006 को दिल्ली में हो गया।

एसके पाटिल

जयन्ती 14 अगस्त

सदाशिव कानोजी पाटिल का जन्म 14 अगस्त 1900 में महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में हुआ था। महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन के दौरान 1920 में छात्र रहे पाटिल ने सेंट जेवियर कालेज छोड़ दिया। जब आन्दोलन समाप्त हुआ तब वे लंदन चले गये और अर्थशास्त्र तथा पत्रकारिता की शिक्षा पूर्ण की।

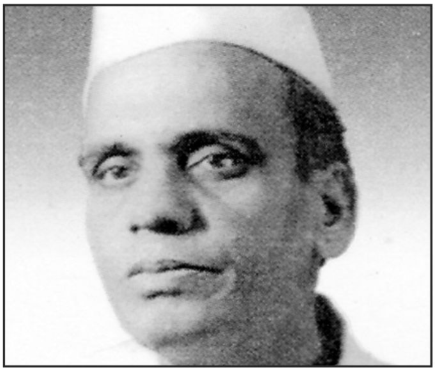

वापस आकर 1927 से 1933 तक बाम्बो क्रानिकल नामक एक पत्र में काम किया। स्वतंत्रता संग्राम और राजनीति में रूचि रखने वाले एसके पाटिल 3 वर्ष तक मुंबई के मेयर भी रहे। संगठनात्मक समता से कांग्रेस को मुंबई का गढ़ बना देने वाले पाटिल आठ बार गिरफ्तार हुए और दस वर्ष तक जेल में रहे। 1937 और 1946 में वे मुंबई विधानसभा के सदस्य बने। वे संविधान सभा के भी सदस्य थे। 1952 और 1967 में लोकसभा के सदस्य चुने गये। भारत सरकार में सिंचाई, यातायात, विद्युत, रेल, कृषि आदि मंत्रालयों में रहे। कांग्रेस में विघटन के बाद उन्होंने पुरानी कांग्रेस का साथ दिया और राजनीति से हट गये। वे बड़े उद्योगों के समर्थक थे। प्रखर वक्ता, कुशल राजनेता एसके पाटिल जी का निधन 24 मई 1981 को दिल्ली में हो गया।

राजेन्द्र कुमार पचौरी

जयन्ती 20 अगस्त

डा. राजेन्द्र कुमार पचौरी का जन्म देवभूमि उत्तराखण्ड के नैनीताल में 20 अगस्त 1940 को हुआ था। पचौरी जी के कैरियर की शुरूआत वाराणसी के डीजल रेल कारखाना के प्रबन्धकीय विभाग से हुई थी। टाटा एनर्जी रिसर्च इंस्टिट्यूट (टेरी) में डायरेक्टर, एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कालेज हैदराबाद में फैकेल्टी मैनेजर आदि पदों पर रहते देश और विदेश की कई संस्थाओं में कार्य किया। टेरी में डायरेक्टर जनरल के पद पर कार्य करते हुए इन्हें भारत सरकार ने 2001 में पद्मविभूषण से सम्मानित किया। 1988 में संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यावरण कार्यक्रम तथा विश्व जलवायु संगठन ने आईपीसीसी की स्थापना की। पचौरी साहब 20 अप्रैल 2002 को इस संस्था के चेयरमैन का पदभार सम्भाला। उन्हें अमेरिकी उपराष्ट्रपति अलवर्ट अर्नाल्ड (अल) गोर गुनियर के साथ संयुक्त रूप से 2007 का नोबल शान्ति पुरस्कार प्रदान किया गया था। हालाकि यह पुरस्कार व्यक्तिगत रूप से नहीं मगर आईपीसीसी को मिला जिसके चेयरमैन पचौरी साहब थे। विश्व

बैंक वाशिंगटन विजिटिंग रिसर्च फैलो, ऊर्जा, पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करने वाली देश, विदेश के अनेक संस्थाओं में सदस्य, सलाहकार रहते पर्यावरणीय असंतुलन को कम करने का सुझाव दिया था। डा. राजेन्द्र पचौरी का निधन 13 फरवरी 2020 को हो गया।

फिराक गोरखपुरी

जयन्ती 28 अगस्त

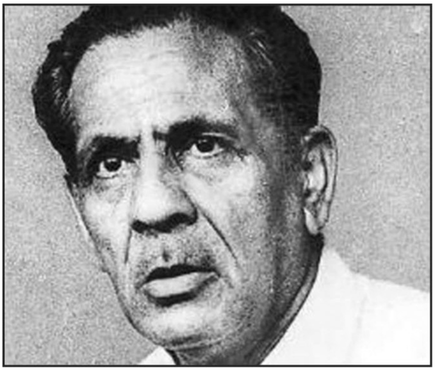

उर्दू के मशहूर शायर रघुपति सहाय उर्फ फिराक गोरखपुरी का जन्म 28 अगस्त 1896 में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में हुआ था। उनके पिता पेशे से वकील थे। शायरी में उनका भी बहुत नाम था। फिराक गोरखपुरी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी। उनका विवाह प्रसिद्ध जमींदार विन्देश्वरी प्रसाद की बेटी किशोरी देवी से 29 जून 1914 को हुआ था। फिराक ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरूआत गजल से की। फारसी, हिन्दी, ब्रजभाषा और भारतीय संस्कृति की गहरी समझ होने के कारण उनकी शायरी में भारतीयता रच बस गयी थी। आजादी के आन्दोलन में भी उनका बहुत योगदान रहा। असहयोग आन्दोलन में उनको जेल भी जाना पड़ा। पंडित नेहरू के सहायक के रूप में भी कांग्रेस का कामकाज किया। 1962 के चीन युद्ध के समय फिराक साहब की एक गजल बहुत मशहूर हुई थी। सुखर की शम्मा जलाओ बहुत उदास है रात, नवाए मीर सुनाओ बहुत उदास है रात, कोई कहे ख्यालो और ख्वाबो से दिलों से दूर न आजो बहुत उदास है रात, पड़े हो धुंधली फिजाओं में मुंह लपेटे हुए सितारों सामने आओ बहुत उदास है रात। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन के साथ-साथ दस गद्य कृतियां, उपन्यास साधु और कुटिया, और कई कहानियां भी लिखी। उनहें अनेक सम्मान से भी नवाजा गया था। 1960 में गुल-ए-नगमा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1968 में सोवियत लैण्ड नेहरू अवार्ड, 1968 में ही साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में पद्मभूषण प्रदान किया गया था। भारत सरकार ने उनके याद में 1997 में डाक टिकट भी जारी किय। अन्ततः 3 मार्च 1982 को देश के नामचीन शायर फिराक साहब का दिल्ली में निधन हो गया।

गुलशन बावरा

पुण्यतिथि 7 अगस्त

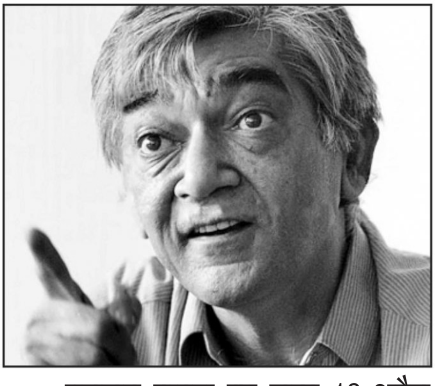

गुलशन बावरा का जन्म 12 अप्रैल 1937 को अविभक्त भारत के पंजाब में शेखपुरा में हुआ था। प्रसिद्ध गीतकार बावरा ने रेलगाड़ी से भारत आते समय अपने पिता को तलवार से कटते और मां के सिर में गोली लगते हुए देखा था। भयावह त्रासदी की यातना के प्रत्यक्षदर्शी बावरा जी पहले दिल्ली आये फिर रेलवे में नौकरी लग जाने के कारण मुम्बई चले गये। मां के साथ भजन लिखने सीखने और गाने का शौक उनको बचपन से ही था। इसलिए नौकरी से फुर्सत मिलते ही वे आनन्द जी कल्याण जी के दफ्तर का चक्कर लगाने निकल पड़ते थे। बावरा जी को पहली सफलता इसी जोड़ी संगीत निर्देशन में फिल्म 'सट्टा बाजार' में मिली जब उनका लिखा गीत 'तुम्हे याद होगा कभी हम मिले थे मुहब्बत की राहों में मिलकर चले थे' बेहद लोकप्रिय हुआ। फिल्मों में अभिनय और उनकी मेहनत ने उन्हें काफी प्रसिद्धि दी। उनकी एक पंक्ति जो अमर हुई 'मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे-मोती, मेरे देश की धरती। क्लर्क की नौकरी में मालवाहक रेल से पंजाब से लदे गेहूं की बोरियों को देख-देखकर उन्होंने एक से बढ़कर एक गीत लिख डाले। राहुल देव वर्मन, किशोर कुमार आदि के साथ रहे बावरा जी अमर गीतकार के रूप में याद किये जाते हैं। उनकी फिल्में कस्मे यादें, हांथ की सफाई, सनम तेरी कसम, हकीकत, ये वादा रहा, सत्ते पे सत्ता आज भी उनके अमर गीतों की कहानी बयां करती हैं। 1967 में उन्हें फिल्म फेयर पुरस्कार से भी नवाजा गया। अन्ततः लम्बी बिमारी के बाद 7 अगस्त 2009 को मुम्बई में उनका निधन हो गया।

सरदार अजीत सिंह

पुण्यतिथि 15 अगस्त

भारत के सुप्रसिद्ध राष्ट्रभक्त और

क्रान्तिकारी सरदार अजीत सिंह का जन्म पंजाब के जालंधर जिले के एक गांव में 23 फरवरी 1881 को हुआ था। उनकी पत्नी 40 साल तक एकाकी जीवन यापन करने वाली जीवट महिला थी। क्योंकि सरदार अजीत सिंह को राजनीतिक विद्रोही घोषित कर जेल में डाल दिया गया था। लाला लाजपत राय के साथ ही इन्हें भी देश निकाले जाने का दण्ड 1906 में दिया गया था मगर ये गये नहीं और 1907 में भू आन्दोलन में भाग लिया और गिरफ्तार हुए फिर इन्हें वर्मा की माण्डले जेल में डाल दिया गया। भारतीय स्वाधीनता के कारणों पर पुस्तक और अनेक पत्रिकायें लिख डाली। अहम यह रहा कि अजीत सिंह सरदार भगत सिंह के चाचा थे। अजीत सिंह जब केवल 25 वर्ष के थे तभी बाल गंगाधर तिलक ने कहा था कि ये स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति बनने के योग्य हैं। उस समय उनकी उम्र 27 साल की थी। ईरान के रास्ते तुर्की, जर्मनी, ब्राजील, स्वीटजरलैंड, इटली, जापान आदि देशों में रहकर क्रान्ति का बीज बोया। रोम रेडियो को नया नाम आजाद हिन्द रेडियो कहा जाने लगा। इसके माध्यम से क्रान्ति का प्रचार-प्रसार करते रहे। 1947 में वे 40 से अधिक भाषाओं के ज्ञाता के रूप में घर आये तो अनेक वार्तालाप के बाद भी उनकी पत्नी उन्हें नहीं पहचान पा रही थी। अन्ततः जिस दिन भारत आजाद हुआ उसी दिन 15 अगस्त 1947 की सुबह 4 बजे उन्होंने पूरे परिवार को जगाया और जय हिन्द कहकर सदा के लिए सो गये। ऐसे बहादुर वीर को राष्ट्र आज भी नमन करता है।

मदन लाल ढींगरा

पुण्यतिथि 17 अगस्त

स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रान्तिकारी मदन लाल ढींगरा का जन्म 18 फरवरी 1883 को एक सम्पन्न हिन्दू परिवार में हुआ था। इनके पिता सिविल सर्जन और अंग्रेजी रंग में रंगे हुए थे, लेकिन माता धार्मिक और भारतीय थी।

अंग्रेजों का विश्वास पात्र परिवार होने के बावजूद इनके पूरे स्वतंत्रता आन्दोलन का आरोप लगाकर लाहौर के विद्यालय से निकाल दिया गया। तांगा चालक और श्रमिक के रूप में काम करने को मजबूर ढींगरा ने फिर एक यूनियन बनाना चाहा। मुम्बई में भी काम किया फिर बड़े भाई की सलाह पर 1906 में उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड चले गये। वहां सावरकर और श्यामजी कृष्ण वर्मा के सम्पर्क में आये। सावरकर ने उन्हें कई क्रान्तिकारियों से मिलवाया और हथियार चलाना भी सिखाया। वे इंडिया हाउस नाम के संगठन से भी जुड़ गये, अभिनव भारत मण्डल के सदस्य तो थे ही। 1 जुलाई 1909 को इण्डियन नेशनल एसोसिएशन के लंदन में आयोजित वार्षिक दिवस समारोह में अंग्रेजों के लिए भारतीयों से जासूरी कराने वाले ब्रिटिश अधिकारी सर कर्जन बाइली ने जैसे ही हाल में प्रवेश किया मदन लाल ने चार गोलियां दाग दी। जिसमें बाइली और उनका डाक्टर मारे गये। उन्होंने खुद को गोली मारनी चाही मगर पकड़ लिये गये। 23 जुलाई को पुराने बेली कोर्ट लंदन में केस चला और मृत्युदण्ड दिया गया। 17 अगस्त 1909 को उन्हें फांसी दे दी गयी। ऐसे महान देशभक्त को राष्ट्र शत्-शत् नमन करता है, जिसने आजादी की अलख जगा दी।

गोपाल स्वरुप पाठक

पुण्यतिथि 31 अगस्त

भारत के चौथे राष्ट्रपति रहे गोपाल स्वरुप पाठक का जन्म 26 जनवरी 1896 को उत्तर प्रदेश के बरेली में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित कृष्ण स्वरुप पाठक था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एमए और एलएलबी में डिग्री लेने के बाद 1945 से 1946 तक इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहे।

उनकी योग्यता और कार्य क्षमता को देखते हुए कांग्रेस ने 3 अप्रैल 1966 को राज्यसभा में नामित किया। 13 मई 1967 तक राज्यसभा के सदस्य और केन्द्रीय विधि मंत्री रहे। फिर मैसूर राज्य (कर्नाटक) का राज्यपाल बना दिया गया। मैसूर विश्वविद्यालय, बंगलौर विश्वविद्यालय, कर्णाटक विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रुप में शिक्षा के क्षेत्र में भी इन्होंने अतुलनीय योगदान दिया। मुख्य रुप से निष्पक्षता ही इनकी पहचान रही जिसे देखते हुए 31 अगस्त 1969 को भारत के राष्ट्रपति बने। इनका कार्यकाल 30 अगस्त 1974 तक रहा, इस बीच राज्यसभा के सभापति के रुप में देश के लिए अनेक महत्वपूर्ण मार्च किये। इनकी कोई पार्टी नहीं रही। निर्दल के रुप में इन्हें सर्वसम्मति मिली। गोपाल स्वरुप पाठक का निधन 31 अगस्त 1982 को नई दिल्ली में हुआ।

विरासत व प्राकृतिक सौंदर्य का संगम है ओरछा

मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले में स्थित ओरछा एक ऐसा ऐतिहासिक नगर है, जो समय के साथ भी अपनी भव्यता, संस्कृति और धार्मिक आस्था को आज तक संजोए हुए है। बेतवा नदी के किनारे बसा यह नगर न केवल स्थापत्य और इतिहास के प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र है, बल्कि यह एक शांत, दिव्य और आत्मिक अनुभव भी प्रदान करता है।

ओरछा का ऐतिहासिक परिचय

ओरछा की स्थापना राजा रुद्र प्रताप सिंह ने 16वीं शताब्दी की शुरुआत में की थी। यह नगर बुंदेला राजवंश की राजधानी रहा है। ओरछा का नाम संस्कृत शब्द 'उद्योतका' से निकला माना जाता है, जिसका अर्थ होता है– 'छोटा सा प्रकाश'। हालांकि आज यह स्थान भव्य महलों, मंदिरों और स्मारकों की रोशनी से जगमगाता है।

ओरछा के प्रमुख दर्शनीय स्थल

1. राजा महल- यह महल बुंदेला शासकों का मुख्य निवास स्थान था। इसकी दीवारों और छतों पर की गई चित्रकारी आज भी पूरी तरह सुरक्षित है। यहां की आंतरिक सजावट भगवान राम, कृष्ण और अन्य देवी-देवताओं की कहानियों को चित्रों के माध्यम से जीवंत करती है।

2. जहांगीर महल- यह महल मुगल सम्राट जहांगीर के स्वागत के लिए राजा बीर सिंह देव द्वारा बनवाया गया था। इसकी स्थापत्य कला में मुगल और राजपूत शैली का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है। महल की ऊँचाई से ओरछा और बेतवा नदी का दृश्य अत्यंत मनोहारी लगता है।

3. राम राजा मंदिर- यह भारत का एकमात्र ऐसा मंदिर है जहाँ भगवान राम को राजा के रूप में पूजा जाता है। यह मंदिर वास्तव में एक महल था, जिसे रानी गणेशा ने मंदिर के रूप में परिवर्तित कर दिया था। यहाँ का प्रहरी बदलने की प्रक्रिया और सैन्य सम्मान, इस मंदिर को और भी खास बनाता है।

4. चतुर्भुज मंदिर- यह मंदिर एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है, और इसकी वास्तुकला अत्यंत भव्य है। इसका निर्माण रानी गणेशा ने भगवान राम के लिए करवाया था, लेकिन राम जी की मूर्ति बाद में राम राजा मंदिर में स्थापित हो गई।

5. लक्ष्मीनारायण मंदिर- इस मंदिर में धार्मिक और युद्ध संबंधी दृश्य चित्रित हैं। यह मंदिर कला प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग के समान है।

6. ओरछा के छतरी- बेतवा नदी के किनारे स्थित ये स्मारक बुंदेला राजाओं की याद में बनाए गए थे। यह शांत और मनमोहक स्थल सूर्यास्त के समय विशेष रूप से सुंदर प्रतीत होता है।

साहसिक पर्यटन और प्रकृति

ओरछा में रिवर राफ्टिंग का भी आनंद लिया जा सकता है, विशेषकर मानसून और उसके बाद के महीनों में। आसपास का जंगल और नदी का किनारा ट्रैकिंग, बर्ड वॉचिंग और फोटोग्राफी के लिए बेहतरीन है।

कैसे पहुँचे?

निकटतम रेलवे स्टेशनः झाँसी जंक्शन (18 किमी)

निकटतम हवाई अड्डाः ग्वालियर (120 किमी) या खजुराहो (175 किमी)

सड़क मार्गः झाँसी से टैक्सी या बस द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। ●

पार्लर जैसा ग्लो अब मिलेगा घर पर

सुंदर और गोरी स्किन पाना हर किसी की चाहत होती है। लेकिन बिना केमिकल के स्किन को खूबसूरत बनाना सबसे अच्छा होता है। घरेलू फेस पैक आपकी स्किन को जल्दी और नेचुरल तरीके से साफ और ग्लोइंग बनाते हैं। यह फेस पैक आप आसानी से घर पर बना सकती हैं और यह कुछ ही मिनटों में अपना असर दिखाते हैं। ऐसे में अगर आप भी अपनी स्किन को निखारना चाहती हैं, तो कुछ आसान और असरदार घरेलू नुस्खा अपना सकती हैं। आप भी इनको आजमाकर फर्क साफ महसूस कर सकती हैं।

बेसन और दही का फेस पैक

सबसे पहले बेसन और दही को बराबर मात्रा में लेकर अच्छे से मिक्स कर लें। अब इसको अपने फेस पर लगाएं और 15 मिनट तक सूखने के लिए छोड़ दें। यह फेस पैक न सिर्फ स्किन की गंदगी को साफ करता है, बल्कि इससे आपकी स्किन भी साफ और निखरी हुई नजर आती है।

हल्दी और दूध का फेस पैक

दूध के साथ थोड़ी सी हल्दी मिलाकर पेस्ट बना लें। अब इस पेस्ट को अपने फेस पर लगाएं और 10-15 मिनट के लिए सूखने के लिए छोड़ दें। हल्की आपकी स्किन को नेचुरली तरीके से साफ करने में मदद करती है और इस फेस पैक से दाग-धब्बे भी कम होते हैं।

आलू और नींबू का फेस पैक

आलू को कद्दूकस करके इसका रस निकाल लें। आलू के रस में नींबू का रस मिलाएं और फेस पर अप्लाई करें। फिर 15 मिनट बाद इसको ठंडे पानी से धो लें। यह फेस पैक आपकी स्किन को हल्का गोरा बनाता है और दाग-धब्बों को दूर करता है। क्योंकि नींबू में विटामिन सी पाया जाता है, जोकि हमारी स्किन के लिए काफी फायदेमंद होता है।

शहद और ओट्स का फेस पैक

शहद और ओट्स लेकर पेस्ट बनाएं और इसके 20 मिनट के लिए फेस पर अप्लाई करें। शहद आपकी स्किन को सॉफ्ट व ओट्स से स्किन की डेड सेल्स हटती है और स्किन ग्लोइंग बनती है।

दही और ओट्स का फेस पैक

दही और ओट्स को मिलाकर अपने चेहरे पर 15 मिनट के लिए अप्लाई करें। इस फेसपैक से भी आपकी स्किन साफ होती है। बता दें कि दही में लैक्टिक एसिड पाया जाता है, जोकि स्किन को धीरे-धीरे गोरा बनाता है।

मेथी से घर पर ही बनाएं सीरम

मेथी दाना एक देसी स्किनकेयर हीरो है जिसमें स्किन को हल्का करने और हील करने की गजब की ताकत होती है। इसकी मदद से ना सिर्फ पिग्मेंटेशन धीरे-धीरे कम होती है, बल्कि यह स्किन टोन को इवन लुक देने के साथ-साथ ग्लो भी लेकर आता है। अगर आप इसे अपने स्किन केयर रूटीन में शामिल करना चाहती हैं तो ऐसे में मेथीदाने की मदद से सीरम बनाया जा सकता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको मेथीदाने से बनने वाले सीरम के बारे में बता रहे हैं, जिसकी मदद से आप भी पिग्मेंटेशन से छुटकारा पा सकती हैं-

सीरम बनाने के लिए क्या-क्या चाहिए- 1 बड़ा चम्मच मेथी दाना, 1/2 कप पानी, 1 बड़ा चम्मच एलोवेरा जेल, 2-3 बूंद विटामिन ई ऑयल या 1 कैप्सूल, 1-2 बूंद टी ट्री ऑयल या रोज़हिप ऑयल

सीरम कैसे बनाए- रात को 1 चम्मच मेथी को 1/2 कप पानी में भिगोकर रख दें। 6-8 घंटे बाद ये अच्छे से फूल जाएगी। सुबह उसी पानी के साथ मेथी को 5-7 मिनट धीमी आंच पर उबाल लें। पानी थोड़ा हल्का भूरा और जेल जैसा हो जाएगा। फिर ठंडा होने दें।अब इसे सूती कपड़े या छन्नी से छान लें। जो पानी निकलेगा, वही मेथी का एक्सट्रेक्ट है। अब इसे किसी साफ बोतल या कटोरी में डालें। अब इसमें एलोवेरा जेल, विटामिन ई ऑयल व 1-2 बूंद टी ट्री या रोज़हिप ऑयल डालकर मिक्स कर लें।

सीरम कैसे लगाएं- रात को फेस वॉश के बाद कुछ बूंदें उंगलियों पर लें और चेहरे पर हल्के हाथों से लगाएं। जहां दाग या पिगमेंटेशन है, वहां ज़्यादा फोकस करें। इसे पूरी रात लगे रहने दें और सुबह गुनगुने पानी से चेहरा धो लें। आप इसे हर रात लगा सकती हैं।

सफल आधुनिक डेयरी व्यवसाय प्रबंधन

<u>*डॉ. मानवेन्द्र सिंह*</u>

डेयरी व्यवसाय एक कृषि आधारित महत्वपूर्ण व्यवसाय है जो कि अब यह एक डेयरी उधोग के रूप में दिन प्रतिदिन आगे बढ़ रहा है। इस व्यवसाय को न केवल बडें बल्कि, छाटे और सीमांत किसान, भूमिहीन किसान, बेरोजगार युवक भी अपना रहे है और इन्हीं सभी बहुमुखी प्रयासों के कारण भारत आज दुग्ध उत्पादन में विश्व में सबसे आगे है। अतः डेयरी व्यवसाय से जुडे पशुपालकों को मूलभूत तथ्यों की जानकारी होनी चाहिए जैसे पशुओं की प्रमुख नस्ले, उनकी पहचान एवं उनकी उत्पादन क्षमता का ज्ञान, पशुओं के चयन की विधि एवं चयन का आधार, उतम प्रबंधन इत्यादि।

पशुओं की प्रमुख नस्ले- पशुपालक को अपनी परिस्थितियों, लक्ष्यों, साधनों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप नस्लों का चयन करना चाहिए। हमारे देश की प्रमुख दुग्धी नस्ल साहिवाल, गिर, रेडसिन्धी, डियोनी व थरपारकर है जिनकी उत्पादन क्षमता लगभग 10-15 लीटर प्रति दिन है और भैसों की प्रमुख नस्ल में मुर्राह एवं नीली रावी है जिनका उत्पादन भी लगभग 10-15 लीटर प्रति दिन एवं लगभग सात प्रतिसत वसा युक्त है। संकर नस्लों में एच0 एफ0 संकर और ब्राउनस्विस संकर गाय की उत्पादन क्षमता लगभग 15-25 लीटर प्रति दिन है जबकी जर्सी संकर की 12-16 लीटर प्रति दिन है और यह हमारे वातावरण के लिए काफी हद तक उपयुक्त है।

दुधारू पशुओं का चयन- पशु का थन पूर्ण विकसित होना चाहिए तथा दुग्ध की शिरायें उभरी होनी चाहिए। थन के चारों हिस्से लगभग सामान, आगे का हिस्सा एक जैसे आकार का तथा थन शरीर से अच्छी प्रकार से जुडा होना चाहिए साथ ही टांगे साफ एवं कटावदार होनी चाहिए। गाय में गर्भाधारण काल 280 दिन का एवं भैंस में 310 दिन का होता है लेकिन 5 दिन बढ़-घट सकता है। थन में दुग्ध होने पर फैलने और दुग्ध निकालने पर सिकुड़ने की क्षमता ज्यादा होनी चाहिए। पशु की गर्दन लम्बी तथा पतली होनी चाहिए तथा सिर एवं कन्धे दोनो के साथ अच्छी प्रकार जुडी होनी चाहिए। पशु के रंग और सींग का आकार पशु के नस्ल के अनुरूप होना चाहिए।

पशु के गर्मी में आने के सामान्य लक्षणः

पशु के योनि में थोडी सूजन आ जाना और योनि से पारदर्शी श्लेष्मा का स्राव होना प्रमुख लक्षण है।

पशु का बैचेन और उत्तेजित होकर दूसरे पशु पर चढ़ना तथा अपने ऊपर दूसरे पशु को चढ़ने देना।

भूख में कमी आ जाना, बार-बार पेशाब करना, लगातार आवाज लगाना, दुग्ध कम हो जाना तथा अन्य पशुओं को चाटना इत्यादि।

गर्भाधान का उपयुक्त समयः

गाय में मदकाल का समय 18 से 24 घंटो का होता है, अतः मदकाल के लक्षण आरम्भ होने के 10 से 14 घंटे के बाद कृत्रिम गर्भाधान अथवा साढ़ से ससंग करा देना चाहिए जिससे उन्नत गर्भाधान परिणाम प्राप्त हो सके लेकिन भैंस में मदकाल आरम्भ होने के 14 से 20 घंटे के बीच गर्भाधान कराना चाहिए।

कृत्रिम गर्भाधान (ए0 आई0)

प्राकृतिक गर्भाधान पद्धति की अपेक्षा ए0 आई0 अधिक लाभप्रद है अतः पशुपालक को ए0 आई0 से पशु को गाभिन कराना चाहिए, क्योंकि यह परीक्षित सांड का वीर्य होता है, रोगों के संचरण की संभावना कम होती है, गर्भाधान की दर ज्यादा तथा कम खर्चीला होता है।

गर्भाधान की जाँचः

पशु के गर्भ धारण करने पर, मद में आना समाप्त हो जाता है। गर्भधारण करने के 60 दिन बाद गर्भ की पुष्टि सुयोग्य पशुचिकित्सक से करा लेनी चाहिए। असके अलावा गर्भाधारण के सामान्य लक्षण जैसे- पेट का आकार बढ़ जाना, स्तन ग्रन्थियों का बढ़ जाना, पशु के चमड़े में चिकनापन जैसे बदलाव आना, पशु द्वारा उच्छाल-कुद कम करना इत्यादि है।

प्रजनन योग्य (हीफर) बछड़ीः

सामान्यतः देशी नस्ल की बाछी 30 से 36 महीने में, विदेशी नस्ल 18-24 महीनें में तथा संकर नस्ल की बाछी 20-24 महीने में परिपक्व यानी पौढ़ हो जाती है और गर्मी में आने लगती है, साथ ही 200-250 किलोग्राम शरीर वजन भी प्राप्त कर लेती है। लेकिन आम तौर पर पशु को प्रथमवार गर्मी में आने पर गाभिन नहीं कराना चाहिए। जब दुसरी बार गर्मी में आये तो गाभिन करा देना चाहिए।

पशुओं का सामान्य प्रबन्धनः

दुग्ध दोहन प्रबन्धन -

दुधारू पशु से दुग्ध दोहन मशीन द्वारा एवं हाथ द्वारा करना चाहिए।

पशु का दुग्ध दोहन एक निश्चित अन्तराल पर दो या तीन बार नियमित रूप से करना चाहिए।

दुग्ध दोहन से पूर्व पशु को मारना या उत्तेजित नहीं करना चाहिए।

दुग्ध का दोहन पूरे हाथ से बराबर दबाव देकर करना चाहिए तथा अन्त में थन निचोड़ने की पद्धति से समाप्त करना चाहिए ताकि थन से अतिरिक्त दूध निकाला जा सके।

बिना दूध वाले गाभिन या सूखे पशुओं का प्रबन्धन -

यदि गाय गाभिन है और दूध भी दे रही हो तो प्रसव के 50-60 दिन पहले दूध दोहना बन्द कर देना चाहिए।

पशु का दोहन अचानक बन्द नही करना चाहिए बल्कि दिन में एक बार दोहन कर, एक

दिन अन्तराल कर अथवा आंशिक दोहन कर बन्द करना चाहिए।

गाभिन तथा दुध देने वाले पशु को भरपेट हरा चारा एवं संतुलित आहार देना चाहिए ताकि पशु के स्वास्थ पर बिना कुप्रभाव डाले बच्चे का भी समूचित विकास हो सके।

पशु ब्यॉने की तैयारी

पशु ब्यॉने का स्थान सूखा, शांत, सुखद, हवादार, अच्छी विछावन, सतह फिसलन रहित होना चाहिए और अधिक ठंढ़ एवं गर्म मौसम से बचाव का उतम प्रबंधन के साथ-साथ संक्रमण रहित होना चाहिए। गाभिन गाय पर निरन्तर निगरानी रखनी चाहिए। प्रसव के समय निम्न लक्षण दिखाई पड़ते है।

योनी में सूजन, आयन का बड़ा होना एवं थनाग्र फूल जाना, पशु बेचैन दिखता है।

पूँछ और पिनबोन(पुठा) के पास की मांसपेशी ढ़ीली हो जाना है।

ब्यॉने के तुरन्त बाद गुनगुना गर्म पानी पीने को दे तथा अपरिकृत चीनी (शक्कर) मिश्रित चावल खिलाए।

यदि प्रसव के 12-14 घंटे के अंदर जेर नहीं गिरती है तो पशुचिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए।

दूध देनेवाले पशुओं की सुरक्षा एवं प्रबंधनः

दुधारू पशु के थन का आकार, समानता एवं उसके दूध का नियमित निरीक्षण करना चाहिए। दोहन का कार्य नियमित अंतराल पर आवश्यकतानुसार दो या तीन बार करना चाहिए।

थनैला रोग से मुक्त स्वस्थ्य पशु का दोहन पहले उसके बाद पूर्व में इस रोग से ग्रसित पशु को और अंत में असमान्य दूध देने वाले पशु का दोहन करना चाहिए।

दूधारू पशु को प्रथम तीन महीनों में प्रर्याप्त उर्जायुक्त आहार देना चाहिए।

गर्मी के मौसम में पूरे आहार खासकर दानें को दिन और रात में विभाजित कर खिलाने से दूध उत्पादन में सुधार आता है।

गर्मी के मौसम में पशु को इच्छानुसार स्वच्छ एवं ताजा पानी पिलाना चाहिए।

400 कि0 ग्रा0 वजन वाले और 20 कि0 ग्रा0 प्रतिदिन दूध देने वाले पशु को 30 से 40 कि0 ग्रा0 हरा चारा, 6.7 कि0 ग्रा0 खनिज लवण युक्त दाना और 4 कि0 ग्रा0 सूखा चारा खिलाना चाहिए।

नवजात बछड़े की देखभाल और प्रबंधनः

बछड़े के जन्म के तुरन्त बाद बछड़े के नाक और मुँह से श्लेष्मा साफ कर देनी चाहिए जिससे बछड़ा आसानी से सांस ले सके और इसके बाद बछडे को चाटने हेतु गाय के पास रखना चाहिए। बछड़े के शरीर को सूखे कपड़े या बोरी से साफ कर देना चाहिए। बछड़े के नाभी को शरीर से 4 से0मी0 की दूरी पर निसंक्रमित ब्लेड या कैंची से काटकर टिंचर आयोडिन लगा देना चाहिए। बछड़े को जन्म के आधे घंटे के अंदर गाय का पहला गाढा पीला दूध देना चाहिए। यह बछड़े की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। बछड़े को एक दिन में शरीर के भार के 1द10 वाँ हिस्से के बराबर पहला गाढा पीला दूध दो या तीन बार में पिलाना चाहिए।

यदि बछड़ा कमजोर है, खून की कमी है तो लोहा, विटामिन ए, डी, ई को मुँह से या सूई द्वारा देना चाहिए।

मैस्टाइटिस युक्त दूध बछड़े को न दें।

टीका सारणी को अपनाऍ।

स्वच्छ दूध उत्पादन प्रबंधनः

पशु का आवास मक्खी, रोडेन्ट, कृमि, धूल, धुआँ, खाद, गोबर से रहित होना चाहिए।

पशु के खडे होने वाले स्थान को निसंक्रामक, अमोनिया कम्पाउड के घोल से करना चाहिए।

दूध दोहने वाले बर्त्तन को दोहन से पहले और बाद में सोडियम हाइड्रोक्लोराइड या आइडोफोर से साफ कर अच्छी प्रकार से धूप में सुखा लेना चाहिए। मिट्टी और राख का उपयोग बर्तन साफ करने में नही करना चाहिए।

दुध दोहन के पहले और बाद में पशु के थन को गुनगुने पानी में, एक चुटकी पोटाशियम परमैगनेट ड़ालकर धो देना चाहिए और इसके बाद सूखे कपड़े से थन को पोछ देना चाहिए।

दूध दोहन से पूर्व दूध की दो या तीन बूंद प्रत्येक थन से बाहर निकाल कर फेक देनी चाहिए। इस दूध से हाथ नही धोनें चाहिए।

पशु आहार और पोषणः-

सम्पूर्ण आहार बनाने में स्थानीय रूप से उपलब्ध फसल अवशेष, कृषि उधोग के उप-उत्पाद और अन्य बचे पदार्थ जो पशुओं के लिए उपयुक्त हो, उसका उपयोग किया जा सकता है। आम तौर पर मोटे चारे और दाने का अनुपात 60:40 का होता है लेकिन उच्च दुग्ध उत्पादक पशु में चारें और दानें का अनुपात 50:50 प्रर्याप्त होता है।

डेयरी पशुओं के दानें के सुत्रीकरण में प्रोटीन, उर्जा और खनिज तथा विटामिन का संतुलित संयोजन होता है। व्यॉंत के आरम्भ और बाद में तथा गर्भाधान के अन्तिम दिनों में उर्जा की आपूर्ति की विशेष आवश्यकता होती है। पशु पोषण की पोषण तकनीकी में बाई पास बसा तथा बाई पास प्रोटीन प्रमुख है।

बाई पास वसा तकनीकी में लिपिड को कुछ भौतिक और रसायनिक तत्वों के प्रयोग द्वारा सुरक्षित रखा जाता है। ये लिपिड आमाशय द्वारा सुरक्षित रखा जाता है। इसका रूमेन में अपघटन या जैव हाइड्रोजिनेशन नहीं होता है, ये आहार नाल के निम्न भाग में जाकर पच जाता है जिससे उर्जा का संघ्नता एवं दूध में वसा की मात्रा बढ़ जाती है।

बाई पास प्रोटीन तकनीकी में, जब आमाशय अवक्रमण से उच्च अवक्रमित प्रोटीन संरक्षित की जाती है तो प्रोटीन आमाशय से बाई पास हो जाती है और निचले भाग में अधिक अमीनों एसिड की विविध उतकों के लिए अमीनों एसिड आपूर्ति होती है।

अतः पशुपालकों को सफल पशुपालन व्यवसाय हेतू सुयोग्य पशु का चयन कर उपरोक्त तथ्यों पर ध्यान देते हुए प्रबंधन करना चाहिए जिससे कम से कम हानी एवं ज्यादा से ज्यादा लाभ हो सके।

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी

गौ-आधारित स्वरोजगार : स्थानीय गौ वंश संरक्षण का सशक्त माध्यम

डा. सौरभ एवं डा. आनन्द सिंह

बुंदेलखंड की धरती न केवल कृषि और विशिष्ट गौ वंश की धनी है, बल्कि यहां की लोक कला और हस्तशिल्प परंपरा भी सदियों पुरानी है। बुंदेलखंड, अपनी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था और विशिष्ट गौ वंश की धरोहर के लिए जाना जाता है। हालांकि, अन्ना प्रथा और बाहरी नस्लों के बढ़ते प्रचलन के कारण, यहां के स्थानीय गौ वंश पर अस्तित्व का संकट मंडरा रहा है। इस चुनौतीपूर्ण परिदृश्य में, स्थानीय गौ-आधारित स्वरोजगार एक आशा की किरण के रूप में उभर सकता है। यह न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर सकता है, बल्कि स्थानीय गौ वंश के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।गौ-आधारित स्वरोजगार बुंदेलखंड में स्थानीय गौ-वंश के संरक्षण का एक सशक्त माध्यम है। यह न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति प्रदान कर सकता है और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर सकता है, बल्कि स्थानीय गौ-वंश के आर्थिक महत्व को बढ़ाकर उनके संरक्षण को भी सुनिश्चित कर सकता है। सरकार, किसानों, गैर-सरकारी संगठनों और स्थानीय समुदायों को मिलकर इस दिशा में काम करने की आवश्यकता है ताकि बुंदेलखंड की इस अनमोल धरोहर को बचाया जा सके और क्षेत्र के लोगों के लिए समृद्धि के नए रास्ते खुल सकें। स्थानीय गौ वंश को बोझ समझने के बजाय, उन्हें स्वरोजगार के अवसर के रूप में देखना और उनकी क्षमता का उपयोग करना ही इस क्षेत्र के भविष्य के लिए सही कदम है। जब स्थानीय गौ वंश आर्थिक रूप से लाभकारी साबित होते हैं, तो किसान उन्हें छोड़ने के बजाय उनकी देखभाल करने और उनकी संख्या बढ़ाने के लिए प्रेरित होंगे। इससे बुंदेलखंड में अन्ना प्रथा को कम करने में मदद मिलेगी।

गौ-वंश जैविक खाद और उर्वरक का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं, जो जैविक कृषि को बढ़ावा देते हैं। जैविक कृषि पर्यावरण के अनुकूल है और मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने में मदद करता है, जिससे दीर्घकालिक कृषि स्थिरता सुनिश्चित होती है। बुंदेलखंड के स्थानीय गौ वंश, अपनी विशिष्ट अनुकूलन क्षमता और कम रखरखाव की आवश्यकता के कारण, स्वरोजगार में इन नस्लों के महत्व को पहचानकर और उनकी विशेषताओं का लाभ उठाकर, ग्रामीण युवा और किसान आत्मनिर्भर बन सकते हैं, साथ ही गौ वंश के संरक्षण में भी योगदान दे सकते हैं। जो किसान स्थानीय गौ वंश की अच्छी नस्लों का पालन करते हैं, वे उच्च गुणवत्ता वाले सांडों और बछियों का प्रजनन करके उन्हें अन्य किसानों को बेच सकते हैं। इसके लिए उन्हें नस्ल सुधार के वैज्ञानिक तरीकों का ज्ञान होना आवश्यक है, जिसके लिए सरकार द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं। स्वरोजगार के अवसर स्थानीय नस्लों की बेहतर नस्लों के प्रजनन और पालन को प्रोत्साहित करेंगे, जिससे उनकी आनुवंशिक गुणवत्ता में सुधार होगा। स्थानीय गौ-आधारित स्वरोजगार पारंपरिक पशुधन प्रबंधन तकनीकों और स्थानीय ज्ञान को जीवित रखने में मदद करता है, जो इन नस्लों के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। यह ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करता है, जिससे वे पलायन करने के बजाय अपने गांव में ही रहकर आत्मनिर्भर बन सकते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं।

विभिन्न जैविक कृषि आदानों के निर्माण के अतिरिक्त स्थानीय गौ आधारित संसाधनों का उपयोग करके हस्तशिल्प का निर्माण और उसका विपणन, स्वरोजगार के एक नए आयाम को खोल सकता है। यह न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा, बल्कि महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करेगा और स्थानीय गौ वंश के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। गौ आधारित हस्तशिल्प, कला और अर्थव्यवस्था का संगम

है। स्थानीय गौ वंश विभिन्न प्रकार के संसाधन प्रदान करते हैं जिनका उपयोग अद्वितीय और आकर्षक हस्तशिल्प बनाने में किया जा सकता है। गोबर, जिसे अक्सर अपशिष्ट माना जाता है, वास्तव में एक बहुमुखी कच्चा माल है। इसे सुखाकर और संसाधित करके विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ बनाई जा सकती हैं, जैसे :

दीवार पर सजावट के सामानः गोबर से सुंदर पेंटिंग, मूर्तियाँ, नामपट्टिकाएं, पारंपरिक रूपांकनों से सजे दीवार पैनल, स्मृति चिन्ह आदि बनाए जा सकते हैं।

दीये और लैंपः गोबर से बने दीये और लैंप न केवल पर्यावरण के अनुकूल होते हैं, बल्कि ग्रामीण स्पर्श भी प्रदान करते हैं।

गमले और प्लांटर्सः गोबर के गमले पौधों के लिए प्राकृतिक और स्वस्थ वातावरण प्रदान करते हैं।

धूप और अगरबत्ती व स्टैंडः गोबर से बने धूप और अगरबत्ती व इनके स्टैंड पारंपरिक और पर्यावरण के अनुकूल एवं प्लास्टिक के उत्पादों का बेहतर विकल्प हैं।

स्थानीय डिजाइन और तकनीकों का उपयोग करके इन उत्पादों को विशिष्ट पहचान दी जा सकती है। स्थानीय रूप से निर्मित गौ आधारित हस्तशिल्प में विपणन की अपार संभावनाएं हैं। सही रणनीति और मंच के माध्यम से, इन उत्पादों को स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक पहुंचाया जा सकता है।

1. **स्थानीय बाजार और मेलेः** ग्रामीण हाट, स्थानीय मेले और प्रदर्शनियाँ इन उत्पादों को बेचने के लिए उत्कृष्ट मंच प्रदान करते हैं। यह स्थानीय खरीदारों और पर्यटकों तक पहुंचने का सीधा तरीका है।

2. **सरकारी और गैर-सरकारी प्रदर्शनियाँः** विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संगठन हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए प्रदर्शनियाँ आयोजित करते हैं। इन मंचों पर भाग लेकर व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुंचा जा सकता है।

3. **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर** बेचने के लिए शक्तिशाली उपकरण हैं। ग्रामीण कारीगरों को सीधे वैश्विक ग्राहकों से जुड़ने का अवसर

प्रदान करते हैं।

4. **पर्यटन उद्योगः** बुंदेलखंड में पर्यटन को बढ़ावा देकर, स्थानीय हस्तशिल्प उत्पादों को पर्यटकों के बीच लोकप्रिय बनाया जा सकता है। पर्यटक अक्सर स्मृति चिन्ह के रूप में स्थानीय और अद्वितीय वस्तुओं की तलाश में रहते हैं।

5. **सहकारी समितियाँ और स्वयं सहायता समूहः** ग्रामीण कारीगर सहकारी समितियाँ और स्वयं सहायता समूह बनाकर अपने उत्पादों के विपणन और सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ा सकते हैं।

गौ-आधारित हस्तशिल्प निर्माण और विपणन ग्रामीण अर्थव्यवस्था और विशेष रूप से महिलाओं की आर्थिक उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेषकर उन लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करता है जिनके पास कृषि के अलावा आय का कोई अन्य स्रोत नहीं है। हस्तशिल्प निर्माण अक्सर महिलाओं के लिए एक उपयुक्त व्यवसाय साबित होता है, जिसे वे घर से या छोटे समूहों में आसानी से कर सकती हैं। यह उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाता है और परिवार की आय में योगदान करने का अवसर प्रदान करता है। हस्तशिल्प निर्माण पारंपरिक कला और कौशल को जीवित रखता है और ग्रामीण लोगों को नए कौशल सीखने का अवसर प्रदान करता है, जिससे उनकी रोजगार क्षमता बढ़ती है। हस्तशिल्प उत्पादों को बेचकर ग्रामीण लोग अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं, जिससे उनका जीवन स्तर बेहतर होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ने से शहरों की ओर पलायन करने की आवश्यकता कम हो जाती है।

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से गौ-आधारित हस्तशिल्प निर्माण स्थानीय गौ वंश के संरक्षण में योगदान देता है। जब गौ वंश के विभिन्न उत्पादों का उपयोग करके आय अर्जित की जा सकती है, तो किसानों के लिए ये पशु बोझ नहीं बल्कि आर्थिक संपत्ति बन जाते हैं। इससे उन्हें छोड़ने की प्रवृत्ति कम होती है। गौ आधारित हस्तशिल्प निर्माण और उसका प्रभावी विपणन बुंदेलखंड के ग्रामीण क्षेत्रों और महिलाओं के लिए आर्थिक उन्नति का एक शक्तिशाली माध्यम बन सकता है। यह न केवल अद्वितीय और पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों का निर्माण करता है, बल्कि स्थानीय कला और संस्कृति को भी बढ़ावा देता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह स्थानीय गौ वंश के आर्थिक मूल्य को बढ़ाकर उनके संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सरकार, गैर-सरकारी संगठनों, कारीगरों और स्थानीय समुदायों को मिलकर इस दिशा में काम करने की आवश्यकता है ताकि बुंदेलखंड की इस बहुमूल्य धरोहर को बचाया जा सके और क्षेत्र के लोगों के लिए समृद्धि और आत्मनिर्भरता के नए रास्ते खुल सकें।

बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विवि, बाँदा

अगस्त में व्रत त्योहार की बहार

अगस्त के महीने में कई व्रत त्योहार मनाए जाने हैं। अगस्त महीने के शुरुआत सावन मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को ही रही है। इस दिन चित्रा नक्षत्र का संयोग होगा, जबकि महीने का समापन भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को ज्येष्ठा नक्षत्र के संयोग में होगा। अगस्त का महीना व्रत त्योहार के लिहाज से बेहद अहम रहने वाला है। अगस्त में रक्षाबंधन, तीज, जन्माष्टमी और गणेश चतुर्थी जैसे महत्वपूर्ण त्योहार मनाए जाएंगे, जिनका सनातन धर्म में विशेष महत्व है। इसके साथ ही अगस्त में श्रावण पुत्रदा एकादशी, अजा एकादशी और शिव-पार्वती को समर्पित प्रदोष व्रत रखा जाएगा। ऐसे में आइये जानते हैं अगस्त में रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या और प्रदोष की तिथि कब हैं।

पवित्रा/पुत्रदा एकादशी

सावन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को पवित्रा एकादशी के नाम से जाना जाता है, जिसे पुत्रदा एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। संतान की प्राप्ति के लिए इसका व्रत अहम माना जाता है। पवित्रा एकादशी 5 अगस्त, दिन मंगलवार को मनाई जाएगी। इस दिन सावन मास का अंतिम मंगला गौरी व्रत भी रखा जाएगा।

बुध प्रदोष व्रत

भगवान शिव को समर्पित प्रदोष व्रत अगस्त महीने के पहले सप्ताह में रखा जाएगा। 6 अगस्त, दिन बुधवार को सावन मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि है। इस दिन प्रदोष व्रत रखा जाएगा। चूंकि इस दिन बुधवार है इसलिए इसे बुध प्रदोष व्रत भी कहा जाएगा। इस दिन भगवान शिव और मां पार्वती का पूजन किया जाता है।

सावन पूर्णिमा

सावन मास की पूर्णिमा तिथि का बड़ा महत्व है। जहां पूर्णिमा तिथि भगवान विष्णु को समर्पित है वहीं सावन मास में भोलेबाबा की पूजा होती है। ऐसे में सावन पूर्णिमा तिथि पर भगवान विष्णु महेश दोनों का आशीर्वाद मिलता है। इस दिन व्रत रखने से दुख दूर होते हैं और सुख शांति मिलती है। इस साल सावन पूर्णिमा का व्रत 9 अगस्त को रखा जाएगा।

रक्षाबंधन

बहन और भाई के प्यार का प्रतीक रक्षाबंधन का त्योहार सावन मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। उदया तिथि के अनुसार इस साल राखी का त्योहार 9 अगस्त, शनिवार को मनाया जाएगा। रक्षाबंधन पर इस बार भद्रा का साया नहीं रहने वाला है। राखी पर 9 अगस्त को सुबह

से दोपहर तक भद्रा का कोई मुहूर्त नहीं है। इसके साथ ही राखी पर ही अमरनाथ यात्रा भी समाप्त होगी।

कजरी तीज

भाद्रपद महीने के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि पर कजरी तीज का व्रत रखा जाता है। माना जाता है कि कजरी तीज का व्रत मां पार्वती ने शिवजी को पाने के लिए किया था। इसलिए कुंवारी कन्याएं इस दिन व्रत रखती हैं। वहीं सुहागिन महिलाएं भी अपने पति की सलामती के लिए कजरी तीज का व्रत रखती हैं। इस बार कजरी तीज 12 अगस्त को मनाई जाएगी।

जन्माष्टमी

कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि 15 अगस्त को देर रात 12 बजे के बाद शुरू होगी और 16 अगस्त को रात 10.29 बजे तक रहेगी। ऐसे में 16 अगस्त को जन्माष्टमी मनाई जाएगी। जहां 15 अगस्त को स्मार्थ और 16 अगस्त को वैष्णव जन्माष्टमी का व्रत रखेंगे।

अजा एकादशी

अजा एकादशी भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि को मनाई जाती है। चूंकि एकादशी तिथि भगवान विष्णु को समर्पित होती है ऐसे में इस दिन व्रत रखने और श्रीहरि विष्णु की पूजा करने से सभी संकट दूर होते हैं। सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। इस साल अजा एकादशी व्रत 19 अगस्त को रखा जाएगा।

प्रदोष व्रत

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि पर अगस्त महीने का दूसरा प्रदोष व्रत रखा जाएगा, जो शिव-पार्वती को समर्पित होता है। अगस्त महीने का दूसरा प्रदोष व्रत 20 अगस्त, बुधवार को रखा जाएगा। इस दिन बुधवार होने की वजह से इसे बुध प्रदोष व्रत के नाम से जाना जाएगा। यानी अगस्त महीने में दोनों बुध प्रदोष व्रत ही हैं।

मासिक शिवरात्रि

प्रत्येक महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मासिक शिवरात्रि मनाई जाती है। यह दिन भगवान शिव की पूजा करने के लिए अति उत्तम होता है। मासिक शिवरात्रि का व्रत करने से सभी तरह की बाधाएं दूर होती हैं और भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है। अगस्त की मासिक शिवरात्रि का व्रत 21 अगस्त को रखा जाएगा।

भाद्रपद अमावस्या

भाद्रपद मास की अमावस्या तिथि जिसे पिठोरी अमावस्या और कुशाग्रहणी अमावस्या भी कहा जाता है, यह हिंदू धर्म की विशेष तिथि है। अमावस्या तिथि पर पितरों का पूजन, तर्पण, श्राद्ध आदि किया जाता है। इसके साथ ही अमावस्या तिथि पर पवित्र नदियों में स्नान, दान करने का बड़ा महत्व है। पिठोरी अमावस्या 22 अगस्त को मनाई जाएगी। क्योंकि सूर्योदय कालीन अमावस्या तिथि नहीं लग रही है जबकि 23 अगस्त को कुशाग्रहणी अमावस्या मनाई जाएगी क्योंकि इस दिन सूर्योदय कालीन अमावस्या तिथि है।

हरतालिका तीज

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को हरतालिका तीज मनाई जाती है। इस दिन महिलाएं अपने वैवाहिक जीवन में सुख शांत के लिए व्रत रखती हैं और भगवान शिव और मां पार्वती की पूजा करती हैं।

इसके साथ ही अविवाहित कन्याएं भी मनचाहे वर के लिए यह व्रत रखती हैं। इस साल हरतालिका तीज का व्रत 26 अगस्त को रखा जाएगा।

गणेश चतुर्थी

गणेश चतुर्थी भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाई जाती है। माना जाता है कि भाद्रपद मास की चतुर्थी तिथि को वेदव्यासजी के कहने पर गणपति महाराज ने महाभारत को लिपिबद्ध करना शुरू किया था। इस साल गणेश चतुर्थी 27 अगस्त को मनाई जाएगी। इस दिन सिद्धि विनायक व्रत भी रखा जाएगा।

जुलाई मास का राशिफल

पं0 राम कृपाल शुक्ल

धर्मशास्त्राचार्य, पुराणेतिहासाचार्य एवं कर्मकाण्ड कोविद

मो. 9415820597

मेष- आपका यह माह सामान्यतः अच्छा है। माह के पूर्वार्ध में समर्थवान लोगों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नया कार्य व्यापार शुरू कर सकते हैं। स्थापित व्यवसाय के क्षेत्र में बढ़ोत्तरी का योग है। माह का उत्तरार्ध मनोरंजन, लाभ और सुख की दृष्टि से अच्छा है। कभी-कभी बाधाओं से सामना करेंगे। किन्तु कुल मिलाकर समय अच्छा रहेगा। दिनांक 3, 12, 21, 29 नेष्ट हैं।

वृष- आपका यह माह मध्यम है। संघर्ष की अधिकता से परेशान रहेंगे। अतः कार्यक्षेत्र में संतुलन बनाकर चलना ठीक रहेगा। सहायकों और वरिष्ठजनों का परामर्श सफलतादायक होगा। इस माह में आर्थिक समस्याएं भी तंग कर सकती हैं। ऋण लेने व देने से बचें। सूझबूझ से खर्च करें। फिर भी किसी प्रकार के तकरार से बचें। सावधान रहें। व्यापार मन्दा रहेगा। दिनांक 12, 13, 14, 15 नेष्ट हैं।

मिथुन- आपका यह माह बदलाव लेकर आ रहा है। माह का प्रथम सप्ताह कुछ अलग ही है। सोच-समझकर निर्णय लेना होगा। घर गृहस्थी के मामले उलझ सकते हैं। व्यक्तित्व में अचानक बदलाव आ सकता है। आपका विश्वास बढ़ सकता है और आप नए उत्साह के साथ विवेकशील व्यक्ति के रूप में उभर सकते हैं। दौड़-धूप बनी रहेगी। दिनांक 9, 17, 23, 25 नेष्ट हैं।

कर्क- आपका यह माह सामान्य है। सभी प्रकार का लाभ होगा। धनागम होने से प्रसन्न रहेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सतसंगति से विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। बौद्धिक प्रगति का योग है। शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों को अच्छे मार्गदर्शक मिलेंगे। दाम्पत्य जीवन सन्तोषप्रद रहेगा। व्यापारियों को लाभ होगा। बाहर घूमने की योजना बन सकती है। यात्रा सुखद रहेगी। दिनांक 7, 14, 22, 28 नेष्ट हैं।

सिंह- आपका यह माह मिलाजुला है। कुछ सफलता और कुछ विफलता आपके सामने है। धन का निवेश विफलताकारक है। शेयर, सट्टा, लाटरी से दूर रहें। घर-बाहर दोनों जगह संघर्ष है। यहां विफलता की सम्भावना ज्यादा है। अतः सावधानी बरतें। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। कमर से परेशान हो सकते हैं। व्यापार का क्षेत्र सफलतादायी है। सामाजिक कार्यों में सफलता का योग है। दिनांक 2, 9, 19, 26 नेष्ट हैं।

कन्या- आपका यह माह सामान्य है। पहले से चली आ रही समयाएं आपके सामने रहेंगी। मन अशान्त रहेगा। अच्छा यह होगा कि मित्र आपकी खोज खबर लेंगे और सहयोगी बनेंगे। विरोधी ठण्डे पड़ जायेंगे। हर क्षेत्र में आपके सहायक बढ़ेंगे। व्यापार में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। आप भय और असमंजस से ग्रस्त रहेंगे। यात्रा से लाभ होगा। आर्थिक लेन-देन से बचना चाहिए। स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा। दिनांक 2, 8, 12, 18 नेष्ट हैं।

तुला- आपका यह माह सामान्यतः अच्छा है। सहयोगी और साझेदार दानों रहेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। कार्यक्षेत्र में चल रहे प्रयास सफल होंगे। विवादास्पद स्थितियां सामने आएंगी। व्यय अधिक होगा। जीवन में आवश्यक वस्तुओं की मांग बढ़ेगी। कानूनी मामले भी सामने रहेंगे। दिनांक 8, 19, 23, 29 नेष्ट हैं।

वृश्चिक- आपका यह माह मिलाजुला प्रभाव वाला है। कार्यक्षेत्र यथावत रहेगा। आत्मबल बना रहेगा। कर्मठता में कुछ वृद्धि होगी। आर्थिक प्रगति भी हो सकती है। नये प्रयास सफल होंगे। रुका हुआ धन परिश्रम के बाद ही निकल पाएगा। परिवार का सहयोग मिलता रहेगा। स्वास्थ्य बाधा सुनिश्चित है। साझेदारी के काम तनाव दे सकते हैं। सहयोगियों से मतभेद बढ़ सकता है। दिनांक 7, 8, 15, 16 नेष्ट हैं।

धनु- आपका यह माह मध्यम है। प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष करना पड़ेगा। आत्मबल की क्षीणता से मन खिन्न रहेगा। स्वास्थ्य प्रभावित रह सकता है। नेत्र पीड़ा और उदर विकार से त्रस्त हो सकते हैं। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। शेयर, लाटरी में निवेश से बचें। पर्याप्त भ्रमण करना पड़ सकता है। अर्थ का आगमन सामान्य है। घरेलू जीवन अवस्थित रहेगा। रुके हुए कार्य पूरे हो सकते हैं। दिनांक 4, 17, 24, 26 नेष्ट हैं।

मकर- आपका यह माह मिलाजुला प्रभाव वाला है। अधिक परिश्रम करेंगे तभी कुछ आशा कर सकते हैं। जीविका का क्षेत्र सामान्य फल देगा। अध्ययन-अध्यवसाय करने वालों के लिए माह सामान्य है। सामाजिक कार्य करने वाले हतोत्साहित रहेंगे। आर्थिक उपार्जन कमजोर रहेगा। समर्थवान का सहयोग प्राप्त हो सकता है। स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा। स्नायु रोग परेशान कर सकते हैं। दिनांक 1, 9, 18, 28 नेष्ट हैं।

कुम्भ- आपका यह माह अच्छा है। चतुर्दिक प्रगति कर सकते हैं। ग्रहों की कृपा दृष्टि बनी रहेगी। शत्रु पक्ष कमजोर होगा। सभी निर्णय सोच-विचार कर लें। वाणी की सौम्यता सफलता में सहायक है। किसी भी प्रकार का जोखिम न उठावें, हानि होगी। मासान्त में धन व्यय की अधिकता रहेगी। कोई नया काम एकाएक शुरू करना पड़ सकता है। परिवार अनुकूल रहेगा। दिनांक 1, 7, 14, 20 नेष्ट हैं।

मीन- आपका यह माह कम ठीक है। कार्यक्षेत्र में सतर्क रहना होगा। आपके ग्रह ऐसे हैं कि आप अपना स्थान गवां सकते हैं। आपके सहयोगी आपसे असंतुष्ट हो सकते हैं और आपके विरोध में काम कर सकते हैं। परिस्थितियां जटिल चल रही हैं। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। किसी रोग के शिकार हो सकते हैं। आर्थिक निवेश कर सकते हैं। दिनांक 3, 9, 16, 22 नेष्ट हैं।

प्रकृति का वरदानः मिलेट्स और स्वास्थ्य

डॉ. पंकज कुमार ओझा

प्रकृति ने हमें अनगिनत उपहार दिए हैं, और मिलेट्स (मोटा अनाज) उनमें से एक अनमोल रत्न है। बाजरा, ज्वार, रागी, सांवा, कोदो, कुटकी जैसे मिलेट्स न केवल पोषण से भरपूर हैं, बल्कि ये हमारे स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और पर्यावरण को संरक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्राचीन काल से भारतीय खान-पान का अभिन्न हिस्सा रहे मिलेट्स आज आधुनिक दुनिया में 'सुपरफूड' के रूप में उभरे हैं। यह लेख मिलेट्स के पोषण मूल्य, स्वास्थ्य लाभ, और इनके दैनिक जीवन में उपयोग पर विस्तार से चर्चा करता है।

मिलेट्स क्या हैं?

मिलेट्स छोटे दाने वाले अनाज हैं, जो ग्रामीण भारत और विश्व के कई हिस्सों में प्रमुख भोजन के रूप में उपयोग किए जाते हैं। ये अनाज सूखा सहन करने की क्षमता, कम पानी की आवश्यकता और कठिन परिस्थितियों में उगने की विशेषता के लिए जाने जाते हैं। भारत में मिलेट्स को 'श्री अन्न' के रूप में सम्मानित किया गया है, और 2023 को संयुक्त राष्ट्र ने 'अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष' घोषित किया था, जिसने इनके महत्व को वैश्विक स्तर पर उजागर किया।

मिलेट्स का पोषण मूल्य

मिलेट्स को पोषण का पावरहाउस कहा जाता है, क्योंकि ये विटामिन, खनिज, फाइबर, और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं। कुछ प्रमुख मिलेट्स और उनके पोषण लाभ इस प्रकार हैंः

1. बाजरा-

- आयरन और मैग्नीशियम से भरपूर, जो रक्ताल्पता और हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

- ग्लूटेन-मुक्त होने के कारण यह सेलियक रोगियों के लिए उपयुक्त है।

2. ज्वार -

- उच्च फाइबर और प्रोटीन सामग्री, जो पाचन और मांसपेशियों के लिए फायदेमंद है।

- इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट सूजन को कम करते हैं।

3. रागी-

- कैल्शियम का बेहतरीन स्रोत, जो हड्डियों और दांतों को मजबूत करता है।

- डायबिटीज रोगियों के लिए लाभकारी, क्योंकि यह रक्त शर्करा को नियंत्रित करता है।

4. सांवा-

- कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स के कारण मधुमेह रोगियों के लिए आदर्श।

- पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में सहायक।

5. कोदो और कुटकी-

- फाइबर और बी-विटामिन से भरपूर, जो ऊर्जा और तंत्रिका तंत्र को बढ़ावा देते हैं।

मिलेट्स के स्वास्थ्य लाभ

मिलेट्स न केवल पोषक तत्वों का खजाना हैं, बल्कि ये कई स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने में भी मदद करते हैं। कुछ प्रमुख लाभ इस प्रकार हैंः

1. मधुमेह नियंत्रणः मिलेट्स में कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है, जो रक्त शर्करा को धीरे-धीरे बढ़ाता है। रागी और सांवा जैसे मिलेट्स डायबिटीज रोगियों के लिए विशेष रूप से लाभकारी हैं।

2. हृदय स्वास्थ्यः मिलेट्स में मौजूद मैग्नीशियम और पोटैशियम रक्तचाप को नियंत्रित करते हैं, जबकि फाइबर कोलेस्ट्रॉल को कम करता है। ज्वार और बाजरा हृदय रोगों के जोखिम को कम करने में सहायक हैं।

3. पाचन स्वास्थ्यः उच्च फाइबर सामग्री

के कारण मिलेट्स कब्ज, ब्लोटिंग और अन्य पाचन समस्याओं को दूर करते हैं। ये आंतों को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं।

4. वजन प्रबंधनः मिलेट्स में मौजूद फाइबर और प्रोटीन लंबे समय तक पेट भरा हुआ महसूस कराते हैं, जिससे भूख नियंत्रित होती है और वजन प्रबंधन में मदद मिलती है।

5. हड्डियों की मजबूतीः रागी में उच्च कैल्शियम सामग्री इसे बच्चों, बुजुर्गों और गर्भवती महिलाओं के लिए आदर्श बनाती है। यह ऑस्टियोपोरोसिस जैसे रोगों से बचाव में सहायक है।

6. एंटीऑक्सीडेंट गुणः मिलेट्स में मौजूद पॉलीफेनॉल्स और अन्य एंटीऑक्सीडेंट मुक्त कणों से लड़ते हैं, जिससे कैंसर और उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने में मदद मिलती है।

मिलेट्स का दैनिक जीवन में उपयोग

मिलेट्स को अपने आहार में शामिल करना बेहद आसान और स्वादिष्ट हो सकता है। ये बहुमुखी अनाज विभिन्न व्यंजनों में उपयोग किए जा सकते हैं। कुछ लोकप्रिय तरीकेः

नाश्ताः रागी का उपमा, ज्वार का पोहा, या बाजरा खिचड़ी।

रोटी और पराठाः ज्वार या बाजरे की रोटी, जो ग्लूटेन-मुक्त और पौष्टिक होती है।

नाश्ते के लिएः रागी के लड्डू, मिलेट्स कुकीज़, या सांवा की खीर।

मुख्य भोजनः बाजरा पुलाव, ज्वार की खिचड़ी या रागी डोसा।

मिलेट्स और पर्यावरण

मिलेट्स न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए, बल्कि पर्यावरण के लिए भी वरदान हैं। ये कम पानी और उर्वरक में उगते हैं, जिससे ये जलवायु परिवर्तन के दौर में टिकाऊ खेती का एक बेहतरीन विकल्प बनते हैं। मिलेट्स की खेती मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखती है और जैव विविधता को बढ़ावा देती है।

भारत में मिलेट्स का पुनर्जनन

भारत में मिलेट्स को फिर से लोकप्रिय बनाने के लिए सरकार और कई संगठन सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। 'श्री अन्न' अभियान के तहत किसानों को मिलेट्स की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, और रेस्तरां से लेकर घरों तक मिलेट्स आधारित व्यंजनों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

निष्कर्ष

मिलेट्स प्रकृति का एक अनमोल उपहार हैं, जो स्वास्थ्य, पोषण और पर्यावरण संरक्षण का एक अनूठा संगम प्रस्तुत करते हैं। ये छोटे दाने न केवल हमारे शरीर को पोषण देते हैं, बल्कि हमारी संस्कृति और परंपराओं को भी जीवंत रखते हैं। मिलेट्स को अपने आहार में शामिल करके हम न केवल अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि एक टिकाऊ और स्वस्थ भविष्य की दिशा में भी कदम बढ़ा सकते हैं।

आह्वान

आइए, मिलेट्स को अपने भोजन का हिस्सा बनाएं और इस प्राकृतिक वरदान का लाभ उठाएं। चाहे रागी का डोसा हो या ज्वार की रोटी, मिलेट्स हर थाली में स्वास्थ्य और स्वाद का रंग भर सकते हैं। प्रकृति ने हमें यह खज़ाना दिया है, अब इसे अपनाने की बारी हमारी है!

बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

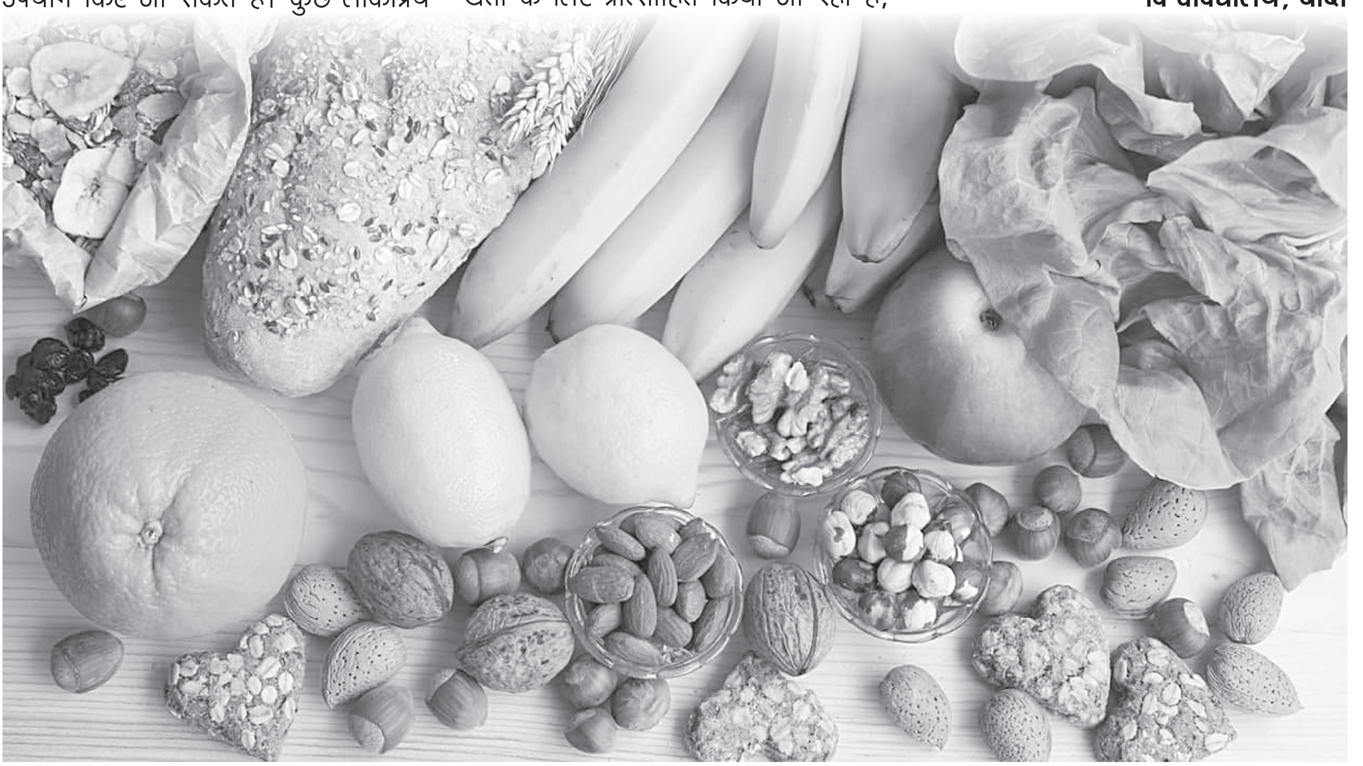

दिव्या ने जीता चेस वर्ल्ड कप का खिताब

19 साल की उम्र में किया कमाल, ऐसा करने वाली बनी पहली भारतीय महिला

भारत की युवा शतरंज खिलाड़ी दिव्या देशमुख ने महिला चेस वर्ल्ड कप 2025 अपने नाम कर लिया है। जॉर्जिया में हुए इस वर्ल्ड कप फाइनल में 19 वर्षीय दिव्या ने इस दौरान हमवतन कोनेरू हम्पी को शिकस्त देते हुए ये खिताब अपने नाम किया। पिछले साल ही दिव्या ने जूनियर वर्ल्ड चैंपियन का खिताब जीता था और अब वह महिला चेस वर्ल्ड कप की चैंपियन बन गई हैं। ऐसा करने वाली वह पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बनी हैं।

फाइनल मुकाबले में दोनों भारतीय दिग्गजों के बीच जबरदस्त टक्कर देखने को मिली। दोनों क्लासिकल गेम्स ड्रॉ रहे, जिसके बाद फैसला रैपिड टाईब्रेकर में हुआ। दिव्या देशमुख ने हम्पी को 1.5-0.5 से हराकर न केवल खिताब जीता बल्कि एक नया इतिहास भी रच दिया। वह शतरंज वर्ल्ड कप जीतने वाली पहली भारतीय महिला बन गई हैं।

इस बेहतरीन जीत के साथ ही दिव्या देशमुख भारत की 88वीं ग्रैंडमास्टर भी बन गई हैं। ग्रैंडमास्टर की उपाधि शतरंज की दुनिया में सबसे प्रतिष्ठित मानी जीता है और इसे हासिल करना किसी भी खिलाड़ी के करियर की सबसे बडी उपलब्धियो में से एक होता है। इस जीत के बाद दिव्या को इनामी राशि के रूप में लगभग 43 लाख रुपये मिलेंगे। वहीं हम्पी को करीब 30 लाख रुपये मिलेंगे।

हालांकि, ये पहली बार है जब इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट के फाइनल में दो भारतीय शतरंज खिलाड़ी आमने-सामने थीं। दोनों ही खिलाड़ी अब 2026 में होने वाले महिला कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिए क्वालिफाई कर चुकी हैं, 8 खिलाड़ियो के इस टूर्नामेंट से अगले वर्ल्ड महिला चैंपियनशिप मैच में मौजूदा वर्ल्ड चैंपियन चीन की जू वेनजुन की प्रतिद्वंद्वी का फैसला होगा।

सात्विक-चिराग की जोड़ी ने रैंकिंग में लगाई लंबी छलांग

सात्विक-चिराग ने ये सफलता चाइना ओपन 2025 में सेमीफाइनल तक पहुंचने के बाद मिली है, जहां उन्हें मलेशिया की जोड़ी आरोन चिया और सो वूई यिक से 13-21, 17-21 से हार का सामना करना पड़ा था। इस सीजन ये उनका तीसरा सेमीफाइनल था। इससे पहले वे सिंगापुर ओपन और इंडिया ओपन में भी अंतिम चार में पहुंचे थे। पिछला साल थाईलैंड ओपन जीतने के बाद इस भारतीय जोड़ी ने दुनिया की नंबर-1 रैंकिंग भी हासिल की थी।

भारत के टॉप रैंक वाले सिंगल्स खिलाडी लक्ष्य सेन ने भी ताजा रैंकिंग में दो स्थान की छलांग लगाकर 17वें स्थान पर जगह बना ली है। उनके अब 54442 पॉइंट हैं, जो चीन के झेनजियांग वांग से थोड़ा ही आगे हैं। वांग ने इस हफ्ते 5 पायदान की छलांग लगा है। वहीं, अनुभवी शटलर एचएस प्रणॉय ने भी दो स्थान ऊपर चढ़कर वर्ल्ड नंबर 33 पर जगह बना ली है। उनके अब 40336 पॉइंट हो गए हैं।

विमेंस सिंगल्स में 17 साल की हरियाण की उभरती हुई स्टार उन्नति हूडा ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए चार स्थान की छलांग लगाई है। उन्होंने अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ 31वीं रैंकिंग हासिल की है। उन्नति ने पिछले हफ्ते डबल ओलंपिक मेडल विजेता पीवी सिंधु को 21-16, 19-21, 21-13 से हराकर सबको चौंका दिया था। ये मुकाबला 1 घंटे 13 मिनट तक चला। हालांकि, क्वार्टफाइनल में उन्हें जापान की तीसरी वरीया प्राप्त खिलाड़ी अकाने यामागुची से हार का सामना करना पड़ा।

दीपिका पादुकोण 'द शिफ्ट' की 90 प्रभावशाली महिलाओं में शामिल

वैश्विक सांस्कृतिक प्रकाशन 'द शिफ्ट' ने सक्रियता, रचनात्मकता, नेतृत्व और सांस्कृतिक प्रभाव वाली 90 से ज़्यादा असाधारण महिलाओं की अपनी नवीनतम सूची जारी की है। इन महिलाओं में अमल क्लूनी, मारिस्का हरजीत सेलेना गोमेज़, बिली इलिश, एंजेलिना जोली, अमांडा गोर्मन, जेसिका चैस्टेन, ओलिविया रोड्रिगो, लूसी लियू, मिस्टी कोपलैंड, बिली जीन किंग... और भारतीय सुपरस्टार दीपिका पादुकोण शामिल हैं। एक वैश्विक आइकन, दीपिका की यह पहचान न केवल उनके सिनेमाई प्रभाव को दर्शाती है, बल्कि उनके लिव लव लाफ फाउंडेशन के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य वकालत और महिला सशक्तिकरण में उनके काम को भी दर्शाती है।

दीपिका (39) के अलावा, इस सूची में गायिका-अभिनेत्री सेलेना गोमज, हॉलीवुड अभिनेत्री एंजेलिना जोली, गायिका बिली इलिश और ओलिविया रोड्रिगो जैसी अन्य लोकप्रिय हस्तियों के नाम भी शामिल हैं। दीपिका ने रविवार दोपहर अपने 'इंस्टाग्राम' हैंडल पर एक पोस्ट के जरिए यह खबर साझा की और लिखा, ''ग्लोरिया स्टीनम और उनके 91 साल के सामाजिक योगदान के सम्मान में, 'द शिफ्ट' हमारे भविष्य को आकार देने वाली 90 आवाजों का सम्मान कर रहा है। इस सम्मान के लिए मैं उनकी आभारी हूं।'' अभिनेत्री पिछले कुछ वर्षों से मानसिक स्वास्थ्य की जागरूकता के लिए काम कर रही हैं। वह 'लाइव लव लाफ फाउंडेशन ऑर्गनाइजेशन' की संस्थापक हैं, जिसका उद्देश्य लोगों को मानसिक स्वास्थ्य के बारे में शिक्षित करना है।

ग्लोरिया स्टाइनम के 91 वर्षों के योगदान का जश्न मनाने वाले इस उद्घाटन अंक के एक हिस्से के रूप में, द शिफ्ट 90 प्लस वन संस्करण में दीपिका के शब्दों को उद्धृत किया गया है, 'मेरे लिए सफलता केवल पेशेवर उपलब्धियों के बारे में नहीं है, बल्कि कल्याण के बारे में भी है–जहाँ मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-देखभाल अनुशासन, समर्पण और दृढ़ संकल्प के समान ही महत्वपूर्ण हैं। मैं धैर्य, संतुलन, निरंतरता और प्रामाणिकता की शक्ति में दृढ़ विश्वास रखती हूँ, और मैं एक ऐसी पीढ़ी को प्रेरित करने की आशा करती हूँ जो इन सभी गुणों को समान रूप से महत्व देती है।'

स्व0 मुलायम सिंह यादव अमर रहें!

समाजवादी पार्टी जिन्दाबाद!

मा0 अखिलेश यादव जिन्दाबाद!

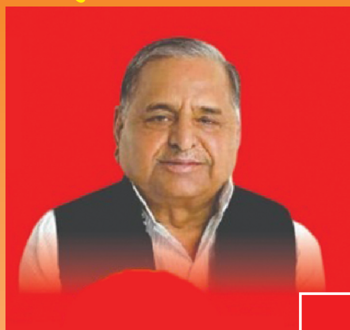

समस्त देशवासियों को
रक्षाबंधन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
व स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

विरेन्द्र कुमार बिन्द
(डाक्टर)

जिलाध्यक्ष

समाजवादी पार्टी
(पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ)
जनपद-चन्दौली
मो.- 9984499616

UPI UNIVERSAL

Plasto Industries

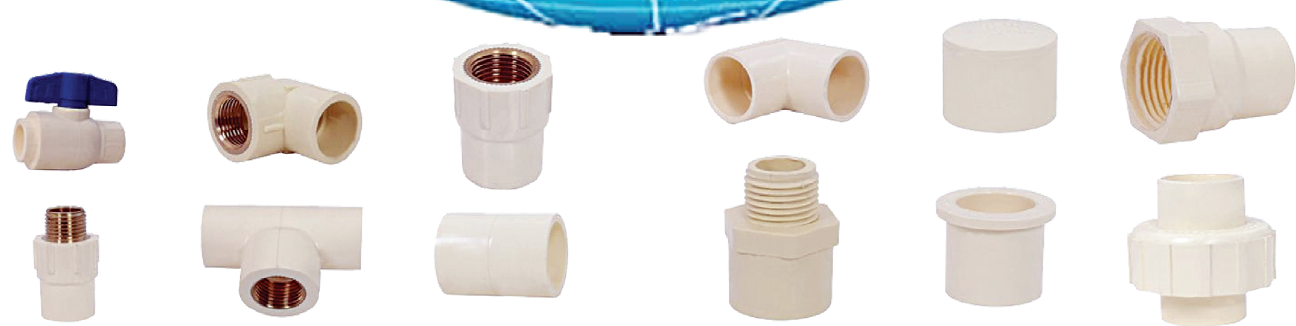

सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर

उत्तर प्रदेश पिन-201309 मो0 - 9811191393